GS

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

क्लास नोट्स

राष्ट्रीय हित :→

- भौगोलिक एकता एवं अखण्डता बनाए रख
- अपनी सुरक्षा बनाए रखना तथा सुरक्षा बनाए रखने के लिए सैन्य सामग्री अर्जित करना
- आर्थिक विकास

नतो कोई स्थायी मित्र होता है और न कोई स्थायी शत्रु होता है। केवल राष्ट्रीय हित ही स्थायी होता है।

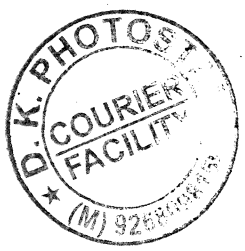

भू-राजनीति (Geo-politics)

→ भौगोलिक तत्वों का राज्य के व्यवहार (विदेश नीति) पर प्रभाव

→ देश का भौगोलिक आकार विदेश नीति का निर्धारण करता है।

→ देश की अवस्थिति भी राज्य के व्यवहार को निर्धारित करती है।

(i) भूमि आबद्ध (land lock) देश :- ऐसा राज्य जिसका कोई भी भू-भाग समुद्री सीमा से नहीं लगा हो या चारों ओर राज्यों से घिरा हो। जैसे-नेपाल, अफगानिस्तान।

(ii) बफर राज्य (Buffer state) :- दो शक्तिशाली राज्यों के बीच स्थित एक छोटा-सा राज्य। जैसे भूटान।

भू- सामरिक (Geo- stratigic) :-

भू-भाग जिसका देश की सुरक्षा के लिए निर्णायक महत्व हो। eg. सियाचिन भारत के लिए भू-सामरिक रूप में महत्वपूर्ण है। क्योंकि यहाँ भारत पाकिस्तान की तुलना में ऊँचाई पर स्थित है।

भू-अर्थ (Geo- Economic) :-

वर्तमान उदारीकरण एवं भूमण्डलीकरण के युग में अर्थव्यवस्था का या आर्थिक कारकों का विदेश नीति पर निर्णायक प्रभाव देखा जा रहा है। eg. ब्रिटेन के यूरोपीयन यूनीयन से अलग होने के बाद इसका प्रभाव समूची विश्व अर्थव्यवस्था पर देखा गया है।

भूमण्डलीकरण :-

(i) एक देश की अर्थ व्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण।

(ii) सूचना- संचार के बढ़ते प्रभाव से भौगोलिक दूरियों का सिमटना।

(iii) सांस्कृतिक रूप में देशों में विश्व में एक ही समान उत्पादे का बढ़ता उपयोग।

उदारीकरण :- (i) देश की अर्थव्यवस्था पर राज्य के नियंत्र को ढीला करना।

(ii) बाजार को उत्पादक और विक्रय की गतिविधि में बढ़ावा देना।

संबंधों के प्रकार

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

आर्थिक सम्बंध :-

1. द्विपक्षीय व्यापार
2. तेल / गैस का आयात
3. मुक्त व्यापार :- दो देशों के बीच प्रशुल्क शून्य हो।
4. समग्र आर्थिक सहभागिता का समझौता (CEPA)
5. दो देशों के बीच वस्तुओं के व्यापार के अतिरिक्त सेवा, निवेश के संबंध में भी समझौते हो जाए तो इसे समग्र आर्थिक सहभागिता का समझौता कहा जाएगा।
   e.g. जापान, द. कोरिया

राजनीतिक सम्बंध :→

1. भारतीय लोकतंत्र का समर्थन
2. कश्मीर मुद्दे पर भारत का समर्थन
3. सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का समर्थन

सैनिक सम्बन्ध :→

1. संयुक्त साझा सैनिक अभ्यास
2. सैनिकों को प्रशिक्षण
3. सैनिक सामग्री का आदान- प्रदान
4. रक्षा सामग्री का साझा उत्पादन

eg. अमेरिका, इज़रायल के साथ तीनों संबंध हैं।

D.K. PHOTO
COURIER FACILITY
(M) 926809...

सामरिक संबंध :→

1. सामरिक संबंधों में सैनिक सम्बंध स्वाभाविक रूप में शामिल हो जाते हैं।
2. आसूचना का लेन-देन।
3. उच्च एवं संवेदनशील तकनीक के क्षेत्र में सहयोग।
4. आतंकवाद के विरुद्ध सहयोग
5. समुद्री सुरक्षा के सम्बंध में आपसी सहयोग।

सांस्कृतिक सम्बंध :-

1. एक देश के त्योहार का दूसरे देश में आयोजन।
2. एक देश की भाषा एवं साहित्य का दूसरे देश में अध्यापन।
3. भारत में आयोजित बौद्ध धर्म का सम्मेलन या अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस ये सांस्कृतिक सम्बंधों के उदाहरण है।

शक्ति के रूप

हार्ड पावर :→ देश की सैनिक शक्ति को हार्ड पावर के अंतर्गत रखा जाता है। eg. अमेरिका अपनी सेनाओं पर जितना खर्च करता है उसके बाद आने वाले 12 राज्यों के खर्च उसके बराबर नहीं है।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

सॉफ्ट पावर :→

(i) गैर-सैनिक शक्ति

(ii) वैचारिक अथवा सांस्कृतिक संस्कृति

(iii) सॉफ्ट पावर के द्वारा राज्य अपने हार्ड पावर को बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं।

(iv) हार्ड पावर और सॉफ्ट पावर के मिले-जुले रूप प्रयोग को ही स्मार्ट पावर के रूप में व्यक्त किया जाता है।

zero-sum game (जीरो-सम गेम) :→

राज्यों के बीच विशुद्ध संघर्ष की स्थिति, जिसमें एक के विजय का अभिप्राय दूसरे की पराजय है।

इसलिए
↓ देशों के बीच होने वाले युद्ध में एक देश के लाभ का आशय दूसरे का सीधा घाटा है।

शीत युद्ध के दौर की राजनीति को zero-sum game के रूप में व्यक्त किया जाता था।

नॉन-जीरो सम गेम :-

(i) वर्तमान विश्व की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को इसको इसके द्वारा व्यक्त किया जाता है।

(ii) इसके अनुसार राज्यों के बीच सहयोग सभी के लिए लाभदायक है जबकि राज्यों के बीच युद्ध सभी के लिए विनाशक होंगे।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

भारतीय विदेश नीति का विकास

पहला चरण

घरेलू परिस्थितियाँ

1. साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं भेद-नीति के विरोध के परिणामस्वरूप भारत आजाद हुआ।
2. आर्थिक रूप में विपन्नता थी तकनीक रूप में पिछड़ापन था। आर्थिक विषमता ज्यादा थी
3. आजादी के बाद लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को स्वीकार किया।
4. देशी रियासतों के एकीकरण की समस्या तथा देश में होने वाले सांप्रदायिक दंगे का।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

वैश्विक वातावरण

1. शीत युद्ध का माहौल

   USA ⟷ USSR

   → दुनिया दो सैनिक गठबंधन में विभाजित हो गई-

   NATO ⟷ WARSA

   → यह विभाजन भौगोलिक और आर्थिक रूप में भी था।

   → पश्चिमी यूरोप ⟷ पूर्वी यूरोप

   → पूँजीवादी ⟷ समाजवादी

⇒ भारतीय विदेश नीति की मूल विशेषता :-

1. लोकतांत्रिक देश होने के कारण भारत के द्वारा स्वतंत्र और स्वायत्त विदेश नीति अपनाई गयी।

2. स्वतंत्र विदेश नीति को ही गुटनिरपेक्ष विदेश नीति के रूप में भी चित्रित किया गया। जिसके अनुसार भारत ने स्वयं को सैनिक गठजोड़ से अलग रखा तथा दोनों महाशक्तियों के साथ बेहतर संबंध बनाने का प्रयास किया।

3. गुटनिरपेक्षता विदेश नीति के अलावा एक आंदोलन भी था जिसके द्वारा साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और रंगभेद नीति का विरोध किया गया।

4. एशियाई - अफ्रीकी देशों के बीच एकता स्थापित करने के लिए चीन के साथ मित्रतापूर्ण संबंधों पर बल दिया गया।

5. संयुक्त राष्ट्र संघ के आदर्शों में आस्था व्यक्त की गई।

6. तीसरी दुनिया (एशिया - अफ्रीका) के देशों के बीच एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया गया।

7. नेहरू की विदेश नीति को नैतिकतावादी, आदर्शवादी माना जाता है। और उन्होंने इस माध्यम के द्वारा देश के सामाजिक - आर्थिक विकास पर बल दिया और हथियारों पर पैसा खर्च न करके शिक्षा, स्वास्थ्य और सार्वजनिक उद्यमों की स्थापना के लिए पैसा खर्च किया।

विदेश नीति के विकास का दूसरा चरण :→

1. वर्ष 1962 में चीन के द्वारा भारत पर हमला कर दि गया।
2. 1964 में चीन के द्वारा परमाणु परीक्षण किया ग
3. 1971 में अमेरिका एवं चीन के बीच मित्रता स्थापित हो और इसमें पाकिस्तान की भूमिका उल्लेखनीय थी।

इंदिरा गांधी की विदेश नीति :-

1. इंदिरा गांधी के द्वारा नेहरू की आदर्शवादी, नैतिकतावादी विदेश नीति के स्थान पर यथार्थवादी नीति का पालन किया।
2. विदेश नीति में राष्ट्रीय सुरक्षा को केन्द्रीय महत्व दिया गया। सेनाओं के आकार को कई गुना बढ़ा दिया गया।
3. 1971 में अमेरिकी-चीनी-पाकिस्तानी गठजोड़ का मुकबला करने के लिए भारत एवं सोवियत संघ के बीच शांति एवं मित्रता की संधि सम्पन्न हुई।
4. 1971 में भारत ने पाकिस्तान को बुरी तरह से पराजित किया।
5. 1974 में भारत के द्वारा शांतिपूर्ण परमाणु परीक्षण किया गया।

6. विदेश नीति में अनेक परिवर्तनों के बावजूद देश की आर्थिक व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

7. भारत में सार्वजनिक उद्यमों की प्राथमिकता का सिद्धांत और मिश्रित अर्थव्यवस्था की नीति अपनाई गई।

⇒ विदेश नीति का तीसरा चरण :-

1980 के दशक

घरेलू परिस्थितियाँ | वैश्विक वातावरण

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

घरेलू परिस्थितियाँ

(i) सार्वजनिक उद्यम घाटे मे जाने लगे।

(ii) अर्थव्यवस्था की विकास दर निराशाजनक थी।

(iii) पहली बार 1989 के लोकसभा चुनाव में किसी भी एकदल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला, जिससे देश में राजनीतिक अस्थायित्व की स्थिति उत्पन्न हो गई।

(iv) 1991 में देश की अर्थव्यवस्था के समक्ष भुगतान का संकट आ गया।

वैश्विक वातावरण

(i) 1980 → सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, ताइवान इनकी आर्थिक विकास की दर 16-20% की थी। → Tiger Economy.

(ii) सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था लगातार गर्त में जा रही थी।

(iii) 1991, सोवियत संघ का विघटन → समाजवादी अर्थव्यवस्था का विघटन।

भारत की विदेश नीति में परिवर्तन (1990 के बाद) :-

1. पहली बार भारत में समाजवादी आर्थिक प्रणाली के बजाय उदारीकरण एवं निजीकरण की नीति अपना ली गई।

2. इसलिए विदेश नीति में विचारधारा के बजाए अर्थव्यवस्था, व्यापार, निवेश का महत्व बढ़ गया

3. अफ्रीका और लैटिन अमेरिकी देशों के साथ व्यापार एवं निवेश पर बल दिया गया। इसलिए विदेश नीति में विचारधारा का महत्व कम हो गया।

4. आर्थिक गतिविधियों को प्राथमिक बनाते हुए "पूर्व की ओर देखो" की विदेश नीति की शुरूआत की गई।

5. अमेरिका के साथ आर्थिक एवं सामरिक सम्बंधों को सुदृढ़ करने पर केन्द्रीय बल प्रदान किया गया।

6. विदेश नीति 1990 के दशक में ज्यादा <u>प्रैगमेटिक</u> हो गई और विदेश नीति में सक्रिय यथार्थवाद अपनाया गया।

7. विदेश नीति में सक्रिय यथार्थवाद अपनाते हुए म्यांमार की सैनिक सरकार के साथ संबंध स्थापित कर लिया गया।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 92

8. 1992 में पहली बार भारत ने इजराइल के साथ भी कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया।

9. 1998 में विदेश नीति में एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए परमाणु विस्फोट किया गया, जो 1974 के शांतिपूर्ण परमाणु परीक्षण से अलग था।

⇓

उद्देश्य → विश्वसनीय न्यूनतम परमाणु प्रतिरोधक क्षमता का विकास (Credible minimum Nuclear deterrence)

10. वर्ष 2001 के बाद सीमापार आतंकवाद का मुद्दा विदेश नीति का केन्द्रीय विषय बन गया।

गुट निरपेक्षता की प्रासंगिकता :- → अभिप्राय
→ सवाल क्यों उठा
→ प्रासंगिक है या नहीं

अभिप्राय :-

(i) गुट निरपेक्ष विदेश नीति का मौलिक अभिप्राय स्वतंत्र विदेश नीति है।

(ii) विश्व के प्रत्येक मुद्दों पर उसके गुण और अवगुण के अनुसार प्रतिक्रिया व्यक्त करना।

(iii) समतामूलक शांतिपूर्ण विश्व का लक्ष्य।

सवाल क्यों :-

(i) सोवियत संघ के विघटन के बाद से भी गुट-निरपेक्ष विदेश नीति पर निरंतर सवाल उठाए जा रहे हैं,

क्योंकि गुट ही नहीं तो कैसी गुट निरपेक्षता?

(ii) विदेश नीति में प्रत्येक राज्य अपने हितों को बढ़ाने के लिए कार्य करता है। इसलिए गुट निरपे मंच से भारत के लिए कोई सीधा लाभ नहीं मिल

प्रासंगिक है या नहीं

यदि गुट-निरपेक्ष विदेश नीति का मूल मर्म स्वतंत्र विदेश नीति है तो यह कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती और स्वतंत्र विदेश नीति को ही वर्तमान में सामरिक स्वायत्तता (strategic autonomy) भी कहा जाता है। जिसके अनुसार भारत किसी महाशक्ति का पिछलग्गू नहीं होगा और अपने निर्णय किसी से निर्देशित होकर नहीं करेगा।

विचारकों ने कहा कि साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन के रूप में इसका महत्व कम हो सकता है परन्तु विश्व में अभी भी आर्थिक विषमता बनी हुई है, जिस संदर्भ में विकासशील देशों के सामूहिक सहयोग की आवश्यकता है। इसलिए यह प्रासंगिक प्रतीत होता है।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

परमाणु अप्रसार संधि (Nuclear Non Proliferation Treaty)

→ NPT संधि 1968 में हुई और इसे 1970 से लागू किया। इस संधि में यह उल्लिखित है कि जिन राज्यों ने 1 Jan. 1968 से पहले परमाणु परीक्षण किया हो, उन्हें परमाणु शक्ति सम्पन्न देश कहा जाएगा।

- अमेरिका
- रूस
- ब्रिटेन
- फ्रांस
- चीन

= Nuclear-5

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

→ ये 5 देश किसी भी अन्य देश को परमाणु हथियारों का प्रसार नहीं करेंगे।

→ 5 परमाणु शक्ति सम्पन्न देश अन्य राज्यों के लिए परमाणु तकनीक और ईंधन प्रदान कर सकते हैं।

Conditions:-

(a) इसका प्रयोग शांतिपूर्ण होना चाहिए।

(b) उस राज्य ने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर कर दिया हो।

अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेन्सी (International Atomic Energy Agency) → परमाणु संयंत्रों की निगरानी।

NSG क्या है?

NSG - Nuclear supplier Group - परमाणु आपूर्तिकर्ता

→ यह 1975 में गठित किया गया, जिसमें वर्तमान में 48 सदस्य हैं।

→ इस समूह का निर्माण परमाणु प्रसार को प्रतिबंधित करने के लिए किया गया है। जिसके अनुसार NSG के सदस्य उन्हीं राज्यों को परमाणु ईंधन और तकनीक प्रदान करेंगे, जिन्होंने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर कर दिया है।

→ NSG का सदस्य वही देश हो सकता है जिसने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर कर दिया है

→ वर्ष 2008 में भारत-अमेरिका "सिविल परमाणु समझौते" के बाद NSG के सदस्यों के द्वारा भारत को <u>विशेष छूट</u> प्रदान कर दी गई। जिसके अनुसार भारत विश्व का एकमात्र देश है जिसने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किया है, फिर भी उसे परमाणु तकनीक और परमाणु ईंधन प्राप्त हो रहा है।

भारत की सदस्यता का मुद्दा :→

1. NSG में अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस जैसे देश भारत की सदस्यता के समर्थक हैं।

2. परमाणु आपूर्ति कर्ता समूह के छोटे देशों में स्वीटजरलैण्ड, आयरलैण्ड, ऑस्ट्रिया जैसे देशों के द्वारा भारत की सदस्यता का विरोध किया गया, इनका विरोध भारत से नहीं है बल्कि ये परमाणु प्रसार के विरोधी है।

3. NSG में चीन के द्वारा भारत की सदस्यता का सीधा विरोध किया जा रहा है। चीन के अनुसार भारत ने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किया है, इसलिए पहले NSG के द्वारा एक सुनिश्चित प्रक्रिया का निर्माण होना चाहिए जिसमें उन देशों की सदस्यता के मानक का निर्धारण हो सके जिन्होंने NPT पर हस्ताक्षर नहीं किया है।

परमाणु अप्रसार और NSG में भारत की सदस्यता :-

1. आयरलैण्ड, ऑस्ट्रिया जैसे NSG के सदस्य भारत की सदस्यता को परमाणु हथियारों के प्रसार में सहायक मानते हैं।

2. परमाणु अप्रसार समर्थक देश भारत के उस विशेष दर्जे के भी विरोधी हैं जिसके अनुसार भारत को NPT पर हस्ताक्षर किए बिना परमाणु तकनीक एवं ईंधन प्राप्त हो रहा है।

3. भारत के पास परमाणु हथियार हैं परन्तु भारत किसी भी प्रकार संधि अथवा समूह का भाग नहीं है। इसलिए भारत की सदस्यता से प्रसार में सहायता मिलेगी।

4. भारत के द्वारा किसी भी देश के लिए परमाणु तकनीक अथवा ईंधन का अवैध लेन-देन नहीं किया गया है, जिसके कारण भारत को एक उत्तरदायी राज्य माना जाता है।

5. भारत की सदस्यता से भारत को परमाणु बिजली उत्पादन के लिए ज्यादा संसाधन सुलभ रूप उपलब्ध होंगे। इसलिए इस समूह की सदस्यता से परमाणु प्रसार नहीं बढ़ेगा।

D. K. PHOTOSTAT
(M) 9268098159
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

NSG → भारत और चीन :→

1. अमेरिका और अन्य यूरोपीय देशों के द्वारा भारतीय सदस्यता के समर्थन से भारत विश्व राजनीति में शक्तिशाली बनकर उभरेगा।

2. चीन NSG का सदस्य होने के बावजूद पाकिस्तान को परमाणु रिएक्टर की स्थापना में सहयोग कर रहा है, जबकि पाकिस्तान ने भी NPT पर हस्ताक्षर नहीं किया है।

3. चीन पाकिस्तान की सदस्यता का समर्थक है। चीन का मानना है कि यदि भारत सदस्य हो गया तो पाकिस्तान की सदस्यता प्रभावित हो जाएगी, क्योंकि NSG का निर्णय आम सहमति से ही किया जाता है।

4. चीन की चिन्ता परमाणु प्रसार को लेकर नहीं है बल्कि भारत की सदस्यता को लेकर है।

NSG की सदस्यता से भारत को लाभ :→

1. NSG की सदस्यता के बाद भारत को NSG के सभी सदस्यों के साथ अलग-अलग समझौते करने की आवश्यकता नहीं होगी।

2. NSG के प्रावधानों में भविष्य में होने वाले परिवर्तनों में भी भारत की भूमिका निर्णायक होगी।

3. विश्व में भारत को एक उत्तरदायी राज्य का दर्जा प्राप्त होगा।

4. वर्तमान में भारत को उपलब्ध विशेषाधिकारों की आलोचना करने का अवसर किसी भी देश को नहीं मिलेगा।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Co... ...ility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सदस्यता की संभावना :-

1. NSG के सदस्यों में कई ऐसे देश हैं जिन्होंने NSG की सदस्यता के बाद परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर किया। जिसमें फ्रांस उल्लेखनीय है।

2. इससे यह प्रतीत होता है कि NSG की सदस्यता के लिए NPT पर हस्ताक्षर अनिवार्य नहीं है।

2. परमाणु अप्रसार संधि और NSG दोनों अलग-अलग हैं। क्योंकि NSG देशों का एक अनौपचारिक समूह है जिसकी सदस्यता के लिए किसी संधि पर हस्ताक्षर करना आवश्यक प्रतीत नहीं होता।

4. NSG के ज्यादातर सदस्य भारत की सदस्यता के समर्थक हैं। इसलिए सदस्यता मिलने की प्रबल संभावना है।

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY 9268098159

मोदी सरकार की विदेश नीति

1. देश की विदेश नीति राष्ट्रीय हितों के द्वारा निर्धारित होती है और सरकार बदलने से राष्ट्रीय हितों में परिवर्तन नहीं होता।

2. 1984 के लोकसभा चुनाव के बाद पहली बार 16 वीं लोकसभा चुनाव में किसी एक दल को लोक सभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ, और नरेन्द्र मोदी का उभार एक शक्तिशाली प्रधानमंत्री के रूप में देखा गया। जिसके प्रभाव विदेश नीति में स्पष्ट रूप में दिखते हैं, जो निम्नलिखित हैं—

(i) भारत के द्वारा विदेशों के साथ किए गए समझौतों और आधारभूत संरचनाओं के निर्माण में अत्यधिक विलम्ब किया जाता रहा है। वर्तमान सरकार ने इसे त्वरित और तात्कालिक रूप में क्रियान्वित करने पर बल दिया है।

(ii) इसलिए वर्तमान विदेश नीति को "फास्ट ट्रैक" विदेश नीति के रूप में देखा जा सकता है।

(iii) प्रधानमंत्री के द्वारा फ्रांस के साथ रक्षा समझौतों को क्रियान्वित करने के लिए हस्तक्षेप किया गया। उन्होंने विदेशों में रहने वाले भारतीयों (~~डा~~स्पोरा) के साथ सीधे संबंध स्थापित करके भारत की सकारात्मक छवि निर्मित करने का प्रयत्न किया और भारत को विश्व के निवेश के लिए बेहतर देशों की सूची में खड़ा कर दिया।

(iv) विदेश नीति में पड़ोसी देशों को महत्व प्रदान करते हुए 17 साल बाद इस भारतीय प्रधानमंत्री की यात्रा हुई और 28 वर्षों बाद श्रीलंका की यात्रा की गई और अचानक एवं बिना बताए पाकिस्तान की यात्रा की। जिससे विदेश नीति गतिशीलता और सक्रियता दिखती है।

(v) सांस्कृतिक कूटनीति के द्वारा भारत के सॉफ्ट पावर को बढ़ाने का प्रयत्न किया गया तथा Look East नीति को Act East नीति में परिवर्तित ~~कराया~~ गया।

विदेश नीति में परिवर्तन गुणात्मक है या मात्रात्मक ?

1. सरकार के द्वारा क्रियान्वित सभी नीतियाँ 1991 के बाद शुरू की गई थी।

2. अर्थ की प्रधानता नरसिंहा राव ने प्रारंभ किया पडोसी पहले की नीति गुजराल की शुरूआत गुजराल ने की तथा डायस्पोरा के संबंध में नीति निर्माण वाजपेयी सरकार ने किया था। इसलिए वर्तमान सरकार की नीतियों में परिवर्तन मूलत: शैली का है, परन्तु यह इतना प्रभावशाली है कि स्पष्ट रूप में दिखता है।

Q.1. गुट निरपेक्ष विदेश नीति का मूल अभिप्राय स्पष्ट कीजिए और वर्तमान में किन कारणों से इसकी प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाए जा रहे हैं?

Q.2. NSG की सदस्यता को लेकर भारत और चीन के बीच विवाद सैद्धांतिक नहीं है बल्कि शक्ति संतुलन के विचार से जुड़े हुए हैं।

Q.3. विदेश नीति के निर्माण में प्रधानमंत्री की बढ़ती भूमिका कहाँ तक उचित है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजि

Q.3. Ans. :-

① भारत में विदेश नीति के निर्माण का मूल दायित्व विदेश मंत्रालय का है।

② भारत में संसदीय शासन की प्रणाली है, जिसमे निर्णय मंत्रिमंडल के द्वारा किया जाता है, जिसका प्रधान प्रधानमंत्री होता है। इसलिए विदेश नीति निर्माण में भी प्रधानमंत्री की निर्णायक भूमिका होती है।

③ वर्तमान सरकार में प्रधानमंत्री यह भूमिका ज्यादा प्रभावी दिखाई देती है, क्योंकि प्रधानमंत्री राजनीतिक रूप में अत्यधिक शक्तिशाली है।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Course Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

eg. 1, 2 - - -

निष्कर्ष :- प्रधानमंत्री कार्यालय अत्यधिक प्रभावशाली है परन्तु यह कहना तार्किक नहीं है कि विदेश मंत्रालय की भूमिका अप्रासंगिक हो गई है, बल्कि प्रधानमंत्री कार्यालय की भूमिका प्राथमिक हो गई है।

राष्ट्र और राज्य में अंतर

Nation शब्द लैटिन शब्द "नेशियो" से निर्मित है जिसका अर्थ है जन्म या प्रजाति। इसमें भाषा, धर्म और संस्कृति की एकता हो सकती है।

राष्ट्र हमारी एक सामूहिक पहचान है जो भाषा, धर्म, संस्कृति आदि से मिलकर बनती है। यह सामूहिक पहचान भावनात्मक / मनोवैज्ञानिक होती है।

राज्य (State)

राज्य एक अमूर्त संकल्पना है। जिसमें बनने वाली सरकार मूर्त है। यहाँ सरकार का मतलब सेना, प्रशासन, से है। भारत एक राष्ट्र है जिसका एक संविधान है, जिसकी नागरिकता है।

राज्य एक वैधानिक संकल्पना है।

सामान्य राष्ट्र और राज्य को समानार्थक के रूप में देखते हैं यद्यपि इनमें तकनीकी अंतर है।

भारत की पड़ोसी देशों के प्रति नीति

Que. भारत की पड़ोसी देशों के साथ संबंध के परिप्रेक्ष्य में गुजराल सिद्धांत की उपयोगिता को स्पष्ट कीजिए।

गुजराल सिद्धांत

1. भारत के द्वारा छोटे पड़ोसी देशों (चीन और पाकिस्तान को छोड़कर) को ~~छोड़कर~~ भारत के द्वारा एक तरफा छूट दी जाएगी।

D. K. PHOTO COURIER FACILITY (M) 9250...

और छोटे पड़ोसी देशों के साथ बराबरी का व्यवहार नहीं करना चाहिए

2. कोई भी पड़ोसी देश दूसरे के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

3. कोई भी पड़ोसी देश अपनी भूमि का प्रयोग दूसरे के विरुद्ध नहीं करेगा।

4. पड़ोसी देशों के साथ विद्यमान सभी विवादों को शांतिपूर्ण एवं द्विपक्षीय रूप में हल किया जाएगा।

5. सभी पड़ोसी एक-दूसरे की सम्प्रभुता का सम्मान करेंगे तथा एक-दूसरे की प्रादेशिक एकता एवं अखंडता की भी रक्षा करेंगे।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Cou... ...cility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

विश्लेषण :-

1. भारत का आकार एक उपमहाद्वीपीय है जबकि नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालद्वीप जैसे पड़ोसी देशों के आकार एवं शक्ति अत्यधिक कम है। इसलिए आर्थिक एवं तकनीकी रूप में पड़ोसियों को एक तरफा छूट देनी चाहिए। यह छूट आतंकवाद और सुरक्षा के मामले में उपलब्ध नहीं होगी। भारत के विकास के लिए पड़ोस की सीमाएँ शांत होनी ~~ह~~ चाहिए।

2. गुजराल सिद्धांत में छोटे पड़ोसियों के अलावा चीन और पाकिस्तान को भी ध्यान में रखा गया है। सिद्धांत में यह उल्लेखित है कि सभी पड़ोसियों के साथ विवादों का समाधान शांतिपूर्ण और द्विपक्षीय रूप में होना चाहिए, जिसका अभिप्राय है कि पड़ोसी देशों के साथ विवादों के समाधान में किसी तीसरे देश को शामिल करने की आवश्यकता नहीं है।

3. कोई भी देश अपनी भूमिका का प्रयोग करके दूसरे के विरुद्ध आतंकवाद का बढ़ावा नहीं देगा। और सभी राज्य समान हैं और संप्रभु हैं इसलिए दूसरे राज्यों के मामलों में हस्तक्षेप नहीं होगा।

निष्कर्ष :-

गुजराल सिद्धांत पड़ोसी देशों के साथ संबंध निर्माण में एक निर्णायक मोड़ माना जाता है, जिसका प्रयोग वर्तमान सरकार 'पड़ोसी पहले' के रूप में कर रही है।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

गुजराल सिद्धांत की आलोचना :-

1. इन्द्रकुमार गुजराल के पहले भी छोटे पड़ोसियों को एक तरफा छूट दी गई थी। 1975 में भारत ने नेपाल को बांग्लादेश को 3 बीघा गलियारा पट्टे पर

दिया था तथा श्रीलंका को कच्चातिवु द्वीप प्रदान किया गया था।

2. छोटे पड़ोसी देशों को एक तरफा घूट देने से भारत को कमजोर मान लिया जाता है और एक तरफा घूट देने के बदले में भारत को लाभ होगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है।

भारत का पड़ोसी देशों के साथ सम्बंध

भारत-नेपाल सम्बंध

D.K. PHOTO COURIER FACILITY (M) 9268098159

⇒ मित्रतापूर्ण मधुर सम्बंधों का दौर।

① 1947 — 1955

(i) नेपाल का सम्बंध केवल भारत के साथ
(ii) नेपाल एकमात्र हिन्दू राज्य था
(iii) नेपाल में राजतंत्रीय शासन था।

② 1956 — 1990

(i) नेपाल ने चीन के साथ बना लिया।

③. 1990 के बाद नेपाल में बहुदलीय लोकतंत्र की स्थापना हुई लेकिन महाराजा बना रहा।

पक्षा दल → नेपाली कांग्रेस
दूसरा दल → कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (मार्क्सवादी - लेनिनवादी)

तीसरा दल → कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (माओवादी)

चौथा दल → मधेसी लोकतांत्रिक मोर्चा

2005 में नेपाल में लोकतंत्र की समाप्ति और आपातकाल की घोषणा कर दी गई।

D. K. PHOTOSTAT (M) 9268098159
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

2007 नए नेपाल का उदय

(i) पंथनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक, गणतांत्रिक, समाजवादी सम्प्रभु।

नेपाल का नवीन संविधान और उस पर विवाद

1. नेपाल के द्वारा संसदीय संघात्मक शासन अपनाया गया
2. नेपाली संविधान में स्थानीय शासन का विचार भी अपनाया गया।
3. नेपाल एक छोटा देश है परंतु अनेक प्रकार की सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विषमता विद्यमान है। पहाड़ी और मधेसी समुदाय के बीच आर्थिक एवं सांस्कृतिक विषमता है। थारू जनजातियों को शासन प्रशासन में न्यूनतम प्रतिनिधित्व है और मधेसी समुदाय का प्रशासन, सेना एवं राजनीति में अत्यधिक न्यूनतम प्रतिनिधित्व है।
4. इसी समस्या को हल करने के लिए नेपाल में नृजातीय संघीय शासन का निर्माण किया गया।

संविधान पर आपत्ति :→

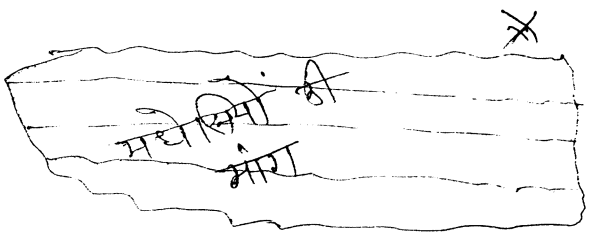

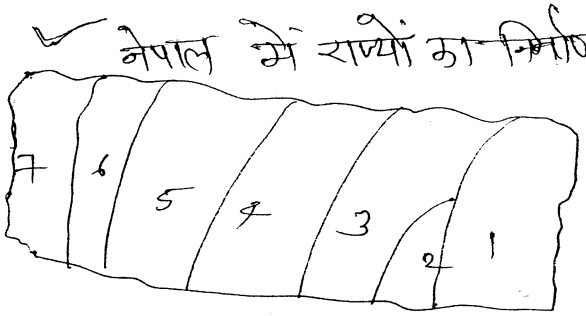

1. वर्तमान में नेपाल में 7 राज्यों वाला संघीय संविधान निर्मित किया गया है और प्रत्येक राज्य में पहाड़ी, तराई और मैदानी तीनों ही भागों को शामिल कर लिया गया है। जिससे मधेसी प्रत्येक प्रांत में अल्पमत में हो गए और वे अपने लिए दो पृथक राज्यों की मांग कर रहे हैं।

2. नेपाली संविधान में संसदीय सीटों का निर्धारण भौगोलिक आधार पर किया गया, जनसंख्या के आधार पर नहीं।

3. नेपाल में नागरिकता के नए प्रावधान के अंतर्गत वह व्यक्ति संवैधानिक पदों पर नहीं बैठ सकता, जिसके माता-पिता नेपाल के नागरिक न हो।

मधेसियों की मांग :→

1. दो पृथक राज्य मिलने चाहिए।
2. मधेसी नेपाल के संसद के उच्च सदन में जनसंख्या के अनुसार राज्यों के प्रतिनिधित्व की मांग कर रहे हैं।

3. मधेसियों ने राजनीति, प्रशासन और सेना में सम्
पदों के लिए आनुपातिक प्रतिनिधित्व (आरक्षण) की
मांग की है।

*. <u>नेपाल की नवीन सरकार एवं संवैधानिक समस्या:→</u>

1. नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता का दौर बना हुआ
और माओवादी दल के नेता प्रचण्ड नए प्रधानमंत्री
बने हैं। उन्हें नेपाली कांग्रेस का समर्थन है और

2. इस सरकार को मधेसियों का भी समर्थन प्राप्त है। इससे
यह प्रतीत होता है कि नेपाल की संवैधानिक समस्या
का समाधान हो जाएगा।

3. यद्यपि यह उल्लेखनीय है कि संविधान संशोधन के लि
संसद में 2/3 बहुमत की आवश्यकता होगी जो बिना
मार्क्सवादी दलों के समर्थन के संभव नहीं है।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

<u>भारत पर प्रभाव:→</u>

नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री ओली के कार्यकाल के दौरान
भारत-नेपाल संबंध ऐतिहासिक रूप में
निम्नतम बिन्दुओं पर पहुँच गया। तेल पास के लिए
भारत पर निर्भरता को समाप्त करते हुए ओली ने
चीन के साथ तेल व्यापार का समझौता कर लिया।

2. उन्होंने चीन के साथ सैनिक और सामरिक संबंधों पर भी बल दिया & जबकि भारत विरोध को उच्चतम स्तर पर बढ़ा दिया।

3. उन्होंने नेपाल की आंतरिक समस्या से दुनिया का ध्यान हटाने के लिए नेपाल की नाकेबंदी के लिए सीधा भारत को उत्तरदायी ठहराया।

4. वर्तमान प्रधानमंत्री प्रचण्ड नेपाल के साथ भारत और चीन के सम्बंधों को संतुलित करने का प्रयत्न कर रहे हैं और प्रचण्ड यह जानते हैं कि चीन के साथ संबंध सुदृढ़ करने का अभिप्राय भारत का विरोध नहीं है, बल्कि दोनों के साथ समानांतर संबंधों का विकास किया जा सकता है।

5. प्रचण्ड और नेपाली कांग्रेस के बीच भले ही वैचारिक समानता न हो परंतु शासन में सहभागिता के द्वारा वे आपस में सहयोग कर सकते हैं तथा भारत-नेपाल के संबंध पुनः बेहतर होने के आसार हैं।

भारत की रणनीति :→ किस प्रकार की होनी चाहिए?

1. नेपाल में अब लोकतांत्रिक शासन है, जहाँ विभिन्न राजनीतिक दलों की शासन में सहभागिता है। इसलिए शासन में भागीदार सभी दलों के साथ सम्बंध बेहतर करना चाहिए।

2. नेपाल के आर्थिक विकास के लिए नेपाल को ज्यादा से ज्यादा सहायता प्रदान करना।

3. नेपाल में वियमान भारत विरोध को कम करने के लिए चेक-2 कूटनीति को बढ़ावा देना।

4. भारत-नेपाल के बीच सम्पन्न जल विद्युत परियोजना को त्वरित क्रियान्वित करने पर बल देना।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

→ कोलकाता से ढाका होकर त्रिपुरा जाने में दूरी घटकर 350 Km हो जाती है।

→ वर्ष 2016 में भारत, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल के बीच मोटर वाहन का समझौता हुआ, जिसके अंतर्गत कोलकाता से त्रिपुरा के बीच बस यात्रा की शुरुआत हुई जो ढाका होकर जाएगी। इसे हम BBIN (बांग्लादेश, भूटान, India, नेपाल) के नाम से जानते हैं। और दूसरा गोवाहाटी से ढाका बस यात्रा आरंभ की गई।

→ वर्तमान में भारत-बांग्लादेश के बीच मधुर होते संबंधों का ही प्रमाण है कि भारत के सामान को उत्तरी-पूर्वी राज्यों में ढुलाई के लिए बांग्लादेश के मुंग्ला और आसुगंज पत्तन का उपयोग किया जा रहा है।

→ दक्षिण एशिया में भारत का सबसे बड़ा द्विपक्षीय व्यापारिक भागीदार बांग्लादेश है। (6.5 Billion dollar)। और इसी व्यापार को और बेहतर करने के लिए अगस्त 2016 में पेट्रो-पोल बेना-पोल एकीकृत चेकपोस्ट का निर्माण किया गया।

→ बांग्लादेश के द्वारा सैद्धांतिक रूप में भारत को पारगमन मार्ग की सुविधा देने की घोषणा कर दी है जिसे लागू करना शेष है।

→ भारत के निजी क्षेत्रों रिलायंस और अडानी के द्वारा बांग्लादेश में बिजली उत्पादन के लिए निवेश का समझौता किया गया है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

भारत-बांग्लादेश संबंध और आंतरिक सुरक्षा की चुनौती :

1. भारत की सबसे लम्बी सीमा बांग्लादेश के साथ मिलती है और अभी-भी पूरी सीमा पर बाड़ का अभाव है।
2. दोनों के बीच सीमा के निकटवर्ती क्षेत्रों में बड़ी जनसंख्या होने के कारण नदियों के प्रवाह की वजह से और लगभग 6 Km सीमा पर सीमा के सीमांकन के अभाव में घुसपैठी आसानी से भारत में प्रवेश कर जाते हैं।
3. उत्तरी-पूर्वी प्रांतों में कार्य करने वाले उग्रवादी संगठन जैसे उल्फा (ULFA), नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रण्ट ऑफ बोडोलैण्ड बांग्लादेश में प्रवेश करते हैं तथा जमायते मुजाहिदीन बांग्लादेश जैसे संगठन भारत में आकर बम विस्फोट करता है।

म्यांमार → बर्मी (बौद्ध धर्मावली)
म्यांमार → रोहिंग्या

4. म्यांमार से आने वाले रोहिंग्याई बांग्लादेश होते हुए भारत में प्रवेश कर जाते हैं और बिहार के बोध गया में ~~स्नेह~~ बम विस्फोट शामिल होने के आरोप हैं।

5. उत्तरी पूर्वी राज्यों में अभय ~~मुख्य~~ घुसपैठ के कारण जननांकीय आंकड़े में भारी परिवर्तन हो रहे हैं और ~~भी~~ यहां के स्थानीय निवासी अल्पसंख्यक बनते जा रहे हैं। बोडोलैण्ड में होने वाली निरंतर हिंसा के पीछे अवैध घुसपैठ बहुत बड़ा कारण है और उत्तरी-पूर्वी राज्यों में ~~यह~~ असम, त्रिपुरा में यह समस्या भीषण बन गई है।

6. बांग्लादेश में आर्टिसन बेकरी पर आतंकवादी हमले से धार्मिक कट्टरवाद के बढ़ने के उदाहरण दिखाई देते हैं जो भारत की सुरक्षा के लिए दूरगामी खतरा पैदा करते हैं।

इस आंतरिक समस्या की चुनौती को हल करने के उपाय:→

1. बांग्लादेश एक गरीब और पिछड़ा राज्य है और अवैध घुसपैठ का एक बड़ा कारण आर्थिक है क्योंकि लोग रोजगार के लिए भारत में प्रवेश करते हैं।

2. इसीलिए बांग्लादेश के आर्थिक विकास हेतु भारत बांग्लादेश को आर्थिक सहायता प्रदान कर रहा है, जिससे बांग्लादेश में विकास हो और लोगों को रोजगार मिल सके।

3. भारत-बांग्लादेश सीमा के सभी भागों पर जल्द से जल्द बाड़ लगाने का कार्य पूरा किया जाये।

4. सीमा पर बाजार हाट का बेहतर प्रबंध, जिससे लोग अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ खरीदने के लिए सीमा का अतिक्रमण न करें।

5. 1971 के बाद भारत में आए अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों को बांग्लादेशी सरकार के साथ बातचीत के माध्यम से उन्हें वापस भेजा जाए।

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

समस्या के समाधान में समस्या :-

1. उत्तरी-पूर्वी राज्यों के निवासी घुसपैठियों के विरोधी हैं लेकिन उनका श्रमिकों के रूप में खूब प्रयोग करते हैं।

2. बांग्लादेश से आने वाले अवैध घुसपैठियों में ज्यादातर ने अपना मतदान पहचानपत्र और आधार कार्ड बनवा लिया है जिससे उनको निकालना एक व्यावहारिक कठिनाई है।

3. राजनीतिक दलों के बीच शरणार्थियों और अवैध घुसपैठियों के मुद्दे पर विवाद बना हुआ है।

बांग्लादेश में बढ़ता धार्मिक कट्टरवाद

1. वर्तमान सरकार के द्वारा संविधान संशोधन करके पंथनिरपेक्ष मूल्यों को बदल करने का प्रयास किया गया है।
2. अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायाधिकरण के द्वारा कट्टरवादी दल जमायते इस्लामी के कार्यकर्ताओं को कठोर सजाएँ दी गई।
2. बांग्लादेश की न्यायपालिका ने जमायती इस्लामी को निर्वाचन में भाग लेने से भी प्रतिबंधित कर दिया।
4. दूसरी ओर धार्मिक कट्टरवादी अल्पसंख्यकों पर हमले कर रहे हैं और नास्तिक व्यक्तियों पर भी हमले किये जा रहे हैं।
5. ढाका में होने वाला ISIS का हमला धार्मिक कट्टरवाद के प्रभावी होने का उदाहरण है और यह हमला वास्तविक रूप में लोकतंत्र और पंथनिरपेक्ष विचारधारा पर होने वाला हमला है।

भारत में इसका प्रभाव

1. धार्मिक कट्टरवाद की वृद्धि भारत के पंथनिरपेक्ष लोकतांत्रिक विचारधारा के लिए गहरी चुनौती है। क्योंकि भारत में भी पंथनिरपेक्ष विचारधारा को चुनौती मिल रही है।

2. बंग्लादेश में धार्मिक कट्टरवाद बढ़ने के साथ पाकिस्तान का प्रभाव बंग्लादेश में स्वाभाविक रूप में बढ़ जाता है, जो भारत के लिए एक सामरिक चुनौती है।

3. बांग्लादेश में राष्ट्रवादी एवं धार्मिक कट्टरवादियों के संघर्ष से राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न होने की आशंका बनी रहती है जिससे अर्थव्यवस्था प्रभावित होगी और भारत में घुसपैठियों की संख्या बढ़ेगी।

तिस्ता नदी जल विवाद

1. तिस्ता नदी ब्रह्मपुत्र एवं गंगा के बाद दोनों के बीच बहने वाली सबसे बड़ी नदी है।

2. तिस्ता के जल-विभाजन के संबंध में 1983 में एक अस्थायी समझौता किया गया था। जिसके अनुसार भारत को नदी के पानी के 39%, बांग्लादेश को 36% और शेष 25% मुक्त प्रवाह के लिए छोड़ दिया गया

2. वर्तमान में नदी जल-विभाजन के लिए भारत ने एक वैकल्पिक फार्मूला दिया है जिसके अनुसार भारत को 42.5%, बांग्लादेश को 37.5% और 20% पानी मुक्त प्रवाह के लिए छोड़ा जाएगा।

तिस्ता जल विवाद का मूल कारण :→

1. बांग्लादेश में शेख हसीना भारत को छूट प्रदान करके अपनी राजनीतिक शक्ति को कमजोर नहीं करना चाहती। क्योंकि BNP (बांग्लादेश बांग्लादेशी नेशनलिस्ट पार्टी) शेख हसीना पर यह आरोप लगाती है कि वह भारत समर्थन के नाम पर बांग्लादेशी हितों के साथ समझौता कर रही है।

2. भारत एक संघीय शासन वाला देश है जहाँ जल एक राज्य सूची का विषय है और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के द्वारा समझौते का समर्थन नहीं किया जा रहा है।

निष्कर्ष :→ बांग्लादेश छोटा पड़ोसी देश है इसलिए वे पानी विभाजन में सहुलियत दी जा सकती है यह

उल्लेखनीय है कि भारत को पारगमन रास्ता मिलने से अत्यधिक लाभ होगा और राष्ट्रीय हितों को क्षेत्रीय हितों की तुलना में प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

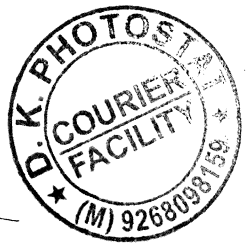

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

भारत के बांग्लादेश में हित

1. वर्तमान में भारत के द्वारा 'एक्ट ईस्ट' नीति का प्रयोग किया जा रहा है। इसलिए दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों के साथ संपर्क संचार के लिए बांग्लादेश का प्रभावी प्रयोग किया जा रहा है।

2. बांग्लादेश की सीमा असम, मेघालय, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और मिजोरम के साथ मिलती है जो भारत की सुरक्षा की दृष्टि से सबसे संवेदनशील माने जाते हैं। इसलिए बांग्लादेश का भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए निर्णायक महत्व है।

3. दक्षिण एशिया में भारत का सबसे बड़ा द्वीपक्षीय व्यापार बांग्लादेश के साथ है।

4. बांग्लादेश के साथ प्राप्त होने वाली कनेक्टिविटी की सुविधा से प० बंगाल से पूर्वोत्तर राज्यों में प्रवेश अत्यधिक

आवश्यक हो जाता है। जो पूर्वोत्तर राज्यों के विकास में सहायक है।

Que:

शाहबाग स्क्वायर (चौक) में होने वाला संघर्ष बांग्लादेश में राष्ट्रवादी तथा धार्मिक कट्टरतावादियों के बीच (इस्लामी शक्तियों के बीच) मौलिक मतभेद उजागर किया है। भारत के लिए इसके महत्व को बताइये।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159.

Ans

राष्ट्रवादी	इस्लामी	भारत के लिए महत्व
→ बांग्लादेश का निर्माण भी राष्ट्रवादी, पंथनिरपेक्ष ताकतों के द्वारा किया गया है। ~~भारत~~	↓ इनको दण्ड देने से इन्होंने पंथनिरपेक्ष के खिलाफ कार्य किए ⇓ शाहबाग चौक आन्दो	⇓ इस्लामी शक्ति बनने से भारत के लिए रणनीतिक खतरा उत्पन्न होगा।
→ भारत में पंथनिरपेक्ष दल का नाम अवामी लीग है।	· राष्ट्रवादी कट्टरपंथीयों को मृत्युदण्ड	· राष्ट्रवादी शक्ति बांग्लादेश में होने पर → भारत के साथ संबंध अच्छे बनेंगे।
→ 1971 में युद्ध / अपराध किया था उन्हें (इस्लामी) दण्डित किया गया था।	· जमाते इस्लामी के द्वारा विरोध किया गया	· इस्लामी शक्ति होने पर भारत के साथ छोटे-2 मुद्दों पर विवाद होगा।

Que भारत और बांग्लादेश के बीच बेहतर सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक सहयोग के बावजूद बांग्लादेश में राष्ट्रवाद का प्रभावशाली होना अपने-आप भारत विरोधी बन जाता है।

Que नेपाल में चीन के किस प्रकार के हित हैं? और चीन ~~के~~ का नेपाल में बढ़ता प्रभाव भारत ~~के लिए~~ के लिए सुरक्षा की किन प्रमुख चुनौतियों को प्रस्तुत करता है?

Ans. तिब्बत का स्थायित्व
चीन का व्यापार
चीन के हथियारों का निर्यात

D. K. PHOTOSTAT
(M) 9268098159
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

D. K. PHOTOSTAT
(M) 9268098159
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत – श्रीलंका

1. श्रीलंका भारत का निकटवर्ती पड़ोसी है। इसके अतिरिक्त श्रीलंका हिन्द महासागर में स्थित अत्यधिक महत्वपूर्ण समुद्री संचार मार्ग पर स्थित है।

2. हिन्द महासागर में चीन का बढ़ता प्रभाव तथा चीन एवं श्रीलंका के बीच होने वाले सामरिक समझौते से भारत के लिए सुरक्षा का स्वाभाविक खतरा उत्पन्न होता है।

3. श्रीलंका को भारत से सुरक्षा का मनोवैज्ञानिक खतरा बना रहता है।

4. श्रीलंका और भारत के बीच की भौगोलिक दूरी 12 नॉटिकल मील से लगभग 20 नॉटिकल मील की है।

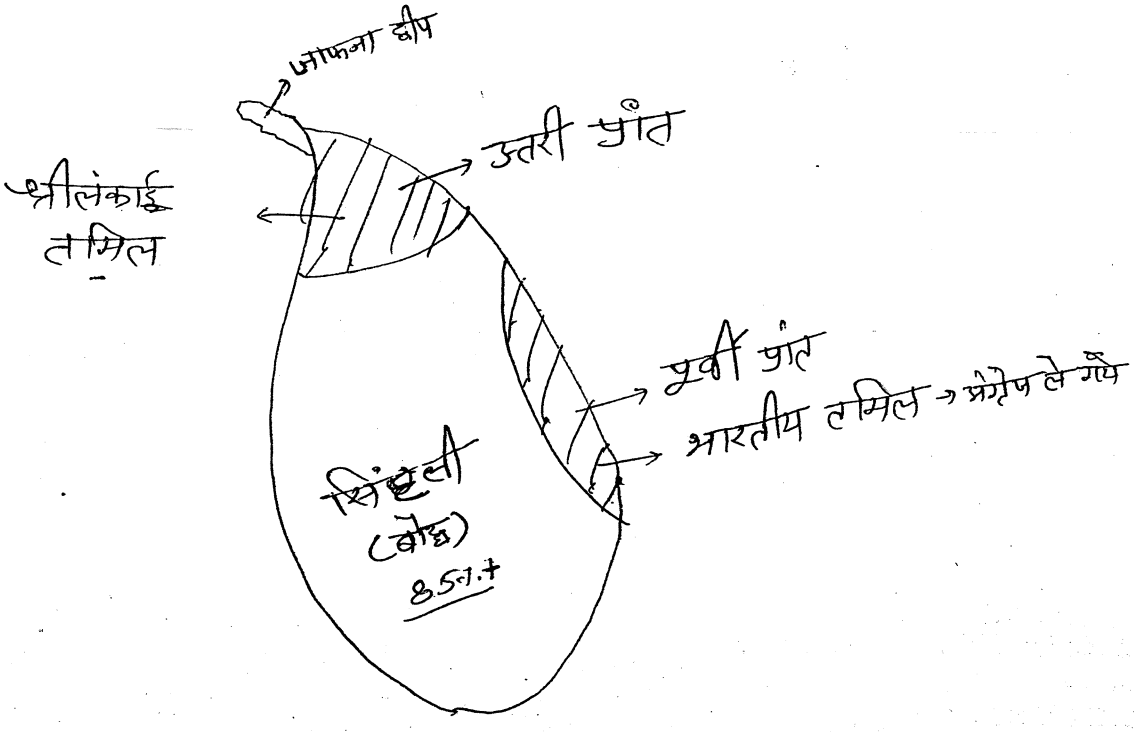

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

श्रीलंका में समस्या की उत्पत्ति?

(i) जब तक श्रीलंका में ब्रिटिश सरकार थी वहाँ आधुनिक भाषा → अंग्रेजी, तमिल, सिंहली थी।

(ii) श्रीलंकाई सरकार ने नागरिकता का नया कानून बनाया। जिससे पूर्वी प्रांत में रहने वाले तमिल नागरिकता से विहीन हो गए।

(iii) 1956 में श्रीलंकाई सरकार ने भाषायी कानून बनाया जिसमें केवल सिंहली को आधिकारिक भाषा बनाया और अंग्रेजी, एवं तमिल को आधिकारिता से बाहर रखा। इस कानून से पूर्वी प्रांत और उत्तरी प्रांत रह. में रहने वाले लोग प्रभावित हुए।

इस

(iv) परिणाम स्वरूप तमिलों ने शांतिपूर्ण आंदोलन शुरू किया और स्वायत्तता की मांग की। यह मांग सांस्कृतिक थी। इस समस्या के परिणाम स्वरूप L.T.T.E की स्थापना हुई। जिसके नेता प्रभाकर थे जिन्होंने पृथक राज्य की मांग की. जो भी हिंसात्मक तरीके से।

⇒ तमिल समस्या (नृजातीय समस्या)

श्रीलंका की तमिल समस्या के समाधान के लिए भारत-श्रीलंका के बीच 1987 में एक ऐतिहासिक समझौता किया गया, जिसमें श्रीलंकाई संविधान के दायरे में तमिलों को स्वायत्तता प्रदान करने का प्रयत्न किया गया।

(i) तमिलों को स्वायत्तता देने के लिए पहली बार श्रीलंका में 9 प्रांतीय सरकारों के निर्माण की घोषणा की गई, जिसमें उत्तरी और पूर्वी प्रांत तमिलों के लिए बनाये जायेंगी जाएंगे।

(ii) इन प्रांतों को शासन के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, कृषि, भूमि, और पुलिस जैसे विषय हस्तांतरित किए गये। जिससे श्रीलंकाई संविधान में 13वें संविधान संशोधन के रूप में शामिल कर लिया गया।

⇒ 13वाँ संविधान संशोधन एवं श्रीलंका में तमिलों की समस्या :→

श्रीलंकाई सरकार का तर्क :→

(i) श्रीलंकाई सरकार का तर्क है कि श्रीलंका में मूल समस्या आतंकवाद की थी और L.T.T.E. की समाप्ति के बाद

नृजातीय समस्या अपने - आप समाप्त हो गई

(ii) श्रीलंकाई सरकार तमिलों के पुनर्वास और तमिल क्षेत्रों के विकास पर बल दे रही है।

(iii) सरकार के द्वारा सभी प्रांतों में उत्तरी एवं पूर्व प्रांत सहित निर्वाचन सम्पन्न करा दिये गये हैं।

(iv) वर्तमान ~~श्री सेना~~ सिरीसेना सरकार को तमिल समुदाय का समर्थन भी प्राप्त है और सरकार ने मानव अधिकार उल्लंघन की जांच का आश्वासन भी दिया है।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

तमिलों का तर्क ⇨

(i) तमिलों के अनुसार श्रीलंकाई समस्या का मूल कारण तमिल अल्पसंख्यकों के साथ भेद भाव था जिसके परिणामस्वरूप आतंकवाद उत्पन्न हुआ। इसलिए L.T.T.E. के खात्मे से तमिलों की स्वायत्तता का मुद्दा हल नहीं हुआ।

(ii) तमिल प्रांतीय सरकारों को भूमि एवं पुलिस विषय भी हस्तांतरित करने की मांग कर रहे हैं, जिसके बिना 13वां संविधान संशोधन अधूरा है।

(iii) तमिलों के अनुसार श्रीलंकाई सरकार और LTTE के बीच हुए हिंसक संघर्ष के दौरान जिन 40 हजार से ज्यादा तमिल नागरिकों की हत्या की गई थी उनकी जांच अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार एजेंसियों के द्वारा होनी चाहिए।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

भारत का दृष्टिकोण :→

(i) श्रीलंका के लगभग 50 हजार तमिल शरणार्थी अभी भी भारत के तमिलनाडु प्रांत में रह रहे हैं। इसलिए तमिलों की समस्या से भारत सीधे प्रभावित होता है

(ii) चीन और पाकिस्तान का श्रीलंका में बढ़ता प्रभाव भारत के लिए एक अतिरिक्त चुनौती है। इसलिए भारत श्रीलंका के साथ संबंध बेहतर करके 13वें संविधान संशोधन को क्रियान्वित करने का समर्थक है।

(iii) श्रीलंका में तमिलों की हत्या की जांच के लिए किसी अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी के द्वारा जांच का समर्थक नहीं है।

⇒ भारत - श्रीलंका के बीच आर्थिक सम्बंध :-

(i) 1998 में भारत श्रीलंका के बीच मुक्त व्यापार के समझौते पर हस्ताक्षर हुआ जो समूचे दक्षिण एशिया के लिए आर्थिक सहयोग का एक मॉडल माना जाता है।

(ii) इस समझौते से यह सिद्ध हुआ कि भारत छोटे पड़ोसियों के लिए सुरक्षा का खतरा नहीं अपितु आर्थिक विकास का एक अवसर है।

(iii) श्रीलंका का सबसे बड़ा द्विपक्षीय व्यापारिक सहयोगी भारत है और श्रीलंका को आर्थिक सहायता देने वाला दूसरा सबसे बड़ा देश भी भारत है।

(iv) व्यापार को और बढ़ाने के लिए दोनों के बीच वर्तमान में CEPA [(comprehensive Economic Partnership Agreement) समग्र आर्थिक सहभागिता के समझौते] पर भी विचार किया जा रहा है।

भारत श्रीलंका के बीच सुरक्षा का मुद्दा :-

(i) LTTE की समाप्ति के बाद भारत एवं श्रीलंका के बीच सैनिक संबंधों को पुनः सुदृढ़ किया जा रहा है।

(ii) श्रीलंका के सैनिकों को प्रशिक्षण देने वाला भारत सबसे बड़ा देश है।

(iii) भारत-श्रीलंका-मालद्वीप के बीच समुद्री सुरक्षा के लिए आपसी समझौता किया गया है। और भारत श्रीलंका के बीच बढ़ते सैनिक संबंधों एवं आर्थिक सम्बंधों के कारण लगातार सकारात्मक प्रगति दर्ज की जा रही है।

→ मछुवारों का मुद्दा ः

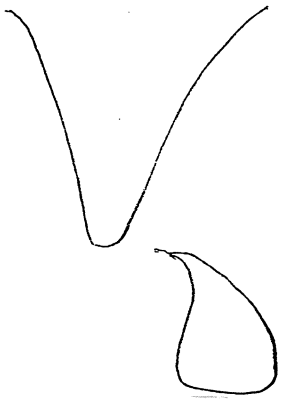

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Cou... ...cility)
(IAS/PCS) All Stu... Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

United Nations Convention for law of sea
(समुद्री कानून से संबंधित सं. राष्ट्र संघ का कन्वेंशन)
↓
एक देश के भूभाग से 12 Nautical mile तक उस देश की संप्रभुता का विस्तार होगा जबकि 200 नॉटिकल मील तक उसका अनन्य आर्थिक क्षेत्र

समस्या क्या है?

(i) भारत और श्रीलंका के बीच में समुद्री सीमा रेखा का सीमांकन 1974 में ही कर लिया गया है इसके बावजूद मछवारों के द्वारा बार-2 समुद्री रेखा का उल्लंघन किया जाता है।

⇒ सीमा का उल्लंघन क्यों होता है ?

(i) भारत और श्रीलंका के बीच का समुद्री तट अत्यधिक सकरा है जहाँ सीमा का उल्लंघन स्वाभाविक हो जाता है।

(ii) इस क्षेत्र में मशीनीकृत नाव के प्रयोग बढ़ने के कारण अत्यधिक मछली मार ली गई है अतः नाविक मछली की तलाश में सीमा पार करते हैं।

(iii) भारतीय नाविक परम्परागत रूप में इस क्षेत्र में मछली मारते रहे हैं इसलिए वे सीमा रेखा का ध्यान नहीं रखते हैं।

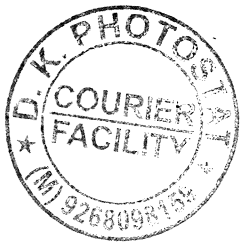

सुरक्षा प्रत्यक्षण में भिन्नता ⇒

(i) भारत के अनुसार मछुवारों का मुद्दा मानवीय दृष्टि से जुड़ा हुआ विषय है इसलिए इस पर मानवीय रूप में ही विचार होना चाहिए।

(ii) जबकि श्रीलंका सरकार मछुवारों को अपने लिए सुरक्षा खतरा मानती है और सरकार को यह आशंका है कि मछुवारों के वेश में LTTE के समर्थक हो सकते हैं।

समाधान :-

① दोनों देश के बीच सकरे समुद्री क्षेत्र होने के कारण सीमा का उल्लंघन स्वाभाविक है और इसे बचाने के

लिए मछली मारने के वैकल्पिक दिनों का प्रावधान होना होना चाहिए।

(ii) निकट के तटीय क्षेत्रों में मशीनीकृत नाव के मछली मारने पर प्रतिबंध होना चाहिए और मशीनीकृत नावों को केवल गहरे समुद्र में मछली मारने की अनुमति होनी चाहिए।

(iii) सुरक्षा के प्रति मनोवैज्ञानिक भय को दूर करने के लिए मछुवारों को पहचान पत्र देना चाहिए।

(iv) समुद्री सीमा के उल्लंघन को रोकने के लिए GPS जैसी आधुनिक तकनीक का भी प्रयोग किया जा सकता है।

निष्कर्ष: श्रीलंका की तमिल समस्या के लगभग समाधान की स्थिति के बाद मछुवारों का विवादों दोनों देशों के बीच में विवाद का भावनात्मक मुद्दा बन जाता है।

प्रश्न भारत और श्रीलंका संबंधों को प्रभावित करने वाले भारत के देशीय अथवा क्षेत्रीय कारकों का महत्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर Part-I → भारत में संघीय शासन स्वीकार किया गया है जिसके अनुसार विदेश नीति के निर्माण का दायित्व संघ सरकार को प्रदान किया गया है।

→ भारतीय प्रांत तमिलनाडु की श्रीलंका से निकटता के कारण श्रीलंकाई तमिल शरणार्थियों के तमिलनाडु में निवास की वजह से तमिलनाडु श्रीलंका के प्रति भारतीय नीति को प्रभावित करता है।

→ तमिलनाडु और श्रीलंका के बीच • साझी भाषायी एवं धार्मिक एकता भी है।

Part-II

→ तमिलनाडु के दबाव के कारण भारत सरकार ने श्रीलंका को हथियारों की सप्लाई पर प्रतिबंध लगा दिया।

→ मानव अधिकार के मुद्दे ~~के विरुद्ध~~ पर श्रीलंका के विरुद्ध मतदान किया।

→ श्रीलंकाई पर्यटकों का तमिलनाडु में विरोध किया गया।

→ भारतीय प्रधानमंत्री की कॉमनवेल्थ देशों के श्रीलंका में आयोजित सम्मेलन में सहभागिता नहीं की गई।

निष्कर्ष :-

Part-III

→ संघ में एक दल की प्रभावी सरकार के कारण विदेश नीति में क्षेत्रीय कारकों का महत्व कम हुआ है।

→ कोई भी लोकतांत्रिक सरकार विदेश नीति निर्माण में जन भावनाओं का उल्लंघन नहीं कर सकती, परन्तु राष्ट्रीय हित सदैव क्षेत्रीय हितों से महत्वपूर्ण होने चाहिए।

भारत-श्रीलंका के बीच मानव अधिकार का मुद्दा :-

मानव अधिकार से सम्बंधित मुद्दों के समाधान के लिए United Nations Human Rights Council (सं.रा. संघ परिषद) का गठन किया गया है। जिसमें 47 सदस्य हैं।

उद्देश्य :- मानवअधिकार से संबंधित कानूनों के उल्लंघन होने पर उस देश के विरुद्ध मतदान करना।

मानव अधिकार परिषद और श्रीलंका :-

(i) वर्ष 2016 में संयुक्त राष्ट्र संघ मानवाधिकार उच्चायुक्त की रिपोर्ट पर विचार करते हुए मानव अधिकार परिषद ने श्रीलंका में होने वाले मानव नरसंहार की जांच अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों से कराने का निर्देश दिया।

(ii) परिषद में मतदान के दौरान अभी अमेरिका और यूरोपीय देशों ने श्रीलंका के विरुद्ध मतदान किया जबकि चीन और पाकिस्तान ने श्रीलंका के पक्ष में मतदान किया।

भारत का दृष्टिकोण :-

(i) भारत ने श्रीलंका के पक्ष में मतदान नहीं किया, जिससे 13वें संविधान संशोधन को लागू कराने के लिए श्रीलंका पर दबाव बनाया जा सके।

(ii) भारत ने श्रीलंका के विरुद्ध भी मतदान नहीं किया, जिससे श्रीलंका में चीन और पाकिस्तान का प्रभाव न बढ़े।

(iii) भारत ने मध्यमार्गी पथ अपनाते हुए मतदान से तटस्थ रहा। इसलिए नैतिकता के साथ राष्ट्रीय हितों को समायोजित करने का प्रयत्न किया गया।

Que:- भारत श्रीलंका के बीच गहरे संबंध होने के बावजूद दोनों देशों में सुरक्षा प्रत्यक्षण (देखना) में भिन्नता है तथा अविश्वास भी विद्यमान है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098...

Ans:-

(i) तमिल भाषा का साझा आधार और बौद्ध धर्म की साझी विरासत दोनों के बीच सांस्कृतिक निकटता के परिणाम है।

(ii) श्रीलंका भारत का समुद्री पड़ोसी है जिसकी हिन्द महासागर के समुद्री संचार मार्ग पर महत्वपूर्ण अवस्थिति है।

(iii) श्रीलंका का सबसे बड़ा द्विपक्षीय व्यापारिक भागीदार भारत है। (5.5 B. Dollar) और श्रीलंका की आधारभूत संरचना के विकास में सहायता देने वाला दूसरा सबसे बड़ा देश भारत है।

(iv) भारत के द्वारा श्रीलंकाई सैनिकों को प्रशिक्षण दिया जाता है तथा हथियार भी प्रदान किये जाते हैं।

Part-II

(i) श्रीलंका की चीन के प्रति बढ़ती सामरिक निकटता भारत में सुरक्षा चिन्ता बढ़ाने वाली घटना है।

(ii) तमिल समस्या को लेकर श्रीलंका भारत से मनोवैज्ञानिक खतरा महसूस करता है।

<u>निष्कर्ष</u> :- भारत श्रीलंका के बीच सम्बंध सांस्कृतिक; आर्थिक और राजनीतिक रूप में मधुर बने हुए हैं और LTTE की समाप्ति के बाद दोनों के बीच विद्यमान अविश्वास लगातार कम हो रहे हैं। जिससे भविष्य में बेहतर संबंधों की संभावना है।

<u>भारत - पाकिस्तान सम्बंध</u>

⇒ भारत पाकिस्तान के बीच प्रतिकूल सम्बंधों का <u>मूलकारण</u> :-

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9266098159

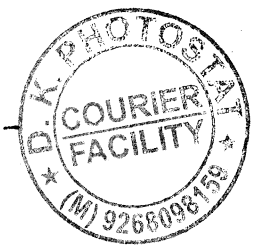

<u>भारत</u>

1. लोकतांत्रिक
2. पंथनिरपेक्ष

<u>पाकिस्तान</u>

1. दो राष्ट्र का सिद्धांत
   हिन्दू → मुस्लिम
   दो धर्म नहीं, दो राष्ट्र हैं।
2. धार्मिक राज्य
3. सैनिक शासन (1958-71
   1978-88
   1996-2008)

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

1947 का पाकिस्तान

पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, खैबर पख्तून ख्वा, पूर्वी बंगा

बलूचिस्तान की समस्या :-

1. बलूचिस्तान पाकिस्तान का सबसे बड़ा राज्य है। जिसका क्षेत्रफल पाकिस्तान के कुल भू-भाग का 40% है
2. बलूचियों के द्वारा आरंभ से ही अपने लिए अलग बलूचिस्तान की मांग की गई।
3. बलूचिस्तान के अलावा बलूच भाषा बोलने वाले लोग अफगानिस्तान और ईरान में भी हैं।
4. बलूचिस्तान आर्थिक रूप में पाकिस्तान का सबसे पिछड़ा राज्य है।
5. प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से बलूचिस्तान सर्वाधिक सम्पन्न है और इसकी भौगोलिक अवस्थिति भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि बलूचिस्तान की सीमा अफगानिस्तान और ईरान के साथ मिलती है।
6. बलूचिस्तान में बलूचियों का आंदोलन यह प्रदर्शित करता है कि पाकिस्तान में धर्म के आधार पर निर्मित एक वास्तविक नहीं है।

चीन और बलूचिस्तान :→

(i) चीन के द्वारा बलूचिस्तान में ग्वादर पत्तन का निर्माण किया जा रहा है। और इस पत्तन को चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे से जोड़ने की भी योजना है। जिसमें चीन 44 Billion Doller का निवेश कर रहा है।

(ii) इस निवेश से बलूचिस्तान का लाभ होगा, परन्तु बलूचियों को इस पर निम्नलिखित आपत्ति है -

(a) उनके मछली मारने का अधिकार प्रभावित होगा।
(b) उनको यह भी लगता है कि उनके प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग शेष पाकिस्तान के विकास के लिए होगा।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098158

भारत और बलूचिस्तान

(i) पाकिस्तानी सरकार के द्वारा बलूचियों का लगातार दमन किया जाता रहा है और पहली बार भारत के द्वारा बलूचिस्तान में मानव अधिकार के हनन का मुद्दा उठाया।

(ii) पाकिस्तान के द्वारा बार-बार कश्मीर में मानव अधिकारों के उल्लंघन का आरोप भारत पर लगाया।

(iii) पाकिस्तान के विरुद्ध भारत ने आक्रामक नीति का प्रयोग करते हुए बलूचिस्तान का मुद्दा उठाया। यद्यपि भारत ने बलूचिस्तान में किसी भी उग्रवादी संगठन को समर्थन देने का पक्ष नहीं लिया।

⇒ भारत की नीति की आलोचना क्यों?

1. भारत के द्वारा परम्परागत रूप में ~~कुछ~~ नैतिक आधार का पालन किया गया। जिसके अनुसार भारत ने किसी देश के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप का समर्थन नहीं किया।

2. मानवाधिकार का मुद्दा अत्यधिक संवेदनशील है और भारत के विरुद्ध कश्मीर और उत्तरी-पूर्वी राज्यों में मानव अधिकार उल्लंघन के आरोप लगते रहते हैं।

निष्कर्ष :- पाकिस्तान के आक्रामक दृष्टिकोण को देखते हुए भारत के द्वारा बलूचिस्तान का मुद्दा उठाना ठीक माना जाएगा।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

कश्मीर समस्या क्या है?

⇒ कश्मीर पर पाकिस्तान का दावा :-

(i) पाकिस्तान ने द्विराष्ट्रवाद के आधार पर कश्मीर की मांग की। क्योंकि कश्मीर मुस्लिम बहुल प्रांत था।

(ii) पाकिस्तान में बहने वाली सभी नदियां कश्मीर होकर पाकिस्तान में प्रवेश करती हैं।

(iii) भौगोलिक रूप में कश्मीर पाकिस्तान के ज्यादा निकट है क्योंकि भारत की स्वतंत्रता से पहले कश्मीर जाने का रास्ता सियालकोट से था जम्मू से नहीं।

कश्मीर पर पाकिस्तान की नीति क्या है?

(i) पाकिस्तान कश्मीर को विवादास्पद क्षेत्र मानता है।
(ii) कश्मीर मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण करता है।
(iii) कश्मीर के पृथकतावादियों को समर्थन।
(iv) कश्मीर में सीमापार आतंकवाद को बढ़ावा देना।

कश्मीर पर भारत का दावा :-

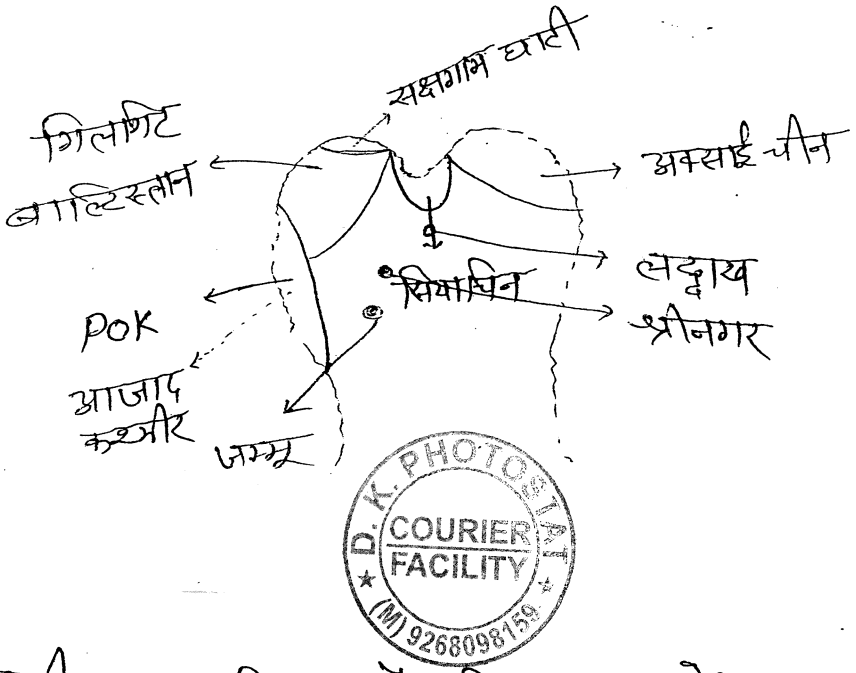

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

(i) कश्मीर का विलय वैधानिक रूप में भारतीय संघ में किया गया था।

(ii) कश्मीर के इस विलय को जम्मू-कश्मीर की संविधान सभा के द्वारा अनुमोदित भी किया गया।

(iii) भारतीय राष्ट्र का निर्माण पंथनिरपेक्ष एवं लोकतांत्रिक रूप में हुआ इसलिए भारत किसी धर्म विशेष समुदाय का देश नहीं है।

D.K. PHOTO COURIER FACILITY (M) 9268098159

भारत की नीति :→

(I) कश्मीर भारत का अभिन्न भाग है।

(II) पाकिस्तान की सीमापार आतंकवाद का सामना करने के लिए बेहतर सीमा प्रबंध।

(III) संविधान के दायरे में कश्मीर के सभी राजनीतिक पक्षों के साथ वार्ता।

(IV) कश्मीर में लागू सैन्य बल कानून (AFSPA) को क्रमिक रूप में हटाने पर विचार करना तथा मानव अधिकारों के हनन को शून्य करना।

(V) कश्मीर को ज्यादा से ज्यादा स्वायत्तता प्रदान करना।

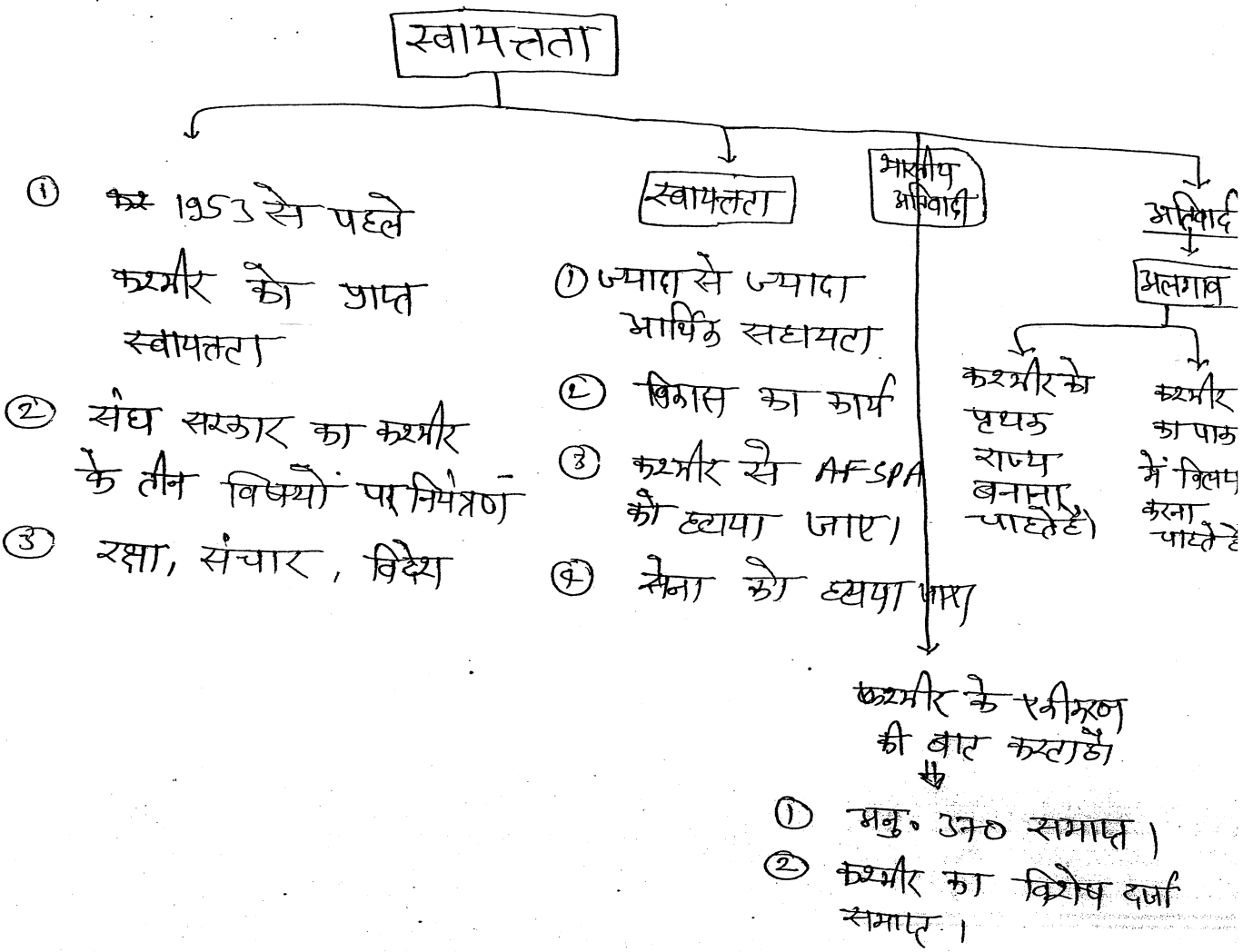

कश्मीर मसले पर भारत का परिवर्तित दृष्टिकोण :-

① भारत के द्वारा पहली बार गिलगित बाल्टिस्तान के मुद्दे को उठाया गया।

② भारत ने पहली बार आक्रामक दृष्टिकोण अपनाते हुए कहा कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के गिलगित बाल्टिस्तान क्षेत्र को भी विवाद का एक भाग मानना चाहिए।

③ भारत ने कठोर दृष्टिकोण अपनाते हुए कहा कि पाकिस्तानी अधिकृत कश्मीर का भारत में विलय ही समस्या का समाधान है।

D.K. PHOTO STAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

* गिलगित - बाल्टिस्तान

पाकिस्तान सरकार ने अभी तक गिलगित बाल्टिस्तान का status स्पष्ट नहीं किया है और गिलगित बाल्टिस्तान के लोग इस बात से भी नाराज हैं कि पाकिस्तान सरकार पाकिस्तान के अन्य भागों से लोगों को इस क्षेत्र में बसा रही है।

* समाधान ⇒

① भारत पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर पर दावा करता है जबकि पाकिस्तान समूचे कश्मीर को अपना मानता है, दोनों का दृष्टिकोण व्यवहारिक नहीं है।

② वर्तमान नियंत्रण रेखा को अंतर्राष्ट्रीय रेखा में परिवर्तित कर देना ही समस्या का सर्वाधिक व्यवहारिक समाधान है।

जिसका अभिप्राय है कि यथास्थिति बनाए रखा जाए।

(iii) दोनों कश्मीर के बीच (POK & भारत) व्यापार और लोगों के आवागमन को बढ़ावा दिया जाए।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

सिंधु नदी जल संधि (1960)

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

1. भारत-पाकिस्तान के बीच 1960 में नदियों के विभाजन का समझौता किया गया, जो विश्व बैंक की मध्यस्थता में सम्पन्न हुआ।

2. इसके अनुसार सिन्धु, झेलम और चिनाब नदियाँ पाकिस्तान को दी गई जबकि सतलज, रावी और व्यास नदियाँ भारत के हिस्से में आई।

3. पाकिस्तान को प्रदत्त सभी नदियाँ भारतीय प्रांत जम्मू से होकर बहती हैं इसलिए भारत को पाकिस्तान की नदियों के पानी के <u>सीमित प्रयोग</u> का अधिकार दिया गया।
केवल, (Non-consumption use of water)

असीमित प्रयोग → Consumption use of water
(पीने, नहर)

4. संधि में यह भी उल्लेखित है कि संधि के किसी प्रावधान पर विवाद को हल करने के लिए निम्न लिखित तरीकों का प्रयोग किया जाएगा —

(a) आपसी समझौते से।
(b) मध्यस्थ के द्वारा।
(c) अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण के माध्यम से।

(5) भारत और पाकिस्तान के बीच यह एक ऐतिहासिक समझौता है, जिसे दो बड़े युद्धों के बावजूद भी तोड़ा नहीं गया।

इस समझौते पर पाकिस्तान की आपत्ति :-

(i) पाकिस्तान ने भारत पर संधि के उल्लंघन का आरोप लगाया है। उसके अनुसार भारत, पाकिस्तान के हिस्से के पानी का प्रयोग कर रहा है।

(ii) पाकिस्तान के संगठन जमातुल दावा के द्वारा भारत पर जल आतंकवाद फैलाने का आरोप लगाया है।

भारत का दृष्टिकोण :-

(i) पाकिस्तानी विदेश नीति का मूल आधार भारत विरोध है। इसलिए पानी के मुद्दे को उठाकर वह भारत विरोध को सदैव जीवित रखना चाहता है।

(ii) पानी के बहाने पाकिस्तान कश्मीर समस्या का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने का प्रयास करता है और सीमापार आतंकवाद से विश्व जनमत का ध्यान भटकाने का भी प्रयत्न करता है।

(iii) पानी के बहाने पाकिस्तान अपनी आंतरिक समस्या से बचना चाहता है। क्योंकि सिंधु नदी के पानी के अधिकतर हिस्से का प्रयोग पंजाब और सिंध प्रांत कर लेते हैं। इसलिए

बलुचिस्तान प्रांत को पानी का उचित हिस्सा नहीं मिल पाता है।

निष्कर्ष :→ सिंधु नदी संधि पाकिस्तान के लिए लाभप्रद है इसलिए आज तक पाकिस्तान ने इसे बनाए रखा। उसे भारत के साथ अन्य किसी भी समझौते का सम्मान नहीं किया और वर्तमान में पानी के विभाजन के अलावा जल संरक्षण की भी आवश्यकता है।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

सरक्रिक का मुद्दा

① भारत और पाकिस्तान के बीच गुजरात प्रांत के कच्छ क्षेत्र तथा पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत के बीच अभी-भी समुद्री सीमा रेखा का सीमांकन नहीं किया गया है।

② यह क्षेत्र दलदली और दुर्गम होने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न क्षेत्र है।

पाकिस्तान का पक्ष :-

① पाकिस्तान के अनुसार सिंध प्रांत और ~~पूर्व~~ मुम्बई प्रांत के बीच 1925 में सीमा का निर्धारण किया गया था।

② उसके अनुसार सरक्रिक में हरे रंग की रेखा ~~खींची~~ गई है और यही वास्तविक सीमा होनी चाहिए।

(iii) पाकिस्तान के अनुसार इस दलदली सीमा क्षेत्र के निर्धारण के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के समुद्री कानून लागू नहीं होगा।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098149

भारत का पक्ष :-

(i) भारत के अनुसार इस क्षेत्र के विभाजन के लिए समुद्री कानून का प्रयोग होना चाहिए जिसके अनुसार क्षेत्र को बीचों-बीच विभाजित करना चाहिए।

(ii) भारत का मानना है कि उच्च ज्वार के समय यह क्षेत्र नौवहन योग्य हो जाता है इसलिए इस पर समुद्री कानून लागू होंगे।

निष्कर्ष :- यह उल्लेखनीय है कि भारत ने श्रीलंका, बांग्लादेश के साथ भी समुद्री सीमा रेखा का विवाद शांतिपूर्ण रूप में हल कर लिया है म्यांमार के साथ किसी प्रकार का विवाद नहीं है केवल पाकिस्तान के साथ ही समुद्री सीमा का विवाद है। इससे यह स्पष्ट है कि दोनों देशों के बीच विवाद का मूल कारण गहरा अविश्वास है। इसलिए पानी और जमीन के विवाद इसी अविश्वास के परिणाम हैं।

सियाचिन विवाद

(i) भारत और पाकिस्तान के बीच स्वतंत्रता के बाद तथा शिमला समझौते के बाद (1972) भी सियाचीन क्षेत्र में NJ 9842 के आगे सीमा विभाजित नहीं हो सकी, क्योंकि यह क्षेत्र अत्यधिक ऊंचा और दुर्गम है।

② आरंभिक रूप में यह क्षेत्र निर्जन और सेना विहीन था परन्तु 1984 के बाद भारत ने सियाचीन में सेना तैनात कर दी जो अभी तक बनी हुई है।

सियाचिन भारत के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

1. सियाचिन भू-सामरिक रूप में अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि सियाचिन में भारतीय सेनाओं की तैनाती ऊपर है और पाकिस्तान नीचे है।

2. सियाचिन काराकोरम दर्रे के पास है, जिसका हिमालयी क्षेत्रों में आने-जाने के लिए निर्णायक महत्व है।

3. वर्तमान में चीन के द्वारा POK के गिलगिट बाल्टिस्तान क्षेत्र में आर्थिक गलियारे का निर्माण किया जा रहा है अतः चीनी सैनिकों की उपस्थिति भी इस क्षेत्र में बढ़ रही है।

4. सियाचिन पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर तथा चीन नियंत्रित अक्साई चीन के अत्यधिक निकट है। इसीलिए भारत के द्वारा इस क्षेत्र से सेना हटाने के विकल्प पर विचार नहीं किया जा रहा है।

सियाचिन एवं सामाजिक व पर्यावरणीय मुद्दा

① सियाचिन में अत्यधिक ठण्ड के कारण एवं दुर्गम क्षेत्र की वजह से भारतीय सैनिक मारे जाते हैं।

(ii) इस दुर्गम क्षेत्र में सेना को तैनात करने के लिए बड़ा आर्थिक ~~बजट~~ खर्च भी ~~ख~~ वहन करना पड़ता है।

(iii) हिमालय के ग्लेशियर पर्यावरण के दृष्टिकोण से अत्यधिक संवेदनशील हैं।

(iv) हिमालय के ग्लेशियर समूची मानवता के साझी धरोहर माने जाते हैं। परन्तु सैनिक तैनाती के द्वारा ~~हिमनद~~ ग्लेशियर का आकार कम हो रहा है तथा इसके पिघलने की भी रफ्तार बढ़ रही है।

<u>समस्या का समाधान :-</u>

(i) पाकिस्तान ने इस क्षेत्र को ~~विसैनिकृत~~ विसैन्यीकृत रखने का प्रस्ताव रखा है परन्तु पाकिस्तान के पूरे कश्मीर पर दावे के कारण भारत, पाकिस्तान पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं है।

(ii) दोनों देशों के बीच गंभीर अविश्वास के कारण इस क्षेत्र का सीमांकन करना भी कठिन है।

<u>1990 के बाद भारत-पाकिस्तान सम्बंध</u>

[ट्रैक-1] ⟵⟶ [ट्रैक-2] ⟶ [People to people]

ट्रैक-1: सरकारी वार्ता

ट्रैक-2: गैर-सरकारी वार्ता लेकिन जो विदेशनीति एवं कूटनीति के जानकार हो; विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, पत्रकार, मानवाधिकार कार्यकर्ता

People to people: छात्रों का समूह, सांस्कृतिक दल, खिलाड़ी

[Back channel Diplomacy]
- सरकार का प्रतिनिधि
- सरकार के द्वारा प्रायोजित वार्ता जिसे मीडिया के सामने प्रकाशित नहीं किया जाता है।

ट्रैक-2 कूटनीति

① भारत और पाकिस्तान के बीच सरकार के बीच की वार्ताएँ सदैव बाधित रही हैं क्योंकि दोनों देशों के बीच सहमति का अभाव है तथा अविश्वास अत्यधिक गहरा है। जिसे कम करने के लिए गैर सरकारी लोगों की वार्ताओं का आयोजन किया गया। जिसे लोकप्रिय रूप में ट्रैक-2 कूटनीति का नाम दिया जाता है।

② ट्रैक-2 की वार्ताएँ ट्रैक-1 की वार्ताओं के लिए एक बेहतर पृष्ठभूमि का निर्माण किया जाता है।

दोनों देशों के बीच ट्रैक-2 की प्रकृति :→

गैर-सरकारी

- अवकाश प्राप्त
- पत्रकार, NGO के सदस्य, पर्यावरण संरक्षणकर्ता

→ भारत-पाकिस्तान के बीच होने वाली ट्रैक-2 वार्ताओं में अवकाश प्राप्त विदेश सचिव, अवकाश प्राप्त सैन्य अधिकारी तथा पूर्व मंत्रियों को शामिल किया जाता है।

→ इसलिए दोनों देशों के बीच चलने वाली ट्रैक-2 की प्रकृति में खामी विद्यमान है। क्योंकि ट्रैक-2 की वार्ताओं में पत्रकारों, गैर-सरकारी स्वैच्छिक संगठन के सदस्यों और मानव अधिकार कार्यकर्ताओं को बेहतर प्रतिनिधित्व देने की आवश्यकता है।

(पहला ट्रैक-2 की वार्ता राजस्थान के नीमराना में हुई)

→ तमाम खामियों के बावजूद ट्रैक-2 की वार्ताएँ उपयोगी हैं, वर्ष 2015 में भारत पाकिस्तान के बीच बार-बार युद्ध विराम का उल्लंघन किया गया और सीमा पर गोलीबारी की गई। परन्तु ~~किसी~~ इसी के साथ दोनों के बीच सं. अरब अमीरात में ट्रैक-2 की वार्ताओं का आयोजन भी किया गया था।

लाहौर में 1999 में शुरू हुई प्रक्रिया

⇓

विश्वास निर्माण के उपाय - (Confidence Building measures) (C.B.M)

विश्वास निर्माण के गैर-सैनिक तरीके

1. मछुवारों की रिहाई
2. जेल में बंद कैदियों की रिहाई
3. धार्मिक यात्राएँ
4. पर्यटन
5. बस यात्रा
6. व्यापारिक सम्बंध

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

विश्वास निर्माण के सैनिक तरीके (C.B.M)

परम्परागत C.B.M

- सीमा पर युद्ध विराम का समझौता
- DGMO के बीच वार्ता (Director General of Military operation)
- सेना के अधिकारियों के द्वारा एक-दूसरे को भेंट देना।

परमाणु C.B.M

(i) लाहौर घोषणा पत्र में पहली बार परमाणु C.B.M पर सहयोग का निर्णय लिया गया और इन्होंने परमाणु परीक्षण पर एकतरफा प्रतिबंध की घोषणा की।

(ii). प्रक्षेपास्त्रों के परीक्षण से पहले एक दूसरे को पूर्व सूचना दी जाएगी।

निष्कर्ष :-

भारत - पाकिस्तान के बीच सम्बंध सामान्य बनाने में C.B.M की भूमिका सकारात्मक एवं निर्णायक है जिससे दोनों देशों के बीच अविश्वास को कम करके सहयोग का आधार निर्मित किया जा सकता है।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 92660981 55

एक नई पहल 2004

समग्र वार्ता (Composit dialouge)

अर्थ : (i) परम्परागत रूप में पाकिस्तान के द्वारा कश्मीर मुद्दे पर बल दिया गया और पाकिस्तान के अनुसार कश्मीर एक केन्द्रीय मुद्दा है जिसके समाधान के बिना भारत के साथ अन्य क्षेत्रों में संबंध सामान्य नहीं होंगे।

(ii) जबकि वर्ष 2001 के बाद भारत ने सीमापार आतंकवाद को केन्द्रीय मुद्दा माना। इसलिए दोनों के दृष्टिकोण में विरोधाभास विधमान था।

(iii) समग्र वार्ता के द्वारा दोनों के दृष्टिकोण में समन्वय करने का प्रयत्न किया गया और यह स्वीकार किया गया कि दोनों देशों के बीच विवाद के अनेक मुद्दे हैं जिस पर संस्थागत एवं साथ-साथ वार्ता का आयोजन होगा।

समग्र वार्ता में शामिल किए गए मुद्दे :-

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

समग्र वार्ता में (a) कश्मीर, (b) सियाचिन
(c) सरक्रिक (d) तुलबुल नौवहन परियोजना, (e) आतंकवाद
(f) व्यापारिक सहयोग को बढ़ावा देना
(g) नशीली दवाओं के अवैध लेन देन पर प्रतिबंध

→ दोनों देशों के बीच समग्र वार्ता अत्यधिक बेहतर शुरूआत थी और विशेष तौर पर व्यापारिक संबंधों को शामिल करना उल्लेखनीय है।

→ परन्तु वर्ष 2008 में भारत पर मुम्बई ~~हम~~- आतंकी हमले के बाद समग्र वार्ता रद्द कर दी गई जो आजतक आरंभ नहीं हो पाई।

भारत-पाकिस्तान के बीच आतंकवाद की समस्या :-

आतंकवाद के मुद्दे पर भारत की राय :-

(1) → भारत से परम्परागत युद्ध हारने के बाद (1965, 71) पाकिस्तान ने भारत को क्षतिग्रस्त करने के लिए छद्मयुद्ध अथवा सीमापार आतंकवाद चला रखा है।

② पाकिस्तान में कार्य करने वाले आतंकी संगठन लश्कर-ए-तौयबा जैस-ए-मोहम्मद को पाकिस्तान के द्वारा आर्थिक वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण दिया जाता है। जिससे ये भारत पर आक्रमण कर सके।

③ मुम्बई आतंकी हमले में पाकिस्तानी नागरिक कसाब को जीवित पकड़ा गया और हाल में ही पठानकोट आतंकी हमले में भी पाकिस्तान के सम्मिलित होने के प्रमाण है

④ इसलिए भारत का मानना है कि दोनों के बीच बातचीत और आतंकवाद साथ-साथ नहीं चल सकते।

⑤ जब तक मुम्बई आतंकी घटना में शामिल व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही नहीं होगी और उन्हें दण्डित नहीं किया जाएगा तब तक दोनों के साथ सम्बंध सामान्य नहीं हो सकते।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

आतंकवाद पर पाकिस्तान का नजरिया :-

① पाकिस्तान के अनुसार वह आतंकवाद से पीड़ित राज्य है।

② तहरीक-ए-तालिबान (TTP) के द्वारा पाकिस्तान पर लगातार हमले किए जा रहे है और वर्तमान में पाकिस्तानी सेना उत्तरी वजीरिस्तान क्षेत्र में आतंकवाद से लड़ रही है।

③ पाकिस्तान में पेशावर आतंकी घटना के बाद आतंकवादियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की गई।

निष्कर्ष :- पाकिस्तान की नीतियाँ विरोधाभासी हैं क्योंकि वह घरेलू आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है परन्तु भारत के विरुद्ध सीमापार आतंकवाद को अभी भी बढ़ावा दे रहा है और कश्मीर में होने वाली वर्तमान घटनाएँ इसका प्रमाण है।

भारत-पाकिस्तान के बीच सहयोग की संभावना :-

① भारत और पाकिस्तान दोनों देश तेल और गैस के आयात पर निर्भर हैं और वर्ष 2015 में TAPI (तुर्कमेनिस्तान, पाकिस्तान, अफ्गानिस्तान, भारत) के बीच गैस-पाईप लाईन बिछाने के मुद्दे पर समझौता हुआ।

② वर्ष 2016 में भारत और पाकिस्तान दोनों शंघाई सहयोग संगठन के पूर्ण सदस्य बन गए।

③ भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय व्यापार की अत्यधिक संभावनाएँ हैं। एक अनुमान के अनुसार दोनों देशों के बीच 10 Billion Dollar द्विपक्षीय व्यापार की क्षमता विद्यमान है।

④ सहयोग की इन संभावनाओं के बावजूद दोनों देशों के बीच विवाद अत्यधिक गहरे हैं, इसलिए शांति स्थापना के प्रयत्न किए जा सकते हैं परन्तु शांति स्थापना की गारंटी देना संभव नहीं है।

⑤ परन्तु दोनों के बीच संबंधों को सामान्य बनाने के लिए निम्न लिखित उपाय अपनाये जा सकते हैं—

(a) People to People Contact को बढ़ावा देना।

(b) खेल एवं सांस्कृतिक संबंधों को प्रोत्साहित करना।

(c) व्यापारिक संबंधों में विद्यमान बाधाओं को दूर करना।

निष्कर्ष :-

भारत-पाकिस्तान के बीच गहरे मतभेद के बावजूद बातचीत का रास्ता कभी बंद नहीं होना चाहिए। यह सत्य है कि बातचीत से किसी तत्काल परिणाम की उम्मीद करना निरर्थक है परन्तु इसके द्वारा विश्वास निर्माण को बढ़ावा दिया जाता है।

→ बातचीत के तरीके पर मतान्तर संभव है कि वार्ता समग्र की जाए अथवा विदेश सचिव स्तर की की जाए, सशर्त हो या बिना शर्त हो, बातचीत प्रतिबंधित नहीं होनी चाहिए।

→ पाकिस्तान पड़ोसी देश है उसके पास परमाणु हथियार भी है इसलिए लड़ने का विकल्प उपलब्ध नहीं है और पड़ोसी से अलग-थलग रखना भी संभव नहीं है। इसलिए बातचीत के रास्ते खुले होने चाहिए। यद्यपि इसके साथ भारत को अपनी सामरिक क्षमता के विकास से समझौता नहीं करना चाहिए।

Que भारत और पाकिस्तान के बीच सम्बंध प्रतिकूल होने का मूलकारण परस्पर अविश्वास और आतंकवाद है। दोनों देशों के बीच संबंध बेहतर करने के लिए खेल और सांस्कृतिक संबंध को बढ़ावा दिया जा सकता। स्पष्ट कीजिए

Que:- भारत-पाकिस्तान के बीच कश्मीर समस्या का मूल कारण है अथवा दोनों देशों के राष्ट्र निर्माण और विदेश नीति में विद्यमान भिन्न संबंधों के प्रतिफल होने का मूल कारण है। अपने तर्क प्रस्तुत कीजिए।

Que:- कश्मीर विवाद में सम्मिलित विभिन्न पक्षों के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए। आप इस समस्या के समाधान के लिए किस प्रकार के सुझाव देंगे?

Que:- सियाचिन पर भारत के दावे के तर्कों का उल्लेख कीजिए। क्या आप इस मत से सहमत है कि सियाचिन विवाद भौगोलिक विवाद नहीं अपितु दोनों देशों के बीच विरोधी दृष्टिकोण का परिणाम है।

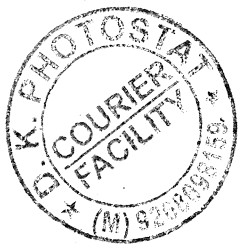

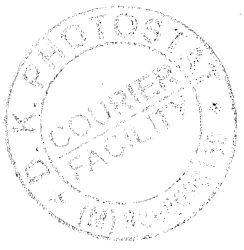

भारत - चीन सम्बंध

चीन का मॉडल

Ⓐ साम्यवादी शासन के रूप में चीन की स्थापना 1949 में

Ⓑ साम्यवादी एक दलीय प्रणाली में विश्वास रखते हैं।

Ⓒ समाजवादी सुदृढ़ता ← विदेश नीति।

भारत का मॉडल

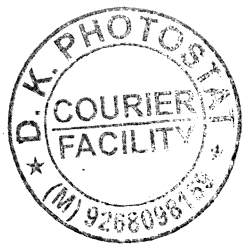

Ⓐ लोकतांत्रिक शासन

Ⓑ बहुदलीय शासन प्रणाली

Ⓒ विदेश नीति → गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति

दोनों देशों के बीच समानता

Ⓐ दोनों पड़ोसी थे और हैं।

Ⓑ दोनों साम्राज्यवादी - उपनिवेशवादी संघर्ष के विरुद्ध आजाद

Ⓒ दोनों का मिलना एशियाई एकता के विचार को आगे बढ़ाना था।

- भारत - चीन - संबंधों का पहला चरण (1947 - 1962)
(भाई - भाई का संबंध)

→ भारत चीन संबंधों में दरार के कारण (दरार शुरू हुई)

① आरंभिक रूप में चीन ने तिब्बत को स्वायत्त माना था परन्तु चीन के शक्तिशाली होने के साथ ही चीन की सेनाएँ तिब्बत में घुस गई और तिब्बत पर चीन का नियंत्रण हो गया।

सम्बंधों का दूसरा दौर : (1962 — 1988) → बाई-बाई (सम्बंध व्यापार)

1979 में चीन का नया नेता → डेंग शियाओपिंग
↳ उदारीकरण

1988 में राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने

① 1988 में पहली बार भारत ने ~~पहली~~ पैरामेट्रिक (व्यवहारिक) दृष्टिकोण अपनाते हुए चीन के साथ संबंधों में सीमा विवाद एवं अन्य मुद्दों के बीच स्पष्ट अलगाव की नीति अपनाई गई।

② भारत ने यह स्वीकार किया कि सीमा विवाद एक जटिल मुद्दा है जिसे हल करने के लिए अलग-से प्रयास किए जाएंगें जबकि चीन के साथ आर्थिक और व्यापारिक संबंधों में सहयोग को बढ़ावा दिया जाएगा।

भारत-चीन के बीच सीमा विवाद :-

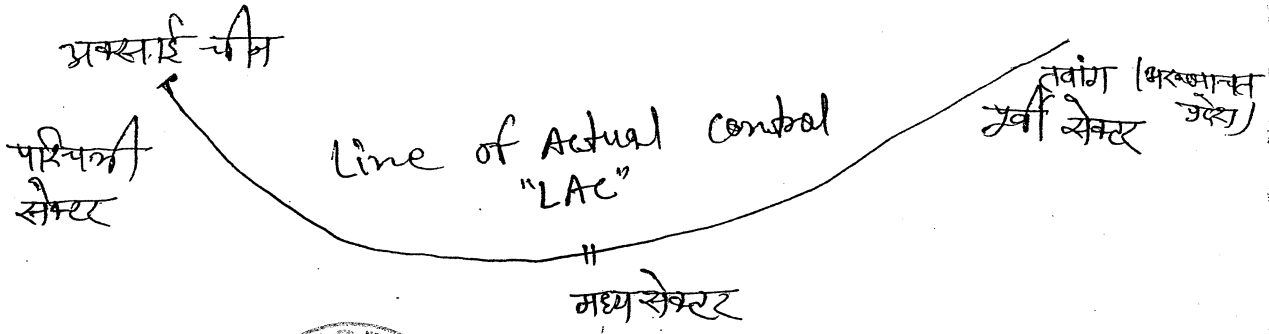

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY

सीमा विवाद हल करने के तरीके :-

① मानचित्र पर समझौता

② सीमा खींचते हैं।

③ पिलर लगाते हैं।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. ...ble All Subject
(Co... ...cility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सीमा विवाद हल क्यों नहीं हो पा रहा है?

① चीन के द्वारा अपने सीमावर्ती क्षेत्रों में अत्यधिक बेहतर आधारभूत संरचना का निर्माण कर लिया गया है। जबकि भारत के द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों में आधारभूत संरचना के विकास पर चीन आपत्ति व्यक्त कर रहा है।

② चीन के अनुसार अक्साई चीन क्षेत्र के मुद्दे पर भारत से बातचीत नहीं की जाएगी। क्योंकि अक्साई चीन जम्मू-कश्मीर का क्षेत्र है जो विवादास्पद है।

③ चीन के द्वारा समूचे अरुणाचल पर दावा किया जा रहा है और चीन अरुणाचल को तिब्बत का दक्षिणी भाग मानता है।

④ भारत सीमा विवाद को जल्द से जल्द हल करना चाहता है परन्तु चीन जानबूझकर उसे लटकाए रखना चाहता है जिससे भारत पर दबाव बना रहे तथा बार-बार चीन के द्वारा सीमा क्षेत्रों में अतिक्रमण भी किया जाता है।

बढ़ता व्यापारिक संबंध एवं सीमा विवाद :→

(1) भारत एवं चीन के बीच संबंध अत्यधिक जटिल बने हुए हैं क्योंकि वर्तमान में व्यापारिक संबंध लगातार बढ़ रहे हैं। परन्तु सीमा विवाद जस का तस बना हुआ है।

(2) भारत और चीन के बीच व्यापारिक घाटे के मुद्दे पर चीन, भारत को रियायत देने के लिए तैयार है परन्तु सीमा विवाद के मुद्दे पर उसका दृष्टिकोण कठोर होता जा रहा है और वह भारत को छूट देने के पक्ष में नहीं है।

(3) इसलिए भारत और चीन के बीच बढ़ता व्यापार सीमा विवाद को हल करने की गारंटी नहीं है।

सीमा विवाद अथवा शक्ति की प्रतिस्पर्धा

(1) भारत-चीन संबंधों को सामान्य बनाने के लिए सीमा विवाद हल करना आवश्यक है लेकिन सीमा विवाद का हल होना संबंधों को सामान्य बनाने की गारंटी नहीं है।

(11) दोनों देशों के बीच गहरे अविश्वास बने हुए हैं। चीन को दलाई लामा की भारत में उपस्थिति के मुद्दे पर गहरी आपत्ति है।

(111) चीन के अनुसार भारत अमेरिका और जापान के बीच बढ़ता सामरिक सहयोग चीन को घेरने के लिए है।

(iv) जबकि भारत को मुख्य चिंता सीमा विवाद को लेकर है तथा चीन-पाकिस्तान के बीच बढ़ती सामरिक मित्रता भारतीय सुरक्षा के लिए भी एक गंभीर मुद्दा है

(v) सीमा विवाद पर चीन का सख्त होता दृष्टिकोण भारत अमेरिका के बीच बढ़ते सामरिक संबंधों का भी परिणाम है।

(vi) वर्ष 2016 में चीन ने भारत की NSG की सदस्यता के दावे का सीधा विरोध किया तथा सुरक्षा परिषद् के द्वारा पाकिस्तानी नागरिक मसूद अजहर को आतंकवादियों की सूची में शामिल करने का विरोध किया।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

दक्षिण चीन सागर

मुद्दा क्या है?

(i) दक्षिण-चीन सागर से होकर विश्व व्यापार के लगभग 50% हिस्से का आदान-प्रदान होता है इसलिए समुद्री संचार मार्ग की दृष्टि से इसका महत्व निर्विवाद है

(ii) इस क्षेत्र में मछली एवं प्राकृतिक संसाधन भी बड़ी मात्रा में विद्यमान हैं।

विवाद क्या है?

(i) चीन ~~समूचे~~ समूचे दक्षिणी चीन सागर पर अपना दावा व्यक्त कर रहा है और उसके अनुसार दक्षिणी चीन सागर

मे '9 Das Line' तक चीन की सम्प्रभुता का विस्तार है।

⑦ इसलिए दक्षिण चीन सागर में स्थित पार्सेल और स्पिट्ले जैसे द्वीपों पर चीन का नियंत्रण है।

⑧ वियतनाम, फिलीपिन्स, ब्रुनेई, मलेशिया चीन के इस दावे को मानने के लिए तैयार नहीं हैं।

अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण का निर्णय :→

① फिलीपिन्स की याचिका पर निर्णय देते हुए अधिकरण के द्वारा चीनी दावे को अस्वीकृत कर दिया गया। अधिकरण के अनुसार चीन के "9 Das Line" का न तो कोई ऐतिहासिक आधार है और न ही कोई तार्किक आधार है।

② न्यायाधिकरण ने कहा कि इस क्षेत्र में समुद्री सीमा रेखा का विवाद संयुक्त राष्ट्र संघ के समुद्री कानून के अनुसार हल होना चाहिए। इसलिए फिलीपिंस को उसका वास्तविक अनन्य क्षेत्र प्राप्त होना चाहिए।

चीन का तर्क :-

① चीन ने न्यायाधिकरण के निर्णय को मानने से इंकार कर दिया है और चीन का यह तर्क है कि विवाद में शामिल सभी पक्षों ने इस मुद्दे को आपसी बातचीत के द्वारा हल करने का Code of Conduct बनाया था

④ चीन के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय अधिकरण समुद्री सीमा के विवाद को हल करता है जबकि यह चीन की सम्प्रभुता का मुद्दा है जिसपर निर्णय देने के लिए अधिकरण को शक्ति नहीं है।
और फिलीपिंस ने अधिकरण में जाकर इसकी अवहेलना की है।

② उसने इस क्षेत्र को अपना <u>सामरिक हित</u> घोषित कर दिया है और उसने यहाँ अपने सैनिकों को तैनात कर दिया है एवं कई कृत्रिम द्वीपों का भी निर्माण कर दिया है।

③ चीन ने यह भी कहा कि अधिकरण में जापानी न्यायाधीश थे जिन्होंने जान बूझकर चीन के विरुद्ध निर्णय दिया।

दक्षिण चीन सागर विवाद में अमेरिका की रूचि:-

① अमेरिका और फिलीपिंस के बीच सैनिक संधि सम्पन्न हुई है। और अमेरिकी सेनाएँ फिलीपिंस में भी तैनात हैं।

② अमेरिका के अनुसार चीन समुद्री संचार मार्ग को बाधित कर रहा है, जो अंतर्राष्ट्रीय विधि के विरुद्ध है।

③ अमेरिका के द्वारा- Pivot Asia (एशिया केन्द्रित नीति) नीति अपनाई गई है जिसके अंतर्गत वह अपने सैनिकों के 60% से ज्यादा भाग की तैनाती एशिया-प्रशांत क्षेत्र में कर रहा है।

④ अमेरिका ने यह स्पष्ट रूप में कहा है कि चीन को अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण का निर्णय मानना चाहिए।

भारत और दक्षिण चीन सागर विवाद :-

① भारत का मानना है कि विश्व में समुद्री संचार मार्गों को बाधित नहीं करना चाहिए।

② भारत के अनुसार चीन को अंतर्राष्ट्रीय आर्बिट्रेशन के निर्णय को स्वीकार करना चाहिए।

③ भारत और वियतनाम के बीच तेल और गैस के उत्खनन के समझौते पर सहयोग का निर्णय किया गया है और दोनों के बीच किए गए समझौते के अनुसार ब्लॉक नं. 128, 'नाइन-डैश-लाइन' के अंतर्गत आता है।

④ यदि चीन पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में राजमार्ग या आर्थिक गलियारे का निर्माण कर सकता है तो भारत के द्वारा वियतनाम के साथ समझौते में चीन की चिंता का ध्यान रखना आवश्यक नहीं है।

⑤ भारत के द्वारा दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में अमेरिका के संयुक्त पेट्रोलिंग के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया।

⑥ दक्षिण चीन सागर के मुद्दे पर चीन की आक्रामक रणनीति से यह प्रतीत होता है कि भारत-चीन सीमा विवाद हल न होने का बड़ा कारण चीन का आक्रामक दृष्टिकोण है।

आतंकवाद (भारत-चीन के बीच)

संयुक्त राष्ट्र संघ और आतंकवाद :-

① संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद् के द्वारा 1999 में प्रस्ताव संख्या 1, 2, 6, 7 पारित किया गया। जिसके अनुसार अल कायदा से संबंधित सभी आतंकवादी संगठनों एवं व्यक्तियों को प्रतिबंधित किया जाएगा।

② सितम्बर 2001 में अमेरिका पर आतंकी हमले के बाद सुरक्षा परिषद ने प्रस्ताव संख्या ~~1,3,73~~ 1373 पारित किया जिसमें आतंकवादी संगठनों को दी गई प्रत्येक सहायता को प्रतिबंधित किया गया है।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत का दृष्टिकोण :→

① भारत ने सुरक्षा परिषद् के समक्ष जैस-ए-मोहम्मद के प्रमुख मसूद अजहर को आतंकवादियों की सूची में शामिल करने का अनुरोध किया।

② सुरक्षा परिषद के 14 सदस्यों ने भारत के दृष्टिकोण का समर्थन किया, & जबकि चीन ने इस पर वीटो कर दिया। इसलिए भारत का प्रयास विफल हो गया। जिससे यह प्रतीत होता है कि आतंकवाद के संबंध में चीन पाकिस्तान का विरोध नहीं करेगा जबकि भारत के विरुद्ध आतंकवाद पाकिस्तान से ही प्रायोजित है।

सहयोग की संभावना:-

① अफ्गानिस्तान में बढ़ता आतंकवाद भारत के कश्मीर तथा चीन के शिंकियांग क्षेत्र को प्रभावित करता है।

② आतंकवाद के ~~विशेष~~ विरुद्ध भारत और चीन दोनों के द्वारा "हैण्ड-इन-हैण्ड" संयुक्त सैनिक अभ्यास का आयोजन भी किया गया।

③ वर्ष 2016 में भारत के गृहमंत्री की चीन यात्रा के दौरान आतंकवाद से संबंधित आसूचना के लेन-देन के मुद्दे पर भी समझौता हुआ।

~~भारत और चीन के बीच समुद्री सिल्क रूट की परियोजना~~

समुद्री सिल्क रूट की परियोजना (maritime Silk Rute)
(One-Road-one Belt)

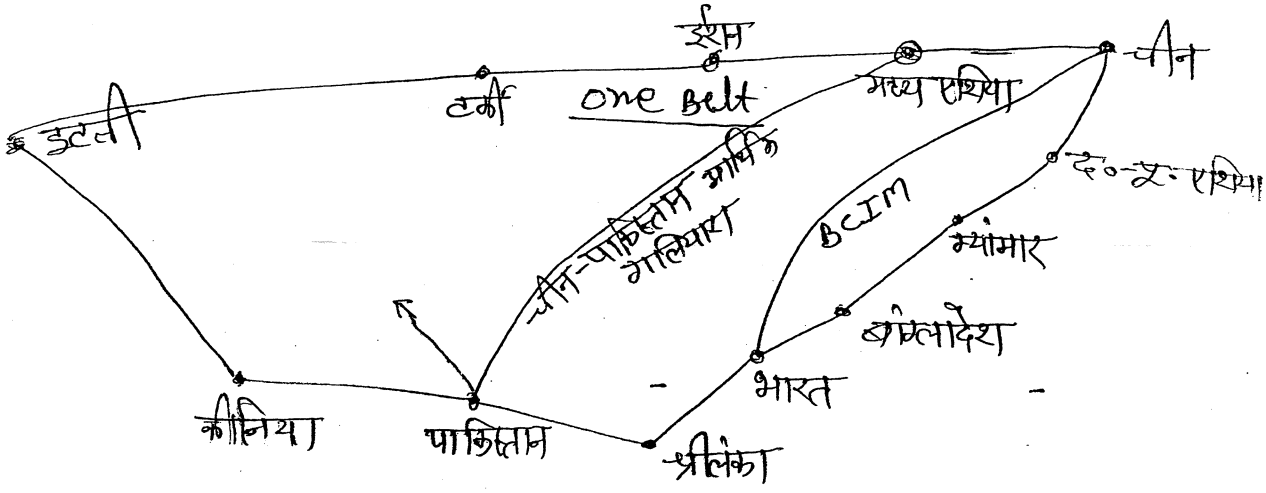

one Road

(M) 9268098169
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

चीन का उद्देश्य :→

① चीन सिल्क रूट के माध्यम से अपने सॉफ्ट पावर का विस्तार कर रहा है और समुद्री सिल्क रूट के विकास के लिए चीन द्वारा "एशियाई आधारभूत संरचना निवेश बैंक (AI तथा ब्रिक्स विकास बैंक या नवीन विकास बैंक से सहायता ली जाएगी। (न्यू डेवलपमेंट बैंक)

② चीन के द्वारा दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों, मध्य एशिया और अफ्रीका के बड़े बाजारों को नियंत्रित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

③ वर्तमान में पहली बार चीन की आर्थिक विकास दर 10% से नीचे आ गया है और चीन के द्वारा आर्थिक विकास को बनाये रखने के लिए अन्य देशों में निवेश की योजना बनाई गई है।

④ चीन के द्वारा क्षेत्रीय समग्र आर्थिक सहभागिता के विचार का भी प्रस्ताव किया गया है जिसमें दक्षिणी-पूर्वी एशियाई क्षेत्र के 10 देश, चीन, जापान, द० कोरिया, भारत, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड को शामिल किया गया है।

⑤ समुद्री सिल्क रूट का उद्देश्य केवल आर्थिक नहीं है बल्कि इसका अत्यंत सामरिक महत्व भी है। जिसके द्वारा चीन दक्षिणी चीन सागर एवं हिन्द महासागर में अपनी सामरिक उपस्थिति और प्रभावशाली बनाएगा और पाकिस्तान के ग्वादर, म्यांमार के कोको द्वीप पर चीन सैनिक अड्डे का भी विकास कर रहा है।

⑥ चीन के द्वारा समुद्री शक्ति का विस्तार करके अमेरिकी प्रभुत्व को सीधे चुनौती दी जा रही है।

भारत और समुद्री सिल्क रूट

① परोक्ष रूप में भारत समुद्री सिल्क परियोजना का भाग बन चुका है।

② ब्रिक्स विकास बैंक में भारत शामिल है तथा एशियाई आधारभूत संरचना निवेश बैंक का भी भारत सदस्य है।

③ चीन ने प्रस्तावित सिल्क रूट में कोलकाता पत्तन को भी शामिल किया गया है।

④ परंतु चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा भारत अपने हितों के प्रतिकूल मानता है।

(M) 92680981.9
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. ... All Subject
(IAS/PCS) All ... vailable
701, Shop ...
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009

भारत द्वारा अपनाये गए उपाय

1. स्पाइस रूट या मौसम प्रोजेक्ट

① भारत के संस्कृति मंत्रालय के द्वारा भारत के परम्परागत व्यापारिक और सांस्कृतिक प्रभावों को पुनर्जीवित करने के लिए मौसम प्रोजेक्ट की पहल की गई।

② इस परियोजना के द्वारा दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देश, प० एशियाई देश तथा अफ्रीका के साथ व्यापारिक संबंधों को प्रगाढ़ करने पर बल है।

③ भारत के द्वारा चाबाहार पोर्ट के विकास के लिए ईरान ईरान के साथ समझौता किया गया और भारत, ईरान एवं रूस के बीच उत्तरी-दक्षिणी कोरीडोर के निर्माण का भी प्रस्ताव किया है।

BCIM (बांग्लादेश, चाइना, इंडिया, म्यांमार)

① चारों देशों के बीच आर्थिक कारीडोर के निर्माण का समझौता किया गया है जिसमें राजमार्ग, पाइपलाइन (तेल+गैस) तथा राजमार्ग के आसपास औद्योगिक क्षेत्रों का भी विकास किया जाएगा।

② BCIM कुनमिंग से कोलकाता के बीच में होगा और यह आर्थिक गलियारा भारत-चीन संबंधों में सकारात्मक बदलाव का संकेत है जिसके अनुसार दोनों के बीच सहयोग समूचे क्षेत्र के विकास में सहायक है।

इससे चीन को होने वाले लाभ:-

① चीन के पिछड़े प्रांत युनान को दक्षिण एशियाई देशों से जोड़ा जाएगा क्योंकि युनान्य भूमि आबद्ध है।

② चीन का निवेश बांग्लादेश और म्यांमार में बढ़ेगा, जो पहले से ही चीन के बड़े व्यापारिक भागीदार हैं।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No.
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9

भारत को फायदा

① भारत के पूर्वोत्तर राज्यों का विकास सरकार का मूल उद्देश्य है और यह गलियारा असम, मणिपुर होकर जाएगा; इसलिए पूर्वोत्तर राज्यों के विकास में सहायक होगा।

② भारत और चीन के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ने से दोनों के बीच विद्यमान अविश्वास भी कम होगा।

निष्कर्ष :- आर्थिक रूप में चीन को अवसर के रूप में देखा जा सकता है। इसलिए चीन का विकास एशिया के विकास में सहायक हो सकता है परन्तु सामरिक रूप में दोनों एक-दूसरे को प्रतिस्पर्धी मानते हैं और दोनों में गहरा अविश्वास है।

→ Containment (सामरिक रूप में)
परिरोधन की नीति

→ Engagement (आर्थिक रूप में)
संबंध बेहतर करने की नीति

	1985	2016
अमेरिका	45%	22%
चीन	1%	18%

~~विश्व अर्थव्यवस्था~~
पर नियंत्रण

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)	ब्रिक्स विकास बैंक	AIIB एशियाई आधारभूत संरचना निवेश बैंक
① भुगतान संतुलन के संकट से निपटने के लिए सहायता	① आधारभूत संरचना और सतत् विकास के लिए आर्थिक सहायता	① चीन केन्द्रित बैंक है।
② सहायता में शर्त	② सहायता में शर्त नहीं	② इसमें चीन का आर्थिक योगदान सबसे ज्यादा है (21-22%)
③ मतदान, आर्थिक योगदान के अनुपात में	③ मतदान में सभी सदस्यों का महत्व बराबर	③ भारत का योगदान दूसरे नं. पर है लेकिन चीन का 1/3 है।
④ IMF के निर्णय पर नियंत्रण → विश्व के सभी अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस इटली, ब्रिटेन, कनाडा, जापान	④ निर्णय निर्माण में भी सभी सदस्यों के महत्व बराबर है।	④ आधारभूत संरचना के विकास के लिए सहायता विशेषरूप से समग्र विकास के लिए।
	⑤ विकासशील देशों का बैंक है।	⑤ इस बैंक के द्वारा समूचे एशिया में चीन का निर्णायक प्रभाव बढ़ेगा और एशियाई विकास बैंक जिस पर जापान का आधिपत्य है उसके बजाय एशियाई आधारभूत संरचना निवेश बैंक का महत्व बढ़ेगा।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

Que :- भारत एवं चीन के बीच सहयोग के प्रभावी मुद्दे विद्यमान है इसके बावजूद दोनों के बीच गंभीरतम विवाद भी बना हुआ है। टिप्पणी कीजिए।

उत्तर :-

21वीं सदी चीन की सदी मानी जा रही है तथा भारत एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में लगातार उभर रहा है

सहयोग के बिन्दु

① भारत और चीन वर्तमान विश्व अर्थव्यवस्था के विकास के इंजन बन चुके हैं और दोनों के बीच द्विपक्षीय व्यापार, निवेश, ब्रिक्स विकास बैंक, एशियाई आधारभूत संरचना निवेश बैंक (AIIB), BCIM सहयोग है।

विवाद के बिन्दु :→ भारत के पक्ष

भारत का पक्ष

① सीमा विवाद
② व्यापार घाटा
③ चीन-पाकिस्तान का गठजोड़

चीन का पक्ष

① तिब्बतियों के भारत में रहने से
② भारत, अमेरिका और जापान के बीच बढ़ता सामरिक संबंध

निष्कर्ष :- भारत-चीनी संबंध अत्यधिक जटिल किस्म के हैं जहाँ आर्थिक क्षेत्र में दोनों के बीच सहयोग बना हुआ है परन्तु सामरिक क्षेत्र में अविश्वास एवं प्रतिस्पर्धा निरंतर कायम है।

Que :- आतंकवाद समूचे विश्व की सुरक्षा के लिए एक साझा खतरा है। इसके बावजूद आतंकवाद के मुद्दे पर भारत और चीन के दृष्टिकोण में विद्यमान असहमतियों को उजागर कीजिए।

Que :- भारत और चीन के बीच ब्रह्मपुत्र नदी जल विवाद को स्पष्ट कीजिए। इस संबंध में भारत का चीन के प्रति दृष्टिकोण भारत के छोटे पड़ोसी देशों के प्रति दृष्टिकोण से कैसे अलग होना चाहिए। उदाहरण सहित बताइये।

उत्तर :- ① ब्रह्मपुत्र नदी, जिसे चीन में यारलुंग सांगपो के नाम से जाना जाता है, इस पर चीन के द्वारा बांध बनाया जा रहा है।

② चीन के अनुसार यह बांध बिजली उत्पादन के लिए है (Non of consumption of use of water के लिए) इससे भारत के हित प्रभावित नहीं होंगे।

③ चीन के द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी पर बनाये जा रहे बांध से भारत पर चीन अतिरिक्त दबाव का प्रयोग करता है।

④ चीन, भारत का बड़ा पड़ोसी देश है इसलिए उसके साथ बांग्लादेश के जैसा व्यवहार संभव नहीं है।

⑤ छोटे पड़ोसी देशों को भारत एक तरफा छूट देने की नीति अपनाता है जो चीन के लिए उपलब्ध नहीं हो सकती।

⑥ दोनों देशों के बीच जल विवाद के मुद्दे का द्विपक्षीय और शांतिपूर्ण रूप में समाधान होना चाहिए।

चीन - पाकिस्तान के संबंध और उसका भारत पर प्रभाव :→

1. चीन - पाकिस्तान के बीच के संबंध को व्यक्त करते हुए पाकिस्तानी राष्ट्रपति का कहना है कि "ये संबंध हिमालय से ऊँचे तथा समुद्र से गहरे हैं।"

2. चीन और पाकिस्तान के बीच अत्यधिक सामरिक संबंध विद्यमान हैं और चीन पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम के विकास में सहायता देता है तथा अत्यधिक संवेदनशील परमाणु पनडुब्बी भी प्रदान करता है।

3. पाकिस्तान के हथियारों के कुल आयात का 58% भाग चीन से आता है।

4. चीन के द्वारा गिलगित बाल्टिस्तान में जिस आर्थिक गलियारे का निर्माण किया जा रहा है उस पर वह भारत का भूभाग है या उस पर भारत का दावा है।

5. चीन जम्मू कश्मीर के निवासियों को स्टेपल वीज़ा प्रदान करता है जिसका अभिप्राय है, चीन कश्मीर को विवादास्पद क्षेत्र मानता है। इसलिए चीन का दृष्टिकोण पाकिस्तान के समान है।

6. चीन के द्वारा आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान का समर्थन किया जाता है तथा परमाणु आपूर्ति करता समूह (NSG) के मुद्दे पर भी चीन पाकिस्तान का समर्थक है।

निष्कर्ष:- चीन एवं पाकिस्तान का गठजोड़ भारत की सुरक्षा के लि गंभीर खतरा पैदा करता है। इसलिए भारत अपनी सामर्थ शक्ति के विस्तार पर लगातार बल दे रहा है परंतु चीन के साथ संबंधों को मधुर बनाये जाने पर भी समानांतर बल दिया जा रहा है।

भारत - अफगानिस्तान संबंध

1. 1947 - 1978 के बीच भारत और अफगानिस्तान के बीच संबंध मित्रतापूर्ण थे।

2. 1979 के बाद से समस्याएँ

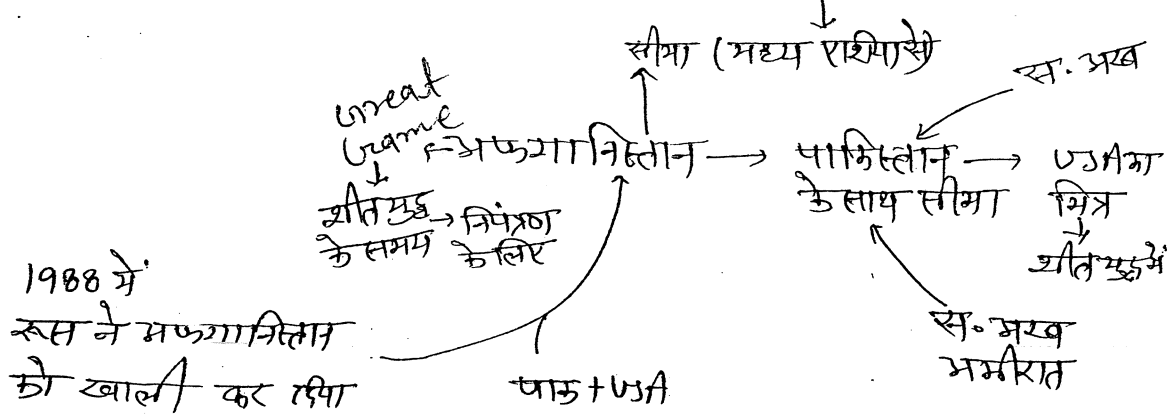

1996 → अफगानिस्तान में तालीबान का शासन आ गया

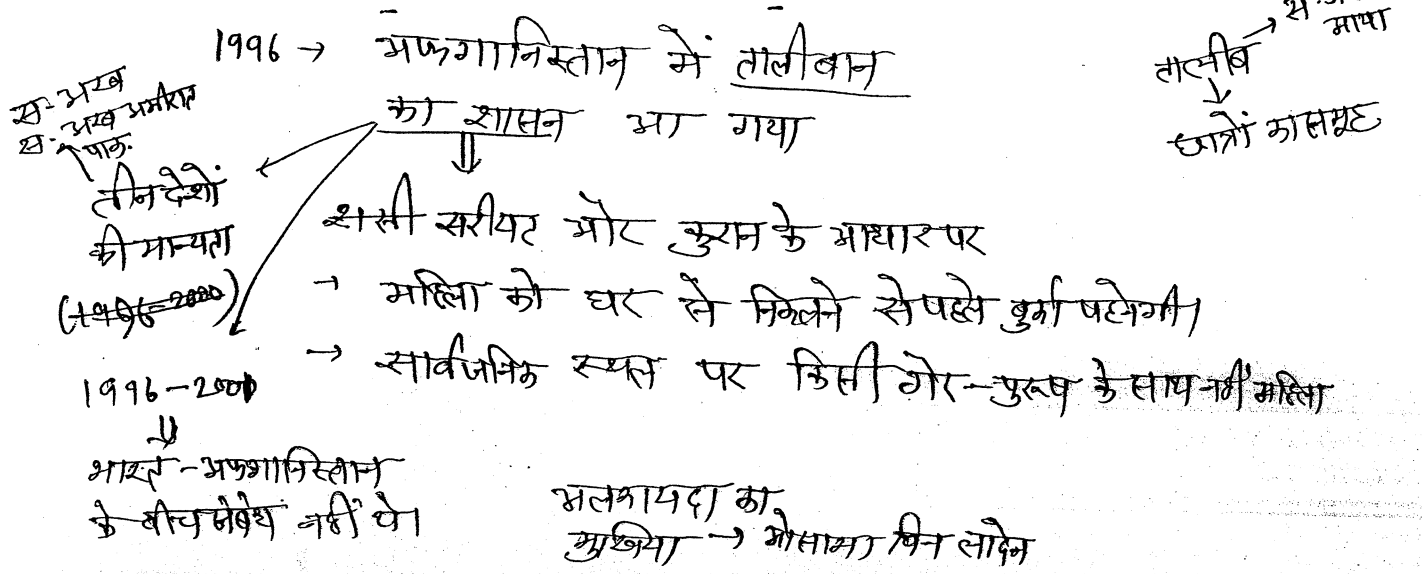

अफगानिस्तान में भारत की भूमिका :→

Que :- भारत की अफगानिस्तान में आधारभूत संरचना के विकास एवं क्षमता निर्माण में भूमिका स्पष्ट कीजिए।

Ans :- ①. 2001 से लेकर वर्तमान तक भारत, अफगानिस्तान के क्षमता निर्माण कार्यक्रम में शामिल है। जिसके अंतर्गत अफगानी नागरिकों के कौशल विकास में सहायता दी जा रही है।

② इसके अंतर्गत अफगानी नागरिकों को शिक्षा, स्वास्थ्य की सुविधा, व्यावसायिक शिक्षा, कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

③ अफगानी छात्रों के भारत में अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है।

④ क्षमता निर्माण कार्यक्रम के लिए भारत अफगानिस्तान को आर्थिक सहायता (Line of Credit) भी दे रहा है।

soft loan interest - 1.75%

⑤ भारत, अफगानिस्तान को आर्थिक सहायता देने वाला विश्व का 5वाँ सबसे बड़ा देश है।

⑥ इसके द्वारा भारत अपने soft Power का विकास कर रहा है।

आधारभूत संरचना का विकास :-

① अफगानिस्तान में भारत के द्वारा देलराम - जारांग राजमार्ग का निर्माण किया गया है जिसके द्वारा अफगानिस्तान, ईरान के बीच सड़क सम्पर्क स्थापित किया गया है। क्योंकि अफगानिस्तान एक भूमि-आबद्ध देश है।

② भारत - अफगानिस्तान, ईरान के बीच त्रिपक्षीय समझौते के द्वारा चाबहार पत्तन के विकास का कार्य भारत कर रहा है।

③ भारत के द्वारा सलमा बांध का निर्माण किया गया है जिसके द्वारा ~~अफ~~ काबुल के लिए बिजली आपूर्ति की जाती है।

④ भारत ने अफगानिस्तान के संसद भवन का भी निर्माण किया है।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

2001 के बाद अफगानिस्तान

① लोकतांत्रिक सरकार का गठन

② चार प्रकार के भाषायी समूहों में विभाजित (अफगानी)

(a) पश्तून → 40% → पाकिस्तान के समर्थक
(b) उजबेक
(c) ताजिक
(d) हजारा

③ इसलिए अफ्गानिस्तान की इस सामाजिक विविधता के कारण वहाँ राष्ट्रीय एकता की सरकार का निर्माण किया गया। जिसके अंतर्गत अफ्गानिस्तान के सभी समूहों को सरकार में प्रतिनिधित्व दिया गया है।

④ सामाजिक विविधता को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रपति अशरफ गनी के अलावा अब्दुल्ला-अब्दुल्ला को सरकार का मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया।

⑤ राष्ट्रीय एकता की इस सरकार में अभी-भी मंत्रालयों के विभाजन के मुद्दे पर विभिन्न समूहों में मतभेद बने हुए हैं। इसलिए अफ्गानिस्तान में शासन के स्थायित्व की गारंटी अभी भी नहीं है।

② 2001 में अमेरिका ने NATO की सेना की तैनाती की। जिसे International security Assistance force (ISAF) का भी नाम दिया गया।

⇓

उद्देश्य →
- अलकायदा की समाप्ति
- आतंकवाद की समाप्ति
- अफ्गानिस्तान की अपनी पुलिस एवं सेना का विकास किया जाए।

* वर्तमान में (2016) अंतर्राष्ट्रीय सेनाओं ने अफ्गानिस्तान छोड़ दिया है था (अमेरिकी सेनाओं ने अफ्गानिस्तान छोड़ दिया है।) और अमेरिका के केवल 9000 सैनिक अफ्गानी सेनाओं को प्रशिक्षण देने के लिए अफ्गानिस्तान में तैनात हैं।

* अफ्गानिस्तान की सुरक्षा व्यवस्था लगातार संकटग्रस्त बनी हुई है।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Course Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

③ आर्थिक –

① अफ्गानिस्तान के पुनर्निर्माण के लिए अमेरिका, जर्मनी, जापान जैसे देशों के द्वारा आर्थिक सहायता दी जा रही है।

② अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों के द्वारा और देशों के द्वारा मिलने वा आर्थिक सहायता अफ्गानिस्तान के विकास के लिए पर्याप्त नहीं है। इसलिए अफ्गानिस्तान के निवासी अभी भी शासन से अपने-आप को अलग महसूस करते हैं।

तालिबान का पुनः प्रभावी उभार

① अफ्गानिस्तान में विद्यमान संकट राजनीतिक अस्थायित्व तथा सुरक्षा के बेहतर प्रबंध के अभाव के कारण तालिबानी पुनः शक्तिशाली बन रहे हैं।

② तालिबानी वर्तमान अफ्गानिस्तान की सरकार को अमेरिका के हाथों की कठपुतली मानते मानते हैं।

③ उनके अनुसार अफ्गानिस्तान में वर्तमान लोकतांत्रिक शासन अफ्गानिस्तान के ऊपर थोपा गया है जिसे बदलकर इस्लामी शासन की स्थापना होनी चाहिए।

इस्लामी क्रांति → 1979 (ईरान में)

(4) इनके अनुसार अफगानिस्तान में अमेरिकी सैनिकों की तैनाती को पूर्णतः समाप्त किया जाए।

~~अफगानिस्तान~~

महाशक्तियों और पड़ोसी देशों का अफगानिस्तान के संबंध में दृष्टिकोण :-

पाकिस्तान का दृष्टिकोण :-

(i) पाकिस्तान अफगानिस्तान में सदैव अपना प्रभुत्व बनाये रखना चाहता है।

(ii) पाकिस्तान के द्वारा अफगानिस्तान में तालिबानियों का समर्थन किया जाता है।

(iii) पाकिस्तान अफगानिस्तान में भारत की उपस्थिति का कट्टर विरोधी है।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Course Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

ईरान का दृष्टिकोण :-

(i) ईरान तालिबानी शासन एवं विचारधारा का समर्थक नहीं है।

(ii) परन्तु ईरान अफगानिस्तान में अमेरिका के बढ़ते प्रभाव के भी विरुद्ध है।

~~(iii)~~ मध्य एशियाई देशों का दृष्टिकोण :-

(i) मध्य एशियाई देश तालिबान के समर्थक नहीं हैं बल्कि तालिबान के बढ़ते प्रभाव से मध्य एशियाई देश अत्यधिक चिंतित हैं।

(11) उज्बेकिस्तान जैसे देश में इस्लामी आतंकी संगठनों का प्रभाव बढ़ रहा है।

चीन का दृष्टिकोण :→

(1) अशरफ गनी सरकार के आने के बाद चीन के द्वारा अफगानिस्तान में सक्रियता बढ़ा दी गई है और चीन-पाकिस्तान ने मिलकर तालिबानियों के साथ शांति बहाली की प्रक्रिया आरंभ की।

(11) चीन तालिबान का समर्थक नहीं है। क्योंकि चीन के ~~शिंगकियांग~~ प्रांत में उग्रवाद की समस्या बनी हुई है।

(111) अफगानिस्तान में चीन पाकिस्तान का प्रबल समर्थक है।

रूस का दृष्टिकोण :→

रूस का चेचेन्या आतंकवाद से पीड़ित है। इसलिए रूस भी तालिबानियों का समर्थक नहीं है। परन्तु रूस, अमेरिका की अफगानिस्तान में उपस्थिति का भ समर्थक नहीं है।

Heart of Asia

(1) अफगानिस्तान में शांति और स्थायित्व के लिए रूस के द्वारा यह प्रक्रिया शुरू की गई। जिसे इस्तांबुल (तुर्की प्रक्रिया के नाम से भी जानते हैं। जिसमें रूस के

अतिरिक्त एशियाई देश शामिल हैं। जिसमें भारत, पाकिस्तान, ईरान, मध्य एशियाई देश और चीन प्रमुख हैं।

(ii) वर्ष 2011 से चलने वाली इस शांति प्रक्रिया का सकारात्मक परिणाम नहीं आ पा रहा है। क्योंकि सभी राज्यों के हित अलग-अलग हैं। जहाँ सहयोग के बजाए हितों का टकराव हो रहा है।

(iii) Heart of Asia सम्मेलन के द्वारा इस क्षेत्र में शांति एवं स्थायित्व के लिए एक महत्वपूर्ण पहल की गई है। जिसके अंतर्गत तुर्कमेनिस्तान और भारत को गैस पाइपलाइन से जोड़ा जाएगा, जो अफ्गानिस्तान, पाकिस्तान होकर आएगी।

भारत के अफ्गानिस्तान में हित :-

(i) भारत एक महाशक्ति है इसलिए भारत के हितों का विस्तार वैश्विक है।

(ii) अफ्गानिस्तान, भारत का महत्वपूर्ण पड़ोसी है। जिसमें भारत के द्वारा आधारभूत संरचना तथा अन्य निजी कंपनियों ने अफ्गानिस्तान में बड़ा निवेश किया है।

(iii) अफ्गानिस्तान की भौगोलिक अवस्थिति अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिसकी सीमा पाकिस्तान, ईरान, मध्य एशियाई देश और चीन के साथ मिलती है। और पाकिस्तान

के अंत बलूचिस्तान की सीमा अफगानिस्तान से मिलती है। इसलिए अफगानिस्तान में भारत की उपस्थिति से पाकिस्तान पर भी प्रभाव पड़ता है

(iv) भारत और अफगानिस्तान के बीच अधिकारिक रूप में सामरिक सहयोग का समझौता हुआ है।

(v) वर्तमान में भारत के द्वारा अफगानी सेनाओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है तथा भारत ने अफगानिस्तान को MI 35 हेलिकॉप्टर भी दिये हैं।

(vi) अफगानिस्तान मध्य एशियाई देशों का प्रवेश द्वार है और वर्तमान में "Connect Central Asia" नीति के द्वारा भारत मध्य एशियाई देशों के साथ आर्थिक एवं सामरिक संबंध सुदृढ़ कर रहा है।

(vii) अफगानिस्तान में लोकतांत्रिक सरकार एवं स्थायित्व भारत के हितों के लिए अत्यधिक सकारात्मक है।

अफगानिस्तान में अपने हितों को बनाये रखने के लिए उपाय :→

(i) अफगानिस्तान में भारत को सेना भेजने के विकल्प पर विचार नहीं करना चाहिए।

(ii) अफगानिस्तान में क्षमता निर्माण कार्यक्रम एवं आधारभूत संरचना के विकास में ज्यादा से ज्यादा योगदान।

(iii) अफगानी सेनाओं को प्रशिक्षण जारी रखना एवं अफगानिस्तान को सैनिक सहायता देना।

(iv) अफगानिस्तान के सभी नृजातीय समूहों के साथ बेहतर संबंध का निर्माण का प्रयोग।

(v) भारत के द्वारा रूस ईरान मध्य एशियाई जैसे देशों के साथ सहयोग करके इस क्षेत्र में शांति एवं स्थायित्व बनाने में योगदान करना चाहिए।

Que. अफगानिस्तान में भारत के किस प्रकार के हित संलग्न हैं? इसे संरक्षित करने के लिए हमें किन उपायों को अपनाना चाहिए?

Que अफगानिस्तान में भारत की उपस्थिति भारत के महाशक्ति के दावे का परीक्षा स्थल है।

Que भारत की अफगानिस्तान के प्रति नीति विकासशील देशों के प्रति एकता के विचार से प्रभावित है अथवा राष्ट्रीय हितों से प्रेरित है। टिप्पणी कीजिए।

Que वर्तमान में अफगानिस्तान के अस्थायित्व के मूल कारणों को उजागर कीजिए और भारत के Soft Power की नीति अफगानिस्तान में हितों को बनाये रखने के लिए कहाँ तक सहायक है।

Que: Heart of Asia पहल के मूल उद्देश्यों को उजागर कीजिए और इसके विफलता के कारणों को भी स्पष्ट कीजिए।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Computer Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

Q.2 महाशक्ति के दावे की परीक्षा :→

(i) भारत के महाशक्ति होने के कारण उसके हितों का क्षेत्रीय विस्तार है।

(ii) इसलिए अफगानिस्तान में भारत के सुरक्षा हित हैं।

(iii) अफगानिस्तान में भारत के क्षेत्रीय हित (सेन्ट्रल एशिया जाने के लिए) ~~हित~~ हैं।

(iv) अफगानिस्तान में हमारे निवेश की सुरक्षा होनी चाहिए

(v) महाशक्ति के कारण भी भारत अफगानी सेनाओं को प्रशिक्षण दे रहा है।

(vi) अफगानिस्तान के पड़ोसियों में चीन और भारत निर्विवाद रूप में महाशक्ति हैं। इसलिए दोनों का अफगानिस्तान में प्रभाव भी स्वाभाविक है।

उग्रवाद → सरकार के विरुद्ध

आतंकवाद → आम जनता की हत्या व भय

माओवाद → समाज में समानता के लिए हिंसक संघर्ष → क्रिमिनो...

नक्सलवाद → माओवाद का भारतीय संस्करण

पश्चिम एशिया

भारत - ईरान संबंध

भारत - ईरान (1947 - 78)

- संबंध अच्छे नहीं
- भारत → सोवियत संघ से दोस्ती
- ईरान → अमेरिका का दोस्त
- मिस्र ने अरब राष्ट्रवाद की बात की। जिसे भारत ने समर्थन किया।
  - अरबी भाषा बोलने वाले सभी देशों के बीच संबंधों को सुदृढ़ करना।
- खराब संबंधों के बावजूद भारत ने ईरान से तेल का आयात किया।

1979 के बाद → ईरान में इस्लामी क्रांति हुई।

(i) तेल कंपनियों पर राज्य का नियंत्रण / राष्ट्रीयकरण

(ii) इस्लामी विश्व का नेता।

1980 - 88 के बीच → ईरान - इराक के बीच 8 साल तक संघर्ष

ईरान ↓ 90% शिया जनसंख्या

इराक → शिया 50%, सुन्नी → 45%

(i) अमेरिका का ईरान पर बढ़ता दबाव।

(ii) ईरान की खराब आर्थिक स्थिति।

(iii) 1991 → भारत का बड़ा बाजार (उदारीकरण)

(iv) 1996 → अफगानिस्तान में तालिबान आया और

इसका विरोध भारत और ईरान दोनों के द्वारा किया गया।

भारत का ईरान में हित :-

(i) भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकता का 60% भाग पश्चिमी एशियाई देशों से आयातित करता है। जिसमें सऊदी अरब और ईरान के द्वारा सर्वाधिक तेल और गैस का आयात किया जाता है।

(ii) ईरान पश्चिमी एशिया के सबसे बड़े देशों में एक है। (आबादी 8 करोड़) इसलिए भारत के फार्मास्यूटिकल सॉफ्टवेयर और ऑटोमोबाइल के निर्यात के बड़े बाजार के रूप भी उभर रहा है।

(iii) ईरान की अवस्थिति फारस की खाड़ी में अत्यधिक महत्वपूर्ण है और ईरान होर्मुज संधि के निकट स्थित है। जो विश्व में तेल के निर्यात का सर्वाधिक महत्वपूर्ण मार्ग है।

(iv) पाकिस्तान के द्वारा भारत को अफगानिस्तान में प्रवेश के लिए पारगमन मार्ग उपलब्ध नहीं कराया जाता है। इसलिए अफगानिस्तान में प्रवेश के लिए भारत ईरान पर निर्भर है और ईरान से ही होकर मध्य एशियाई देशों के लिए का प्रवेश द्वार है।

(v) पाकिस्तान के द्वारा इस्लामी एकता को बढ़ावा देकर उस क्षेत्र में कश्मीर के लिए समर्थन प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। जिसे भारत ईरान के माध्यम से नियंत्रित कर सकता है।

चाबहार पत्तन

① भारत के द्वारा पहली बार किसी विदेशी राज्य में आधारभूत संरचना के विकास के लिए 500 million dollar पूंजी के निवेश का निर्णय किया है।

② इसके पहले हैम्बनटोटा पत्तन के विकास के लिए भारत ने असमर्थता व्यक्त की थी। परन्तु चाबहार पत्तन के विकास के द्वारा भारत अपने soft Power के विस्तार का प्रयत्न कर रहा है।

③ पत्तन के विकास के अलावा इस क्षेत्र में ~~अन्य~~ अनन्य आर्थिक क्षेत्र (Exclusive Economic zone) के विकास के लिए भी निवेश का निर्णय किया गया है।

भू राजनीतिक महत्व :-

① चीन के द्वारा ग्वादर पत्तन का विकास किया गया है और ग्वादर पत्तन से होकर चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा भी बनाया जा रहा है। जो ग्वादर को सीधे काशगर से जोड़ेगा।

② चाबहार पत्तन के द्वारा भारत की मध्य एशियाई देशों के साथ कनेक्टिविटी बेहतर हो जाएगी और वर्तमान में अफगानिस्तान में प्रवेश करने में और भी सुविधा होगी।

भू-आर्थिक महत्व

① भारत के ऊर्जा के 60% से ज्यादा भाग का आयात पश्चिमी एशियाई देशों से होता है। इसलिए भारत की ऊर्जा सुरक्षा सुदृढ़ होगी।

② ईरान से रूस के बीच भारत ने उत्तर-दक्षिण गलियारे के निर्माण का प्रस्ताव किया है। जिसके अंतर्गत ईरान और मास्को के बीच रेल संपर्क स्थापित करने की योजना है।

③ चीन के द्वारा प्रस्तावित समुद्री सिल्क रूट का यह एक बेहतर जवाब है। क्योंकि समुद्री सिल्क रूट के माध्यम से चीन हिन्द महासागर में और समुद्री क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है।

सामरिक महत्व :→

① अफगानिस्तान, ईरान और भारत के त्रिपक्षीय समझौते के द्वारा इस पत्तन के विकास का समझौता किया गया है। इसलिए तीनों देशों के बीच सामरिक संबंध भी सुदृढ़ हो रहे हैं।

② यह भी अनुमान व्यक्त किया जा रहा है कि चाबहार पत्तन के विकास के लिए जापान भी दिलचस्पी दिखा रहा है क्योंकि भारत में आधारभूत संरचनाओं के विकास के लिए जापान पहले से ही बड़ी आर्थिक सहायता दे रहा है।

समस्याएँ :-

① सामान्यतः आधारभूत संरचनाओं को पूर्ण करने में ज्यादा समय लगता है और परियोजनाएँ समय पर पूर्ण नहीं हो पाती।

② ईरान चाबहार पत्तन के विकास के लिए चीन जैसे देशों को भी आमंत्रित कर सकता है।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Computer Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत - फिलीस्तीन

① फिलीस्तीन पश्चिमी किनारे और गाजा पट्टी से मिलकर बनता है।

(i) 1948 से पहले यह सम्पूर्ण भूभाग (इजराइल) फिलीस्तीन कहलाता था परन्तु 1948 में फिलीस्तीन नाम राज्य का विभाजन दो राज्यों में कर दिया गया - ⓐ इजराइल ⓑ फिलीस्तीन।

(ii) अरब राज्यों ने इजराइल के विनाश का नारा दिया और अरब राज्यों ने इकट्ठा होकर इजराइल पर हमला कर दिया, लेकिन हार गये।

(iii) 1967 में फिर अरब राज्यों ने इजराइल पर हमला कर दिया। परिणामस्वरूप इजराइल ने फिलीस्तीन का विनाश कर दिया।

→ 1979 में मिस्र और इजराइल के बीच मित्रतापूर्ण संबंध की शुरुआत हुई और अरब राष्ट्रवाद की एकता का विचार टूट गया।

→ फिलीस्तीनियों के संघर्ष के लिए यासिर अराफात ने फिलीस्तीनी मुक्ति संगठन (PLO) का निर्माण किया। जिसका सबसे महत्वपूर्ण भाग अलफतह था जिसके नेता यासिर अराफात थे।

→ 1988:- पहली बार 1988 में U.N.O के द्वारा फिलीस्तीन समस्या के समाधान के लिए दो राष्ट्रों का विचार दिया गया। जिसका अभिप्राय है फिलीस्तीनियों के द्वारा इजराइल के विनाश का विचार छोड़ दिया गया और यह स्वीकार किया गया कि फिलीस्तीन और इजराइल दोनों साथ-साथ बने रह सकते हैं।

समस्या के समाधान में बाधा :-

→ इजराइल का मतिवादी दृष्टिकोण। क्योंकि इजराइल पश्चिमी किनारे से यहूदी बस्तियाँ हटाने के लिए तैयार नहीं हैं।

→ हमास का कट्टरपंथी दृष्टिकोण, जो द्विराष्ट्रवाद के विचार को मानने के लिए तैयार नहीं हैं।

समाधान :-

→ 1967 के भूभाग के आधार पर फिलीस्तीन का निर्माण जो पश्चिमी किनारे गाजा से मिलकर बनेगा और जिसकी राजधानी पूर्वी येरुशलम होगी।

→ पश्चिमी किनारे और गाजा के बीच राजनीतिक सहमति।

→ फिलीस्तीन के दोनों भू-भागों को जोड़ने के लिए इजराइल के द्वारा पारगमन मार्ग प्रदान करना।

भारत - इजराइल संबंध

⊕→ नेहरू के द्वारा फिलीस्तीन के साथ संबंध सुदृढ़ करने पर बल दिया गया। क्योंकि फिलीस्तीन का मुद्दा साम्राज्यवाद उपनिवेशवाद विरोध का उदाहरण बन गया था तथा भारत अरब देशों का भी समर्थन प्राप्त करना चाहता था। और भारत ने इजराइल के साथ कूटनीतिक संबंधों की स्थापना नहीं की।

इजराइल के साथ संबंध बनाने के कारण :→

→ 1991 में सोवियत संघ का विघटन हो गया और भारत हथियारों की आपूर्ति के लिए सोवियत संघ पर अत्यधिक निर्भर था। और भारत को रशिया के विकल्प की तलाश थी।

→ सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस और चीन ने भी इजराइल के साथ कूटनीतिक संबंध बहाल कर लिये।

→ अरब देशों में मिस्र और जॉर्डन ने भी इजराइल के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित कर लिये।

→ स्वयं फिलीस्तीनी मुक्ति संगठन ने भी इजराइल के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया।

→ 1992 में भारत ने इजराइल के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित कर लिये, परन्तु फिलीस्तीन के साथ भी समानांतर संबंधों को बनाया रखा गया,

<u>संबंध विस्तार</u> :

→ वर्तमान में रूस और अमेरिका के बाद सैनिक सामग्री की आपूर्ति करने वाला इजराइल तीसरा सबसे बड़ा देश बन गया है।

<u>AWACS</u> :- Airborne warning and Control syste

→ इजराइल के द्वारा भारत को अत्यधिक संवेदनशील हथियार दिये जा रहे हैं, जिसमें AWACS, UAV(मानव रहित विमान) शामिल हैं। इससे भी बढ़कर दोनों के बीच क्रेता-विक्रेता का संबंध नहीं है, ~~बराक~~ बल्कि बराक ~~के~~ प्रक्षेपास्त्र का साझा उत्पादन भी किया जा रहा है।

→ इजराइली हथियार चीन और पाकिस्तान को उपलब्ध नहीं होते, जिससे भारत को सामरिक बढ़त मिल जाती है।

→ वर्तमान में सीमापार आतंकवाद भारतीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है। और दोनों देशों के बीच आतंकवाद के विरुद्ध साझा प्रशिक्षण और आसूचना का लेनदेन भी

जा रहा है और भारतीय सुरक्षा बलों को इजराइल के द्वारा आतंकवादी अभियानों के विरुद्ध कार्यवाही के लिए प्रशिक्षण किया जा रहा है।

→ जम्मू-कश्मीर में सीमापार आतंकवाद और अवैध घुसपैठ को नियंत्रित करने के लिए इजराइल भारत को सहायता दे रहा है। सीमा

→ सीमा प्रबंध के क्षेत्र में भी इजराइल की सहायता ली जा रही है।

→ दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार, कृषि क्षेत्र में सहयोग तथा सांस्कृतिक सहयोग भी बढ़ाया जा रहा है।

✗ भारत-इजराइल के बीच संबंधों की जटिलता

→ इजराइल के साथ बेहद महत्वपूर्ण और मित्रतापूर्ण संबंध होने के बावजूद आजतक भारत के किसी भी प्रधानमंत्री के द्वारा इजराइल की यात्रा नहीं की गई है। जबकि वर्ष 2003 में इजराइल के प्रधानमंत्री ने भारत की यात्रा की है।

→ पश्चिम एशिया में इजराइल के अलावा सऊदी अरब, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात और अन्य अरब देशों के साथ भारत के मित्रतापूर्ण संबंध हैं परन्तु इन देशों के कूटनीतिक अत्याधिक संबंध इजराइल के साथ नहीं हैं।

→ भारत अभी भी फिलीस्तीनी राज्य का समर्थक है, इसलिए इजराइल के साथ खुले संबंधों से भारत परहेज करता रहा है।

→ इजराइल ईरान को आतंकवाद प्रायोजित करने वाला देश मानता है, जबकि भारत-ईरान के संबंध अत्यधिक मित्रतापूर्ण और मधुर हैं।

नई सरकार एवं भारत इजराइल संबंध

→ वर्ष 2016 में पहली बार किसी भारतीय राष्ट्रपति के द्वारा इजराइल की यात्रा की गई।

→ पहली बार भारतीय संसद के द्वारा इजराइल द्वारा गाजा पर किये गये हमले की आलोचना नहीं की गई।

→ पहली बार संयुक्त राष्ट्र संघ मानवाधिकार परिषद में मतदान के दौरान भारत ने इजराइल के विरुद्ध मत नहीं दिया, बल्कि भारत अनुपस्थिति रहा।

निष्कर्ष :- वर्तमान सरकार के द्वारा भारत-इजराइल के बीच संबंधों में गुणात्मक परिवर्तन नहीं किया गया है, बल्कि यह मात्रात्मक परिवर्तन ही है।

D. K. PHOTOSTAT
(M) 9268098159
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत और पश्चिम एशियाई देश

1947 - 1990 :→ → तेल, गैस का आयात
→ सरकार
→ फिलीस्तीन, इराक, लीबिया, सीरिया

वर्तमान में :- → तेल, गैस
→ 60 लाख भारतीय मूल के लोग → (निर्यात)
→ निजी कंपनियों की भागीदारी
↳ रिलायंस, इनफोसिस, ..
→ सामरिक एवं राजनीतिक संबंध
→ संयुक्त अरब अमीरात
→ सऊदी अरब
→ ईरान

→ वर्तमान में पश्चिम एशिया में भारत के मुख्य सहयोगी देशों में इजराइल, ईरान, सऊदी अरब है।

→ वर्तमान में भारत की विदेश नीति अत्यधिक गतिशील है। इसलिए ईरान और ~~सऊदी अरब~~ ~~और~~ सऊदी अरब के साथ मधुर संबंध बनाया गया है। जबकि दोनों एक-दूसरे के प्रबल विरोधी हैं। ईरान और इजराइल के बीच कोई ~~कूट~~नीतिक संबंध ~~भी~~ ही नहीं है जबकि भारत ने दोनों के साथ समानांतर संबंध का निर्माण किया है यह भारत की व्यावहारिक नीति है।

आइ एस आइ एस (ISIS)

उत्पत्ति :→

① महाशक्तियों का हित या इनके बीच संघर्ष।

(ii) क्षेत्रीय शक्ति संतुलन (ईरान - सउदी अरब)।

(iii) शिया और सुन्नी के बीच का संघर्ष (नृजातीय संघ

शिया ↓ ईरान, ईराक बहरीन

सुन्नी ↓ सऊदी अरब

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

कारण :

① 2003 में USA ने इराक पर हमला। → सद्दाम हुसैन पर कुर्दों को मारने का आरोप लगाया। (कुर्द - सिया मुसलमा एक भाषा भी)

(ii) सद्दाम हुसैन के सत्ता से हटने के बाद अमेरिका ने ईरान को अलग-थलग करने का प्रयास किया।

(iii) अमेरिका के द्वारा असद (सीरिया) सरकार के विरुद्ध विद्रोहियों को भड़काया गया, जिससे सीरिया में गृहयुद्ध शुरू हो गया।

(iv) अमेरिका के द्वारा ईरान और सीरिया को अलग-थलग करने के लिए सउदी अरब, ईजराइल, टर्की, स. अरब अमीरात ने अमेरिका का समर्थन किया।

(v) अमेरिका, सउदी अरब और UAE ने मिलकर सुन्नियों को लामबंद करने का प्रयत्न किया और शियाओं के विरुद्ध भावनाओं को भड़काया।

(vi) जिसके परिणाम स्वरूप पश्चिम एशिया में ISIS का निर्माण हो गया।

ISIS के उद्देश्य और विचारधारा →

(i) इनके द्वारा इराक और सीरिया में इस्लामी शासन की स्थापना का समर्थन किया गया है। जिसका अभिप्राय है कि इस्लामी राज्य का एक खलीफा होगा तथा कुरान और शरीयत के अनुसार इस राज्य में शासन किया जायेगा।

(ii) इनके अनुसार इनके विरोधी क्रुसेडर (इसाई) हैं। दूसरे वे जो इस्लाम में विश्वास न नहीं रखते।

(iii) ये नास्तिक और पंथनिरपेक्षतावादियों के भी विरोधी हैं।

प्रभाव: (i) ~~इनका प्रभाव~~ इराक और सीरिया अत्यधिक अस्थिर हो चुके हैं।

(ii) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शरणार्थियों का सबसे बड़ा संकट उत्पन्न हो गया और इराक एवं सीरिया से जाने वाले शरणार्थी पश्चिम एशियाई देशों और यूरोपीय देशों की ओर भाग रहे हैं।

(iii) फ्रांस और बेल्जियम पर होने वाले हमलों से यह प्रतीत होता है कि ये अपना वैश्विक विस्तार चाहते हैं। केवल इराक व सीरिया में इस्लामी शासन इनका उद्देश्य नहीं है।

ISIS के विरुद्ध संघर्ष :-

(i) ISIS के विरुद्ध अमेरिका के नेतृत्व में नाटो की सेनाएँ तैनात की गई हैं, परन्तु अमेरिका, ईरान और सीरिया को शक्तिशाली होते देखना नहीं चाहता।

(ii) रूस भी ISIS के विरुद्ध शामिल हो चुका है परन्तु रूस सीरिया के शासक असद को बनाये रखने का समर्थक है।

(iii) टर्की भी ISIS के विरुद्ध आ गया है परंतु उसकी चिंता कुर्दों को नियंत्रित करने की ज्यादा है।

(iv) सउदी अरब भी ISIS के विरुद्ध है परन्तु वह ईरान को भी कमजोर करना चाहता है।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

भारत पर इसका प्रभाव :→

(i) ISIS की कट्टरवादी इस्लामी विचारधारा के कारण भारत के पंथनिरपेक्ष लोकतांत्रिक विचारधारा के लिए एक वैचारिक चुनौती है।

(ii) लगभग 60 लाख भारतीय मूल के लोगों का निवास प्रवासी के रूप में पश्चिमी एशियाई देशों में है। और भारतीय मूल के नागरिक भी इन संगठनों में शामिल हो रहे हैं।

(iii) ISIS का बढ़ता प्रभाव भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती बन रहा है।

(iv) ISIS के कारण पश्चिम एशिया में, सीरिया में अस्थायित्व उत्पन्न हुआ है। जिससे भारतीय मूल के लोगों के रोजगार भी प्रभावित हुए हैं।

(v) भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का 60% भाग पश्चिमी एशियाई देशों से आयात करता है। इसलिए यहाँ होने वाला कोई भी अस्थायित्व भारत के लिए नकारात्मक बन जाता है।

(vi) पश्चिम एशिया में बढ़ते धार्मिक कट्टरवाद और नृजातीय संघर्ष से विदेश नीति के लिए सीधे चुनौती उत्पन्न होती है क्योंकि भारत के संबंध ईरान, सऊदी अरब और इज़राइल तीनों के साथ हैं।

Extended Neighbour → पश्चिमी एशिया
→ द.पू. एशिया

भारत - मिस्र - (नासिर और नेहरू से)

(i) भारत और मिस्र एक-दूसरे के परम्परागत और ऐतिहासिक सहयोगी हैं जिनके बीच वर्तमान द्विपक्षीय व्यापार लगभग 3 Billion Dollar है।

② मिश्र प० एशिया और उत्तरी अफ्रीका में स्थित देश है, जहाँ से स्वेज नहर भूमध्य सागर एवं लाल सागर को जोड़ती है इसलिए व्यापार के लिए इसका अत्यधिक महत्व है।

③ भारत और मिश्र दोनों ISIS के विरुद्ध है और मिश्र की वर्तमान सरकार धार्मिक कट्टरवाद के बिल्कुल विरुद्ध है। अतः दोनों के बीच आतंकवाद के बिन्दु विरुद्ध सहयोग हो रहा है।

④ मिश्र उन प्रमुख अरब देशों में है जिनके इजरायल के साथ भी हैं। इसलिए भारत-इजरायल के संबंध पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

⑤ वर्तमान में बेहतर आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को सामरिक संबंधों में भी परिवर्तित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

Que.1 भारत और इजराइल एक-दूसरे के प्राकृतिक मित्र हैं। टिप्पणी कीजिए।

Q.2 भारत-ईरान संबंधों का महत्व चाबहार पत्तन के विशेष संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

Q.3. भारत की लुक-वेस्ट नीति के प्रमुख उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए और इस संदर्भ में विद्यमान चुनौतियों का मूल्यांकन भी कीजिए।

Q.4. भारत-ईरान संबंधों का महत्व केवल आर्थिक और व्यापारिक ही नहीं बल्कि सामरिक भी है।

हितों का सामंजस्य
मतभेद की संभावना न हो

Partner (सहभागी)
- आर्थिक
- व्यापार

Ally (मित्र) / Natural Ally
- सामरिक/सुरक्षा के हित
- वैचारिक समानता
- आर्थिक मुद्दों पर सहयोग

Alliance
(सैनिक गठबंधन)
↓
NATO के सदस्य

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY

Q.1. Ans
① सामरिक सहयोग ② आतंकवाद पर सहयोग
③ सीमा प्रबन्ध ④ व्यापारिक / सांस्कृतिक

समस्या :- भारत का ईरान से संबंध है जबकि इजराइल ईरान का विरोधी है।
भारत का फिलीस्तीन से संबंध है जबकि इजराइल का फिलीस्तीन से विरोध है।

LOOK EAST POLICE — पूर्व की ओर देखो नीति

1948 → एशियाई संबंधों के लिए बैठक

1955 → बांडुंग सम्मेलन

1961 → गुटनिरपेक्ष में मलेशिया के राष्ट्रपति की महत्वपूर्ण भूमिका।

⇒ 1962 → भारत-चीन युद्ध

1962 → म्यांमार में सैनिक शासन → चीन के साथ निकट

1967 → Association of South East Asian Natio

- इंडोनेशिया
- मैलेशिया
- सिंगापुर
- थाइलैण्ड
- फिलीपींस → आसियान के संस्थापक देश थे।

ये सभी अमेरिकी समर्थक थे जबकि भारत अमेरिका का विरोधी था। म्यांमार चीन के साथ था इसलिए शामिल नहीं हुआ

↳ जो आसियान में शामिल नहीं हुये — विमतनाम, लाओस, कम्पूचिया (कंबोडिया)

⇒ चीन-अमेरिका के संबंध 1971 में मधुर हुये। जिससे चीन-आसियान के बीच मित्रता हुई।

⇒ ASEAN → चीन साम्यवादी

1971 — USA - चीन की मित्रता

ASEAN - चीन बेहतर

1971 — भारत-सोवियत संघ

South East Asia

वियतनाम – सोवियत संघ

कम्बोडिया
- → पोल पोट (शासक) (USA, चीन, ASEAN ने समर्थन किया)
- → हेंग सामरिन (USSR + वियतनाम + भारत) ने समर्थन किया।

Look East :-

पूर्व की ओर देखो नीति अपनाने के कारण :-

(i) 1991 में उदारीकरण अपनाने के बाद विदेश नीति में व्यापार निवेश को प्राथमिकता दी गई और आसियान तथा अन्य पूर्वी देश आर्थिक संवृद्धि के केन्द्र के रूप में उभर रहे थे।

(ii) सोवियत संघ के विघटन के दौरान भारत के निर्यात का सबसे बड़ा भाग सोवियत संघ के लिए जाता था इसलिए भारत को वैकल्पिक बाजार की आवश्यकता थी।

(iii) भारत के पूर्वोत्तर राज्यों का विकास।

(iv) ASEAN में चीन का बढ़ता प्रभाव।

Look East
- → व्यापारिक
- → सामरिक
- → पूर्वोत्तर राज्यों का विकास
- → चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकना
- → संस्थात्मक संबंध
- → Physical connectivity

व्यापारिक संबंध :→

→ पूर्व के राज्यों के साथ भारत का सबसे तीव्र गति से व्यापारिक संबंध बढ़ रहा है। दोनों के बीच द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा लगभग 40 Billion Doller है और सिंगापुर, द० कोरिया और आसियन और जापान के साथ भारत के मुक्त व्यापार के समझौते हो चुके हैं।

→ दोनों के बीच मुक्त व्यापार साझा लाभ का विषय है, क्योंकि आसियान देश हल्के विनिर्मित उद्योगों में अग्रणी है जबकि भारत की GDP का लगभग 60% सेवा क्षेत्र से आता है।

→ वर्तमान में यूरोप और अमेरिका में आर्थिक मंदी के कारण ASEAN देश भारतीय बाजारों का लाभ उठाना चाहते हैं।

→ चीन और ASEAN के बीच के द्विपक्षीय व्यापार 200 Billion Doller से ज्यादा है। अतः भारत का ASEAN के साथ आर्थिक संबंध अपनी संभावना से कम है।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098158

Connectivity :→

Physical Connectivity :- → ASEAN देशों के साथ "कालादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट" के निर्माण का समझौता किया गया है।

→ इसके द्वारा भारत के कोलकाता पत्तन को म्यांमार के सितवे पत्तन के साथ जोड़ा जाएगा और सितवे पत्तन से कालादान नदी के द्वारा म्यांमार के पालेवा में पहुँचा जाएगा और पालेवा से राजमार्ग द्वारा मिजोरम पहुँचा जायेगा।

→ मणिपुर से म्यांमार को सड़क संपर्क से जोड़ना। जिसे थाइलैण्ड तक आगे बढ़ाया जायेगा।

→ बांग्लादेश, चीन, भारत और म्यांमार आर्थिक गलियारे के निर्माण का पहले ही समझौता हो चुका है।

संस्थात्मक संबंध :→

1997 → ASEAN + 3
↓
चीन, द० कोरिया
जापान

2000 के बाद → ASEAN + 1 शिखर सम्मेलन
भारत

1997 → BIMSTEC का निर्माण
↓
(बांग्लादेश, भारत, म्यांमार, श्रीलंका, थाइलैण्ड, नेपाल, भूटान (2004 में शामिल))

(Bay of Bengal Initiative for multi sectoral Tecnical and Economic cooperation)

→ BIMSTEC दक्षिण एशिया एवं दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों को जोड़ने वाला एक संगठन है।

BIMSTEC में सहयोग

↳ व्यापार, पर्यटन, परिवहन के मुद्दे पर।

गंगा - मेकॉंग परियोजना

भारत - म्यांमार, लाओस, वियतनाम, कंबोडिया, थाइलैण्ड

↳ व्यापार, पर्यटन, परिवहन के मुद्दे पर सहयोग।

→ वर्ष 2005 में पूर्वी एशियाई शिखर सम्मेलन की शुरूआत हुई। जिसमें आसियान के सभी 10 देश, उसके अतिरिक्त आसियान + 3 (-चीन, जापान द० कोरिया), ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, इंडिया, अमेरिका सम्मिलित हैं।

→ पूर्वी एशियाई सम्मेलन में व्यापार, सुरक्षा, आतंकवाद, आपदा प्रबंध जैसे क्षेत्रों में सहयोग पर बल दिया जा रहा है।

→ वर्तमान में एशिया-प्रशांत क्षेत्र विश्व अर्थव्यवस्था के केन्द्र के रूप में उभर रहा है और पूर्वी एशियाई सम्मेलन में विश्व की तीन बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ शामिल हैं। एवं भारत के बढ़ते आर्थिक प्रभाव के परिणामस्वरूप इसमें भारत को भी शामिल किया गया है।

सामरिक संबंध :-

भारत - आसियान देशों के बीच प्रतिवर्ष "मिलन" नामक संयुक्त सैनिक अभ्यास आयोजित किया जाता है। सुरक्षा, आपदा प्रबंध, आतंकवाद

के विरुद्ध परस्पर सहयोग किया जा रहा है। आसियान देशों के सैनिकों को भारत प्रशिक्षण भी प्रदान कर रहा है। और क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग को बढ़ाने के लिए "आसियान रीजनल फोरम" का भी गठन किया गया है। जिसका भारत भी सदस्य है। इसके अलावा "आसियान डिफेंस मिनिस्टर मीटिंग" का भी आयोजन किया जाता है।

चीन का शक्तिशाली उभार :→

चीन के शक्तिशाली उभार के परिणाम स्वरूप भारत-आसियान के बीच सामरिक संबंध सुदृढ़ हो रहे हैं। क्योंकि दक्षिण चीन सागर के मुद्दे पर चीन-आसियान देशों के बीच मतभेद बने हुए हैं; जबकि भारत का आसियान देशों के साथ कोई विवाद नहीं है।

विदेश नीति राज्य के आंतरिक मामलों से प्रभावित होती है और भारत के उत्तरी-पूर्वी राज्य परंपरागत रूप में भारत के लिए सुरक्षा बोझ के रूप में माने जाते रहे हैं और आसियान देशों के साथ जोड़कर इन्हें विकास केन्द्र के रूप में विकसित करने पर बल है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098153

Act East

→ भारत के उत्तरी-पूर्वी राज्यों में आधारभूत संरचना का अभाव है। अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड और मणिपुर आज तक रेल संपर्क से जुड़ नहीं पाये और उत्तरी-पूर्वी राज्यों की शेष भारत से वायु कनेक्टिविटी भी खराब है। इसलिए उत्तरी-पूर्वी राज्यों में आधारभूत संरचना के विकास को ही 'एक्ट ईस्ट' का नाम दिया गया।

→ कालादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट परियोजना, भारत-म्यांमार राजमार्ग तथा भारत-थाईलैण्ड हाईवे को समय बद्ध रूप में जल्द से जल्द पूर्ण करने पर बल दिया जा रहा है।

→ नई दिल्ली - लाओस तथा नई दिल्ली - इंडोनेशिया के बीच सीधी विमान सेवा शुरू करने की पहल की गई है, जिससे कनेक्टिविटी को बेहतर किया जा सके

→ भारत के द्वारा पहली बार पूर्व के किसी देश को इतनी बड़ी सैनिक सहायता दी गई है, जिसमें वियतनाम शामिल है। जिसके समुद्री पनडुब्बी तथा ब्रह्मोस प्रक्षेपास्त्र देने का भी निर्णय किया गया है।

→ सांस्कृतिक संबंधों के माध्यम से सामरिक और आर्थिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाने पर बल है। क्योंकि आसियान क्षेत्र में भारत का सर्वाधिक सांस्कृतिक प्रभाव है।

निष्कर्ष :- भारत की एक्ट ईस्ट की नीति विदेश नीति में गुणात्मक परिवर्तन नहीं बल्कि मात्रात्मक परिवर्तन का प्रतीक है। क्योंकि पहले निर्मित नीतियों एवं समझौतों को प्रभावित प्रभावी क्रियान्वित करने पर बल दिया गया है।

भारत - म्यांमार :-

1947 – 1962 → संबंध मधुर, मित्रतापूर्ण

1962 – 1990 → संबंध खराब

- म्यांमार में सैनिक शासन
- चीन के साथ निकटता
- चेहियार समुदाय के लोगों को प्रताड़ित करना शुरू किया।

→ 1990 के बाद भारत ने म्यांमार की सैनिक सरकार के साथ सुदृढ़ संबंध स्थापित कर लिये और ● म्यांमार में लोकतंत्र के आंदोलन को म्यांमार का आंतरिक मामला कहा।

भारत के लिए म्यांमार का महत्व :-

→ म्यांमार दक्षिणी-पूर्वी एशियाई क्षेत्र का एक मात्र राज्य है जिसके साथ भारत की समुद्री एवं भूमागीय दोनों सीमा मिलती है। और म्यांमार पूर्व की ओर देखो का प्रवेश द्वार है।

→ भारत और म्यांमार के बीच 1600 Km की सीमा मिलता है जो नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम राज्यों से मिलती है।

→ दोनों के बीच सीमा पर Free movement Regime (मुक्त आवागमन व्यवस्था) का प्रावधान किया गया है जिसके अंतर्गत सीमा क्षेत्र के 16 Km के दायरे में दोनों देश के नागरिकों को मुक्त आवागम का अधिकार है।

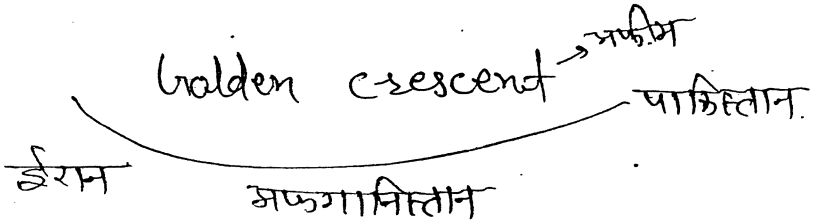

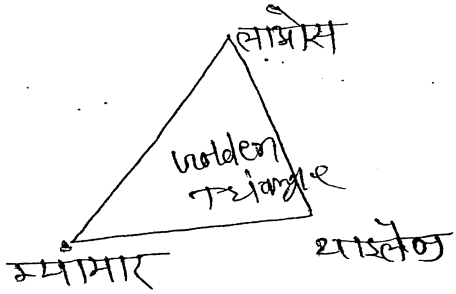

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

→ उत्तरी-पूर्वी राज्यों में उग्रवाद पर नियंत्रण के लिए म्यांमार का निर्णायक महत्व है। क्योंकि उत्तरी-पूर्वी राज्यों के उग्रवादी संगठन उग्रवादी घटनाओं के बाद म्यांमार में शरण ले लेते है।

→ म्यांमार की सीमा एक ओर भारत से तथा दूसरी ओर चीन से मिलती है। इसलिए चीन का म्यांमार पर बढ़ता प्रभाव भारत की सुरक्षा के लिए एक चुनौती मानी जाती है।

वर्तमान सरकार और भारत-म्यांमार संबंध

(i) म्यांमार में लोकतंत्र की बहाली हो चुकी है परन्तु लोकतांत्रिक शासन में सेना का विशेषाधिकार बना हुआ है।

(ii) नेपाल के म्यांमार के नवीन संविधान के अनुसार संसद में सेना के लिए एक-चौथाई सीटें आरक्षित की गई हैं।

(iii) वर्तमान संविधान के अनुसार सरकार के अत्यधिक महत्वपूर्ण मंत्रालयों गृह, रक्षा, सीमा प्रबंध सेना के लिए आरक्षित किया गया है।

(iv) संविधान में यह भी उल्लिखित है कि म्यांमार का ऐसा नागरिक जिसका विवाह किसी विदेशी व्यक्ति के साथ होगा, वह म्यांमार के राष्ट्रपति पद पर नियुक्त नहीं हो सकता।

(v) आंग-सान-सू-की के दल "नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी" को संसदीय चुनाव में पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ, परन्तु वे राष्ट्रपति नहीं बन सकी और इन्होंने अपने सहयोगी तिन क्या को राष्ट्रपति पद के लिए नियुक्त कराया।

(vi) म्यांमार की वर्तमान सरकार चीन के साथ अपने संबंध बेहतर बनाये रखना चाहती है। इसलिए आंग-सान-सू की की पहली विदेश यात्रा चीन के लिए

निर्धारित की गई। परन्तु म्यांमार के द्वारा भारत के साथ संबंधों को भी पर्याप्त महत्व दिया जा रहा है इसलिए म्यांमार के राष्ट्रपति तिन क्या की पहली विदेश यात्रा भारत के लिए निर्धारित की गई।

भारत-म्यांमार के बीच संबंध

→ भारत के द्वारा म्यांमार में क्षमता निर्माण कार्यक्रम (Capicity Building Programme) का संचालन किया जा रहा है।

→ म्यांमार के आधारभूत संरचना के विकास में भी भारत सहयोग कर रहा है। जिसके अंतर्गत मणिपुर-म्यांमार राजमार्ग का निर्माण किया गया है। जिसे बढ़ाकर थाईलैण्ड तक बढ़ाने का समझौता किया गया

→ कालादान मल्टीमॉडल परियोजना को Dec 2016 तक आरंभ करने का निर्णय लिया गया है।

→ दोनों के बीच सीमा प्रबंध के मुद्दे पर सहयोग किया जा रहा है और आतंकी संगठनों के विरुद्ध साझी सैनिक कार्यवाही भी हो रही है

Hot Pursuit → समुद्र में प्रयोग की जाने वाली ship आधारित तकनीकि
↓
~~सैनिक के~~ → सैनिक कार्यवाही

→ भारत म्यांमार के बीच बौद्ध धर्म का साझा सांस्कृतिक आधार भी है।

→ म्यांमार के साथ भारत के बढ़ते संबंध भारत की Act East policy का भाग है और म्यांमार में विद्यमान प्राकृतिक गैस के भंडार भारत की ऊर्जा सुरक्षा में भी सहायक हो सकते हैं।

भारत - ~~वियतनाम~~

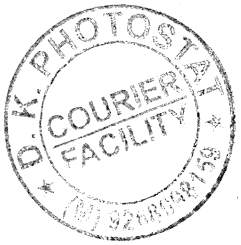

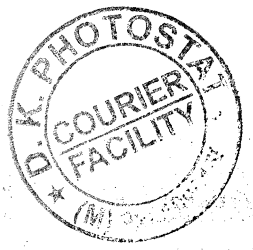

भारत- वियतनाम

→ भारत और वियतनाम के बीच ऐतिहासिक परम्परागत सदाबहार मित्रतापूर्ण संबंध हैं।

→ भारत और वियतनाम के बीच तेल और प्राकृतिक गैस के उत्खनन के क्षेत्र में भी सहयोग हो रहा है।

→ भारत और वियतनाम के बीच वर्तमान में ब्लाक नं. 128 में उत्खनन का कार्य किया जा रहा है, जिसे चीन नाइन-डैश-लाइन के अंदर मानता है। इसलिए चीन को इस पर आपत्ति है।

→ भारत के अनुसार यदि पा-चीन पाकिस्तानी अधिकृत कश्मीर में आर्थिक गलियारे का निर्माण कर सकता है तो भारत भी दक्षिण चीन सागर में ONGC का कार्य जारी रखेगा।

→ Act East Policy के अंतर्गत भारत के द्वारा वियतनाम को 500 million Doller आर्थिक सहायता (Line of credit) दी गई। (सस्ती दर पर ऋण)

→ भारत के द्वारा वियतनाम को समुद्री पनडुब्बी और ब्रह्मोस प्रक्षेपास्त्र प्रदान करने पर भी वार्ता चल रही है।

→ दोनों के बीच के द्विपक्षीय व्यापार लगभग 7 Billion $ है और भारत दक्षिण चीन सागर में समुद्री संचार मार्ग को मुक्त बनाये रखने का समर्थक है।

भारत - जापान संबंध

ऐतिहासिक संबंध
→ क्योटो – वाराणसी
बोद्ध धर्म

जापान की विदेश नीति

① द्वितीय विश्व युद्ध से पहले → आक्रामक राष्ट्रवाद का विचार था (जापान का)
↳ भारत के साथ सांस्कृतिक संबंध

1945 के बाद :→ शांतिवादी नीति अपनाई गई।
↳ ⓐ जापान ने यह स्पष्ट रूप में घोषित कर रखा है कि वह परमाणु हथियार प्राप्त नहीं करेगा।
ⓑ जापान के संविधान के अनु॰ 9 में उल्लिखित है कि जापान केवल आत्मरक्षा के लिए सैनिक रखेगा।

ⓒ जापान ने कह रखा है कि वह भी किसी भी देश को हथियार नहीं देगा।

जापान की विदेश नीति का वर्तमान चरण :→

→ चीन का शक्तिशाली आर्थिक एवं सैनिक उभार।
→ चीन–जापान के बीच सेंकाकू द्वीप का विवाद।

भारत-जापान रक्षा सहयोग (सामरिक संबंध)

① पहली बार जापान के द्वारा अन्य राज्यों को हथियार बेचने का निर्णय किया गया है। जिसके अंतर्गत भारत, जापान से Shinmaya (US-2) नामक उभयचर विमान खरीदने का समझौता करने की ओर अग्रसर है।

(ii) भारत- जापान के बीच रक्षा सामग्री की खरीद दोनो के बीच उभरते सामरिक सहभागिता का उदाहरण है

(iii) दोनों के बीच विदेश सचिव, रक्षा सचिव ~~की साझी के बीच~~ साझी वार्ता भी ~~हो रही~~ है। जिसे 2+2 की वार्ता भी कहा जाता है।

(iv) हिन्द महासागर व दक्षिण चीन सागर में दोनों के हित एक समान हैं और चीन का शक्तिशाली उभार दोनों की सुरक्षा के लिए एक साझा खतरा माना जाता है।

(v) चीन और जापान के बीच सेनकाकू द्वीप को लेकर संघर्ष है जबकि भारत और चीन के बीच जटिल सीमा विवाद बना हुआ है

पहली बार सिविल परमाणु समझौता

(i) जापान के द्वारा पहली बार किसी ऐसे देश को परमाणु ईंधन एवं तकनीकी हस्तांतरित करने का समझौता किया गया है। जिसने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किया है।

(ii) जापान के द्वारा भारत की NSG की सदस्यता का भी समर्थन किया गया है और जापान ने तो यहाँ तक कहा है कि NSG में भारत की सदस्यता परमाणु अप्रसार में सहायक होगी।

(iii) भारत-जापान civil परमाणु समझौता भारत के लिए अत्यधिक उपयोगी है। क्योंकि जापानी कंपनियाँ हिटाची, मित्सुबिशी परमाणु रियक्टर के निर्माण में अग्रणी कंपनियाँ हैं। जिनसे फ्रांस और अमेरिका की कंपनियाँ भी तकनीक खरीदती हैं तथा अमेरिकी कंपनी जनरल इलेक्ट्रिक में भी इन कंपनियों का शेयर है।

(iv) इस समझौते से भारत को परमाणु बिजली के उत्पादन में सहायता मिलेगी।

(v) जापान के साथ इस समझौते से केवल ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग नहीं बल्कि सामरिक सहयोग भी प्रगाढ़ होंगे।

भारत-जापान आर्थिक संबंध :→

(i) भारत में उदारीकरण के लागू होने के 25 वर्ष बीत गये, परन्तु विश्व स्तरीय आधारभूत संरचनाओं का निर्माण करना अभी भी शेष है।

(ii) जापान के द्वारा दिल्ली मेट्रो का निर्माण, दिल्ली-मुम्बई आर्थिक गलियारा, मुम्बई-अहमदाबाद हाईस्पीड ट्रेन भारत के आधारभूत संरचना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

(iii) भारत के द्वारा पूर्वोत्तर राज्यों की आधारभूत संरचना के विकास में जापान की सहायता ली जा रही है जो सामरिक रूप में भारत के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

चीन+जापान = 30 B$

(iv) जापान का निवेश भारत के "मेक इन इंडिया" कार्यक्रम में अत्यधिक सकारात्मक है। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार मात्र 10 Billion $ है।

(v) दोनों के बीच व्यापारिक संबंधों को प्रगाढ़ करने के लिए समग्र आर्थिक सहभागिता (CEPA) का समझौता हुआ है।

आर्थिक सहयोग की प्रगति के अभाव के कारण :-

(i) भारत में आधारभूत संरचनाओं का अभाव है।

(ii) नौकरशाही का दृष्टिकोण अत्यधिक औपचारिक है और नियम एवं प्रक्रियाऐं अत्यधिक जटिल हैं।

(iii) परियोजनाओं को पूर्ण करने में होने वाले विलम्ब तथा नीतियों की अनिश्चितता भी निवेश के लिए नकारात्मक वातावरण उत्पन्न करती है।

चीन- जापान तथा भारत

(i) वर्तमान में भारत और जापान के बीच बढ़ती सामरिक निकटता चीन के शक्तिशाली उभार का परिणाम माना जा रहा है।

(ii) दोनों देशों के बीच (I-J) बढ़ती निकटता से भारत चीन पर दबाव बनाना चाहता है और चीन के साथ सौदे-बाजी की क्षमता को भी बेहतर बना रहा है।

(iii) लेकिन भारत चीन और जापान दोनों के साथ संबंधों को अलग-अलग रूप में देखता है, इसलिए भारत की चीन के प्रति नीति जापानी हितों से निर्देशित नहीं हो सकती, बल्कि अपने राष्ट्रीय हितों से प्रेरित होती है।

(iv) चीन द्वारा निर्मित एशियाई आधारभूत संरचना निवेश बैंक (AIIB) का सदस्य भारत है जबकि जापान इसमें शामिल नहीं है।

(v) भारत-जापान बढ़ते सामरिक संबंधों को चीन अपने विरोधी मानता है। इसलिए नवर्षों (2016) बाद मालाबार सैन्य अभ्यास में जापान को शामिल करने पर चीन ने आपत्ति व्यक्त की थी।

(vi) ~~चीन~~ भारत और जापान एक-दूसरे के मधुर मित्रतापूर्ण सामरिक सहयोगी हैं जबकि चीन भारत का पड़ोसी है। इसलिए जापान के साथ संबंध बनाते समय इसे चीन विरोधी बना लेना तार्किक नहीं है।

Q.1. Act East नीति के मूल उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए। क्या यह Look East से वास्तविक रूप में अलग है? टिप्पणी कीजिए।

Q.2. भारत की Look East नीति में विद्यमान खामियों को उजागर कीजिए और इसे बेहतर बनाने के उपायों का भी उल्लेख कीजिए।

Q.3. भारत-वियतनाम संबंध केवल द्विपक्षीय स्तर तक सीमित नहीं हैं बल्कि दोनों के बीच संबंधों का वैश्विक सामरिक महत्व है।

Q.4. क्या आप इस मत से सहमत हैं कि भारत-जापान के बीच बढ़ती सामरिक मित्रता चीन के शक्तिशाली उभार का परिणाम है। तर्क प्रस्तुत कीजिए।

Q-5. भारत-जापान आर्थिक संबंध अपनी क्षमता से अत्यधिक पीछे हैं। इसे बेहतर करने के उपाय प्रस्तुत कीजिए।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098158

Look West	Look East / Act East
(i) द्विपक्षीय व्यापार 60-65 b$.	(i) द्विपक्षीय व्यापार 40 b$, मुक्त व्यापार समझौता, क्षेत्रीय आर्थिक संगठन अधिक
(ii) तेल के आयात का 60% और गैस आयात का लगभग 85%	(ii) तेल, गैस → ××
(iii) 60 लाख से ज्यादा भारतीय प्रवासी हैं, जो विदेशी मुद्रा भेजते हैं।	(iii) विदेशी मुद्रा प्राप्त नहीं होती।
(iv) कनेक्टिविटी की समस्या ज्यादा	(iv) कनेक्टिविटी अत्यधिक बेहतर
(v) सामरिक संबंध तेजी से बढ़ रहा है → सऊदी अरब, सं. अरब अमीरात, ईरान, इजराइल	(v) सामरिक संबंध तेजी से बढ़ रहा है। सिंगापुर, द. कोरिया, जापान, आसियान देश → सुरक्षा का समझौता

↓

दोनों का महत्व बराबर

निष्कर्ष:- भारत के द्वारा दोनों क्षेत्रों के साथ समानांतर संबंधों के विकास का प्रयत्न किया जा रहा है। क्योंकि दोनों क्षेत्रों के अत्यधिक विशिष्ट महत्व हैं।

SAARC

दक्षेस की स्थापना:- → दक्षेस की स्थापना का प्रस्ताव बांग्लादेश के पूर्व राष्ट्रपति जिआउर्रहमान के द्वारा किया गया।

→ आरंभिक रूप में दक्षेस में 7 देश शामिल हुए - जिसमें भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान मालदीव और वर्ष 2005 में अफगानिस्तान को भी शामिल कर लिया गया।

→ भारत - पकिस्तान के बीच विद्यमान मतभेदों के कारण यह निर्णय किया गया कि दक्षेस के सभी निर्णय आम सहमति से किये जायेंगे।

→ दक्षेस के मंच पर किसी भी प्रकार के द्विपक्षीय विवाद नहीं उठाये जायेंगे।

दक्षेस का उद्देश्य (mandate):-

→ यह एक बहुमंची बहुपक्षीय मंच है। जिसके द्वारा साझे सहयोग को बढ़ावा देने पर बल है। यह विवाद के समाधान की संस्था नहीं है।

→ दक्षिण एशिया में मानवीय जीवन स्तर में वृद्धि।

→ दक्षिणी-एशियाई देशों के बीच तकनीकी, आर्थिक, सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा देना।

→ सभी अंतर्राष्ट्रीय और वैश्विक मंचों पर साझे दृष्टिकोण का निर्माण।

दक्षेस की संरचना :-

→ दक्षेस की सर्वोच्च नीति निर्मात्री संस्था शिखर स्तर की बैठक है। और दक्षेस के अनुसार प्रत्येक वर्ष शासनाध्यक्षों की बैठक होगी।

→ उसके नीचे मंत्री स्तरीय बैठक।

D. K. PHOTO
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

→ विदेश सचिवों की बैठक।

→ विभिन्न प्रकार की सभी समीतियाँ, जिनके द्वारा विभिन्न विषयों पर विचार किया जाता है।

→ दक्षेस का सचिवालय काठमांडु में है।

दक्षेस की प्रगति :-

→ आर्थिक क्षेत्र में
→ सामा तकनीकी सामाजिक
→ आतंकवाद के मुद्दे पर
→ पर्यावरण के मुद्दे पर
→ सांस्कृतिक क्षेत्र में

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति :→

(1) आर्थिक क्षेत्र में प्रगति

आर्थिक एकीकरण

(5) एक समान आर्थिक नीतियों का निर्माण

(4) समान बाजार

(3) समान प्रशुल्क संघ :→ किसी भी बाहरी राज्य के द्वारा संगठन में व्यापार पर एक समान प्रशुल्क लगेगा चाहे वह किसी भी देश के साथ व्यापार करे

(2) मुक्त व्यापार :- व्यापार में प्रशुल्क शून्य

(1) वरीयता व्यापार :- दक्षेस के सदस्य एक दूसरे को प्रशुल्क में वरीयता देंगे।

SAPTA :- South Asian Preferential Trade Agreement
→ 1993

2004 = SAFTA :- South Asian Free trade Agreement

(4) समान बाजार (common market) :→
कोई भी देश संगठन में कहीं पर भी उत्पादन कर सकता है और उसे अन्य देशों में बेच भी सकता है।

(5) एक समान आर्थिक नीतियों का निर्माण और साझी मुद्रा का उपयोग।

दक्षेस का लक्ष्य :- वर्ष 2025 तक दक्षेस को आर्थिक संघ बनाने का ~~निर्माण~~ निर्णय किया गया है।

SAFTA

(1) Non least Developing Countries (गैर- पिछड़े विकासशील देश)
- भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका

Least Developing Countries. (पिछड़े विकासशील देश)
- बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, अफगानिस्तान

(2) SAFTA के मंच पर देशों के बीच व्यापारिक विवादों को हल करने का भी प्रावधान किया गया है।

(3) वर्ष 2016 तक SAFTA को ~~पूर्ण~~ क्रियान्वित करने का लक्ष्य रखा गया है।

(4) दक्षेस के मंच पर सेवा के क्षेत्र में भी मुक्त व्यापार का समझौता सम्पन्न हो चुका है।

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

मुक्त व्यापार को लागू करने में बाधाएँ :-

(I) दक्षेस के काठमांडु (18वें) सम्मेलन में दक्षिणी-एशियाई देशों के बीच Energy ~~ग्रिड~~ (ऊर्जा ग्रिड) संपर्क का समझौता किया गया। क्योंकि भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, ऊर्जा आयात पर निर्भर राज्य हैं जबकि नेपाल, भूटान बिजली के निर्यातक देशों में शामिल हैं।

(II) ~~दक्षि~~ दक्षेस motor vehicle Agreement, जिसके द्वारा समूचे दक्षिणी एशियाई देशों के बीच वाहनों का मुक्त आवागमन होगा, जिससे व्यापार बढ़ेगा, आर्थिक एकीकरण

बेहतर होगा, परन्तु पाकिस्तान ने इसे स्वीकार नहीं किया। इसलिए दक्षेस के मंच पर यह समझौता नहीं हो सका।

(iii) भारत-पाकिस्तान के बीच के द्विपक्षीय विवाद दक्षेस की प्रगति में बड़ी बाधा बने हुए हैं। इसलिए पाकिस्तान में आयोजित दक्षेस वित्त मंत्रियों की बैठक में भारतीय वित्त मंत्री अरुण जेटली शामिल नहीं हुए। और इस्लामाबाद दक्षेस बैठक के लिए भी भारत के प्रधानमंत्री का जाना भी फिलहाल निश्चित नहीं है।

(iv) दक्षेस देशों के बीच संचार संपर्क, बैंकिंग, इंटरनेट के अभाव है।

(v) दक्षेस देशों के बीच का आपसी व्यापार दक्षेस के कुल व्यापार का महज 5% है।

यूरोपीय यूनियन → 60% व्यापार
आसियान → 25%
दक्षेस → 5%

(2) <u>सामाजिक-तकनीकी</u> :-

(i) दक्षेस के द्वारा वर्तमान में <u>जन केन्द्रित सार्क</u> के विचार को बढ़ावा दिया जा रहा है।

(ii) दक्षेस के वर्षों को सामाजिक उद्देश्यों के लिए समर्पित किया जाता है। जैसे बालिका वर्ष तथा मौसम विज्ञान, परिवहन और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी सहयोग किया जा रहा है। और

भुखमरी की समस्या से निपटने के लिए सार्क खाद्य बैंक की स्थापना का भी प्रावधान है।

(3) आतंकवाद :- → दक्षेस के इस्लामाबाद बैठक में आतंकवाद का सामना करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद की प्रस्ताव संख्या 1373 को क्रियान्वित करने पर बल दिया गया है।

→ देशों के बीच नशीली दवाओं की अवैध तस्करी तथा मानव दुर्व्यापार को प्रतिबंधित करने का समझौता हुआ है।

(4) पर्यावरण :-

→ दक्षिण दक्षेस के थिंपू घोषणा पत्र में पर्यावरण की रक्षा के लिए साझे किन्तु पृथक-पृथक उत्तरदायित्व को स्वीकार किया गया है।

→ दक्षिण एशिया में हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के साझे संरक्षण पर भी बल दिया गया।

(5) सांस्कृतिक :-

→ नई दिल्ली में दक्षेस विश्व विद्यालय की स्थापना की गई है।

→ दक्षेस देशों के बीच दक्षेस खेल और दक्षेस सांस्कृतिक महोत्सव का भी आयोजन किया जाता है और दक्षेस देशों के Eminent persons (विशिष्ट) को वीजा मुक्त यात्रा की सुविधा भी प्रदान की गई है।

दक्षेस की विफलता के कारण :-

(I) दक्षेस में अभीतक साझी क्षेत्रीय पहचान का विकास भी नहीं हो सका है। पाकिस्तान स्वयं को इस्लामी राज्य मानता है। श्रीलंका दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों के साथ अपनी निकटता प्रदर्शित करता है।

(II) दक्षिणी- एशियाई देशों के बीच अनेक स्तरों पर विवाद कायम हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच में अत्यधिक कटु सम्बंध हैं। पाकिस्तान-अफगानिस्तान के बीच संबंध खराब बने हुए हैं। पाकिस्तान-बांग्लादेश के बीच में भी गहरे मतभेद हैं।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 92680...

समाधान

* दक्षेस अथवा Look East :-

(I)→ दक्षेस की निराशाजनक प्रगति के कारण भारत में 1997 में BIMSTEC का गठन किया गया, जिसमें पाकिस्तान के अलावा दक्षिण एशिया के सभी प्रमुख देश शामिल हैं।

(II) भारत और आसियान के बीच निरंतर प्रगति के परिणाम-स्वरूप द्विपक्षीय व्यापार निवेश में वृद्धि हो रही है। कनेक्टिविटी बेहतर हो चुकी है।

(III) आसियान के साथ भारत का कोई विवाद नहीं है। अत: ऐसा कहा जाता है कि दक्षेस की विफलता के कारण भारत ने पूर्व की ओर देखो की सक्रिय नीति अपनाई।

(iv) Look East की प्रगति बेहतर है परन्तु यह दक्षेस के साथ संबंधों का विकल्प नहीं है। क्योंकि विदेश नीति में पड़ोसी का कोई विकल्प नहीं होता।

(v) इसलिए भारत के साथ-साथ भारत को दक्षेस के आर्थिक एकीकरण के विचार को सक्रियता से लागू करने की पहल करनी चाहिए।

(vi) जिन दक्षेस देशों के भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार हैं उनके साथ भारत व्यापार फायदे में है।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

दक्षेस और चीन

चीन को शामिल करने के पक्ष में तर्क :-

(i) दक्षेस के 8 सदस्यों के अलावा अमेरिका, चीन, जापान, यूरोपियन यूनियन, ईरान जैसे देश दक्षेस के पर्यवेक्षक राज्य हैं।

(ii) दक्षेस के सदस्यों में पाकिस्तान, नेपाल चीन की सदस्यता के समर्थक हैं जबकि दक्षेस के अन्य छोटे देश (भूटान के अलावा) चीन की सदस्यता के विरोधी नहीं हैं। इसलिए भारत के विरोध करने पर दक्षेस में भारत अलग-थलग पड़ सकता है।

(iii) संघाई सहयोग संगठन की सदस्यता के लिए चीन के द्वारा भारत का समर्थन किया गया।

(iv) चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश का सबसे बड़ा द्विपक्षीय व्यापारिक भागीदार है और विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के शामिल होने से दक्षेस का आर्थिक एकीकरण बेहतर होगा।

विपक्ष में तर्क :- ① चीन के पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल करने से अन्य पर्यवेक्षक राज्य भी सदस्यता की मांग कर सकते हैं।

② दक्षेस की वर्तमान प्रगति अत्यधिक निराशाजनक जनक है। इसलिए चीन को शामिल करने का उद्देश्य क्षेत्रीय एकीकरण के बजाए भारत को प्रतिसंतुलित करने के विचार से प्रेरित प्रतीत होता है।

③ दक्षेस के सभी निर्णय आम सहमति से होते हैं, इसलिए चीन किसी भी निर्णय को रोक सकता है।

④ दक्षिण एशिया में भारत की स्वाभाविक प्राथमिकता है, जो चीन को शामिल करने से अपने-आप सीमित हो जाएगी।

निष्कर्ष :- दक्षेस में चीन को शामिल करने का विचार अत्यधिक सकारात्मक प्रतीत होता है परन्तु वर्तमान में दक्षेस के विस्तार की बजाए इसे प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता है।

Que :- दक्षेस की भावी संभावनाओं को स्पष्ट कीजिए।

भावी प्रत्याशाएं

भावी प्रत्याशाएं

- BBIN → Bangladesh, Bhutan, India, Nepal motor vehicle Agreement
- पाकिस्तान - अफगानिस्तान की वस्तुओं के भारत निर्यात
- एनर्जी ग्रिड
- TAPI
- शासन - लोकतांत्रिक

आसियान	दक्षेस
(i) आपसी विवाद अनुपस्थित	(i) विवाद ज्यादा हैं।
(ii) आधारभूत संरचना & कनेक्टिविटी बेहतर	(ii) आधारभूत संरचना & कनेक्टिविटी का अभाव
(iii) क्षेत्रीय पहचान कायम करती है।	(iii) पहचान का अभाव है।
(iv) 25%--30% व्यापार आसियान के देशों के अंदर	(iv) 5% व्यापार अंदर
(v) सुरक्षा के साझे मुद्दों के लिए आसियान रीजनल फोरम बनाया गया है।	(v) यहाँ सुरक्षा के मामले से संबंधित कोई फोरम नहीं है।

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

Q.1. दक्षेस के आर्थिक एकीकरण में BBIN समझौते के महत्व का उल्लेख कीजिए।

Q.2. क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग के संदर्भ में दक्षेस एक असफल व्यवस्था है टिप्पणी कीजिए।

Q.3. दक्षेस की विफलता के प्रमुख संरचनात्मक कारणों को स्पष्ट कीजिए और इसे बेहतर बनाने का सुझाव भी प्रस्तुत कीजिए।

Q.4. क्या आप इस मत से सहमत हैं कि 'पूर्व की ओर देखो' की नीति या Act East की नीति दक्षेस की विफलता का एक बेहतर विकल्प हो सकता है?

Q.5. दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र के समझौते की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए और इसके मार्ग में उपस्थित बाधाओं की भी पहचान कीजिए।

भारत

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Coaching Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Coaching Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत – अमेरिका सम्बंध

भारत

अमेरिका

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

साम्यवाद का प्रतिरोध
⇓
सोवियत संघ
⇓
मित्र (एशिया) → चीन

अमेरिका के साथ जाने से समस्या उभरती ↓

- समाजवाद आर्थिक प्रणाली नहीं अपना पाते।
- USA – पाकिस्तान के बीच मित्रता थी।
- USA → कश्मीर के मुद्दे पर भारत पर दबाव का प्रयोग करता।
- चीन व सोवियत संघ के साथ तनाव उत्पन्न होता।

दोनों के बीच समानता

① दोनों लोकतांत्रिक देश हैं।
② 1950 – 60 के दशक में भारत को आर्थिक सहायता दी – अमेरिका ने।
③ दोनों देशों के बीच तकनीकी सहयोग भी था।
1962 के चीन हमले के दौरान अमेरिका ने भारत को सैनिक सहायता दी गई।

(1965)
⇓
भारत – पाकिस्तान के बीच युद्ध
⇓
अमेरिका ने दोनों देशों को समान रूप से उत्तरदायी माना।
⇓
भारत – पाकिस्तान के लिए हथियारों की आपूर्ति अमेरिका ने बंद करदी।

(1971)

इंदिरा गांधी ← 1971

आंतरिक समाज-वाद की ओर झुकी हुई थी। — भारत - सोवियत संघ के बीच मित्रता हुई।
⇓
अमेरिका - भारत विरोधी बन गया।

1947 — 1971 → मित्रतापूर्ण संबंध

1971 — 1991 → प्रतिकूल संबंध
- → भारत - सोवियत संघ की मित्रता के कारण
- → शीत-युद्ध के कारण
- → पाकिस्तान के कारण
- → समाजवादी अर्थव्यवस्था के कारण
- → गुटनिरपेक्ष नीति के कारण

1991 के बाद संबंध सुधरने के कारण :→ (1991 — 1998)

1. उदारीकरण की नीति अपनाई।
2. भारत का बड़े बाजार के रूप में उभार।
3. लोकतांत्रिक देश।
4. NPT / CTBT पर हस्ताक्षर का दबाव दिया।
5. 1998 में परमाणु परीक्षण किया गया।

(2000) → संबंधों का माहौल बना।
→ बिल क्लिंटन भारत आया।

(2001) → जॉर्ज बुश
→ W.T.C. को उड़ा दिया गया
→ अमेरिकी विदेश नीति में परिवर्तन

→ आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध
→ आर्थिक प्रतिबंध हटाना शुरू किया।
→ भारत मूल के लोगों का बढ़ता प्रभाव।

1965–2002
⇓
हथियारों की supply बंद रही।

वर्तमान में भारत-अमेरिकी संबंध मजबूत होने के उत्तरदायी कारण :→

① उदारीकरण की नीति और भारत का बड़े बाजार के रूप में उभार।

② आतंकवाद के विरुद्ध साझा सहयोग।

③ भारतीय मूल के लोगों का अमेरिका में बढ़ता प्रभाव।

④ चीन के शक्तिशाली आर्थिक और सैनिक उभार को सीमित करने के लिए अमेरिका ने भारत के साथ सामरिक संबंधों पर बल दिया।

आर्थिक से सामरिक संबंधों का विकास :-

2002 :- हथियारों को भारत को देना पुनः शुरू किया।

2004 :- (i) Next step to stretagic partnership.
↳ उच्च तकनीकी सहायता की पहल

(ii) Framework cooperation on Defence Agreement
⇓
(a) साझे सैनिक अभ्यास समझौते पर सहमति
(b) अधिकारियों का विनिमय
(c) हथियारों की खरीद

④ Defence Trade Technology Initiative

पहली बार इस पहल के द्वारा यह सहमति हुई कि भारत अमेरिका के रक्षा संबंध केवल क्रेता-विक्रेता तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि रक्षा सामग्री के विकास और उत्पादन में साझा सहयोग करेंगे।

LEMOA

Logistic Exchange Memorandom of Agreement

इसकी आवश्यकता क्यों हुई:-

① वर्तमान में भारत और अमेरिका के साथ सबसे बड़ी संख्या में साझे सैनिक अभ्यास किये जा रहे हैं।

② अमेरिका एक वैश्विक शक्ति है, जिसकी सेनाओं की तैनाती विश्व के प्रत्येक भाग में है, जबकि हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत एक प्रमुख सैनिक शक्ति है।

③ वर्तमान में भारत और अमेरिका के बीच प्रगाढ़ सामरिक और सैनिक संबंधों का विकास हो रहा है। जिसका तार्किक परिणाम Logistic समझौता है।

समझौता क्या है?

① अमेरिकी सेनाओं को भारत के सैनिक अड्डों के प्रयोग की सुविधा दी जाएगी तथा भारत भी अमेरिकी सेनाओं के सैनिक अड्डों का प्रयोग कर सकेगा।

② इस समझौते के द्वारा दोनों देश एक-दूसरे की सेनाओं को ईंधन, खाद्य सामग्री, पानी अथवा चिकित्सीय सुविधा भी प्रदान की जाएगी।

③ यह Logistic सुविधा संयुक्त सैनिक अभ्यास, मानवता रक्षा कार्यों तथा शांति अभियानों के दौरान लेन-देन किया जाएगा।

👉 यह सैन्य समझौते से अलग है।
(Defence Pact)

① इस समझौते के द्वारा अमेरिका भारत में अपना सैनिक अड्डा नहीं बना सकता और न ही युद्ध के दौरान दोनों एक-दूसरे की सहायता के लिए विवश होंगे। क्योंकि यह समझौता Defence Pact नहीं है बल्कि Logistic समझौता है।

आलोचकों की राय :-

① भारत-अमेरिका के साथ Logistic समझौता भारत की सामरिक स्वायत्तता की विदेश नीति के प्रतिकूल है। क्योंकि भारत को अमेरिका के हितों के लिए उपयोग किया जा सकता है।

② इस समझौते का ज्यादा लाभ अमेरिका को होगा, क्योंकि अमेरिका के सैनिक ऐसे क्षेत्र में तैनात हैं जबकि भारतीय सैनिकों की तैनाती सीमा है।

③ भारत-अमेरिका के बीच Logistic समझौते से भारत-चीन के बीच अविश्वास बढ़ेगा तथा रूस के साथ सामरिक संबंध भी प्रभावित होंगे।

CISMOA

[Communication Interoperability security memorandum of Agreement]:→

BECA

[Basic Exchange cooperation Agreement on Geo-Spatial information]

निष्कर्ष :→ भारत एक महाशक्ति है जबकि सं.रा. अमेरिका एक वैश्विक शक्ति है और भारत अमेरिका से सहयोग करके अपनी सामरिक क्षमता का विस्तार कर रहा है।

भारत रूस और फ्रांस के साथ भी सैनिक और सामरिक संबंध बनाने पर समानांतर बल दे रहा है। इसलिए सामरिक स्वायत्तता के उल्लंघन का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता है।

सिविल परमाणु समझौता

यह समझौता क्या है?

(1.) भारत-अमेरिका के बीच शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए (बिजली उत्पादन) सिविल परमाणु समझौता किया गया।

(2.) इस समझौते के अनुसार अमेरिका भारत को परमाणु तकनीकी एवं ईंधन प्रदान करेगा।

(3.) इस समझौते से भारत एकमात्र देश बन गया, जिसने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किया है, परन्तु भारत को अमेरिका परमाणु रियक्टर और ईंधन प्रदान करेगा।

④ इस समझौते के परिणाम स्वरूप भारत के द्वारा अपने परमाणु रियक्टर की दो श्रेणियों बनाई जाएंगी-

ⓐ शांतिपूर्ण प्रयोग हेतु।
ⓑ सैन्य अनुसंधान हेतु।

O.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

समझौते को क्रियान्वित करने के उपाय

① अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेन्सी (IAEA) के द्वारा भारत के साथ विशेष समझौता किया गया। जिसके अनुसार एजेन्सी भारत के केवल सिविल परमाणु अनुसंधान केन्द्रों का निरीक्षण करेगी।

② परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) के द्वारा भारत को विशेष छूट प्रदान किया गया।

समझौते के परिणाम

① भारत - अमेरिका सिविल परमाणु समझौते के बाद भारत ने फ्रांस, रूस, ऑस्ट्रेलिया, द० कोरिया, नामिबिया, कजाकिस्तान और जापान के साथ भी सिविल परमाणु समझौता सम्पन्न कर लिया।

② भारत की ऊर्जा सुरक्षा के अलावा यह समझौता भारत और अमेरिका के बीच बढ़ते सामरिक संबंधों का उदाहरण है।

③ इस समझौते से भारत की विशिष्ट और विशेषाधिकारवादी स्थिति बन गई। क्योंकि भारत विश्व का एकमात्र देश बन गया जिसने NPT पर हस्ताक्षर नहीं किया और उसे परमाणु तकनीकी और परमाणु ईंधन भी प्राप्त हो रहा है।

④ भारत के ऊपर लगाये गये तमाम प्रतिबंध समाप्त कर दिये गये, जो 1998 के परमाणु परीक्षण के बाद लगाये गये थे।

सिविल परमाणु समझौते में समस्या

① वर्ष 2010 में परमाणु क्षति संबंधी नागरिक जिम्मेदारी (civil liability for Nuclear Damage Act, 2010) का कानून बनाया गया।

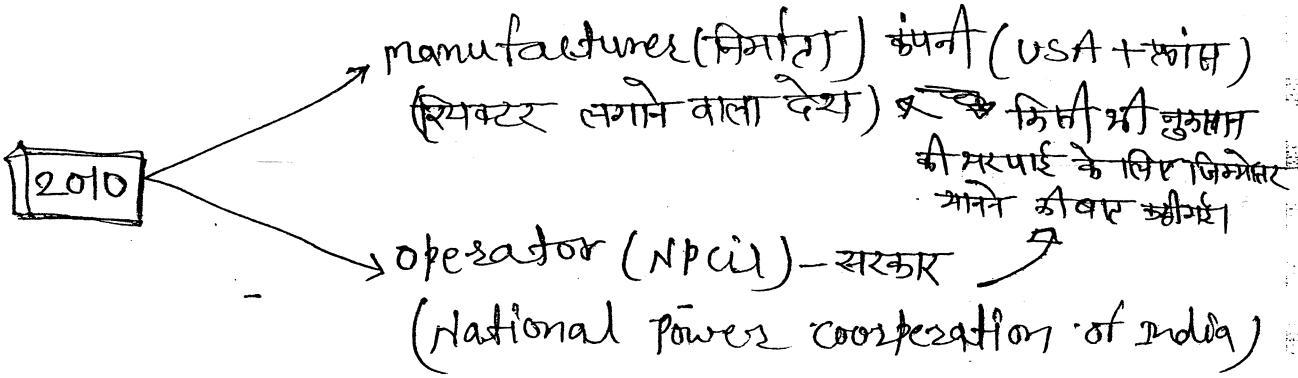

② अमेरिका के द्वारा यह कहा गया कि अमेरिका द्वारा लगाये गये परमाणु रियक्टर की निगरानी अमेरिका करेगा, अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेन्सी नहीं करेगी।

{ ट्रैकिंग क्लॉज (Tracking clause) }

विवादों का समाधान

① भारत- अमेरिका के बीच सिविल परमाणु समझौते को क्रियान्वित करने के लिए विद्यमान बाधाओं को दूर कर लिया गया और वर्ष 2015 में मोदी और ओबामा के बीच यह समझौता हुआ कि परमाणु दुर्घटना के मुआवजे के लिए Insurance Pool का निर्माण किया जायेगा तथा मुआवजा Insurance Pool देगी।

② अमेरिका ट्रैकिंग क्लॉज वापस लेने पर सहमत होगया। जिसके अनुसार भारत में लगाए गये रियक्टर की निगरानी अंतर्राष्ट्रीय परमाणु उर्जा एजेन्सी ही करेगा। जिससे भारत- अमेरिकी संबंधों में पुनः नई गतिशीलता देखने को मिली।

भारत- अमेरिका के बीच मतभेद के बिन्दु

① भारत- अमेरिका के बीच मतभेद का मुख्य मुद्दा अमेरिका की आधिपत्यवादी निर्देशक व्यवहार के विरुद्ध है। क्योंकि अमेरिका समानता के आधार पर व्यवहार करने के बजाए भारत को पिछलग्गू बनाने का प्रयत्न करता है।

② वर्तमान में वीज़ा नीति को लेकर भी भारत- अमेरिका के बीच मत भेद है और अमेरिका के द्वारा H-1B वीज़ा जो कुशल श्रमिकों को दिया जाता है, ~~कि~~ की वीज़ा राशि को बढ़ाकर 4 हजार डॉलर कर दिया गया है और वीज़ा की संख्या भी सीमित की जा रही है।

③ जबकि अमेरिका के द्वारा किसी कंपनी की ओर से L-1 वीज़ा दिया जाता है। जिसकी राशि को बढ़ाकर 4,500 $ कर दिया ~~गया~~ है।

अमेरिका की Pivot Asia Policy (एशिया केन्द्रित नीति)

→ Rebalancing Act

① अमेरिका के द्वारा अपने समूचे सैनिकों के 60% भाग की तैनाती एशिया-प्रशांत क्षेत्र में की जा रही है।

② अमेरिका के द्वारा भारत को 21वीं शताब्दी का सबसे महत्वपूर्ण सहयोगी कहा गया है।

③ चीन के साथ रचनात्मक संबंधों पर बल है परन्तु अमेरिका अपने हितों की रक्षा करेगा।

④ एशिया-प्रशांत क्षेत्र में नये मित्रों के साथ (जैसे मलेशिया) सुदृढ़ संबंध तथा पुराने मित्रों (जैसे जापान, कोरिया) के साथ बेहतर संबंधों का विकास।

⑤ इस क्षेत्र में आर्थिक संगठनों को बढ़ावा देना तथा Trans pacific Partnership को मजबूत करना।

अमेरिका – भारत और चीन

① भारत-अमेरिका के बीच बढ़ते सुदृढ़ सामरिक संबंधों को चीन अपने विरुद्ध मानता है।

अपने मित्र देशों के साथ क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग को बढ़ावा दे रहा है।

(2) समुद्री सिल्क रूट योजना के अंतर्गत चीन के द्वारा क्षेत्रीय समग्र आर्थिक सहभागिता (Regional Comprehensive Economic Partnership) के विचार को आगे बढ़ाया है। जिसमें द०-पूर्वी एशिया के 10 देश चीन, जापान, द० कोरिया तथा ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, और भारत को सम्मिलित करने का प्रस्ताव है। TPP को इसके विकल्प के रूप में देखा जा रहा है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

TPP & India

(1) भारत का इन प्रशान्त महासागरीय देशों के साथ बेहतर व्यापारिक संबंध है और इन देशों के बीच मुक्त व्यापार समझौते से भारत को व्यापारिक घाटा संभव है। क्योंकि इन देशों के बाजारों में भारतीय वस्तुएँ मंहगी हो जाएंगी।

(2) यद्यपि भारत और सिंगापुर के बीच मुक्त व्यापार का समझौता है इसलिए भारत-सिंगापुर व्यापार पर इसका कम प्रभाव होगा।

(3) इस समझौते के अंतर्गत स्वीकृत श्रम और पर्यावरणीय कानूनों के अनुसार भारत को अपने अधिनियमों में परिवर्तन करना पड़ेगा, जो भारत की वर्तमान सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है। इसलिए भारत ने फिलहाल इसमें भागीदारी से इनकार कर दिया। क्योंकि

उससे होने वाले लाभ की तुलना में घाटे की संभावना अधिक थी।

G-20

पृष्ठभूमि

1975 → G-7 ⟹ मूल उद्देश्य

ⓐ USA, Canad
ⓑ Germany, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली
ⓒ जापान

विश्व के वित्तीय प्रबंध के लिए आपसी नीतियों में समन्वय और सामंजस्य करना एवं विश्व के विभिन्न वित्तीय मुद्दों पर विचार विमर्श करना।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

1997 → G-8 (रूस)

1999 → G-20 की स्थापना की गई।
क्योंकि दुनिया के अनेक विकासशील देश शक्ति के केन्द्र के रूप में उभर रहे थे। इसलिए विश्व वित्तीय व्यवस्था के निर्माण में उनकी भूमिका को भी शामिल किया गया।

भारत, चीन, इंडोनेशिया, तुर्की, सउदी अरब, द० कोरिया — ब्राजील, मैक्सिको — द० अफ्रीका — G-8 के देश और EU

(2) अतः पहली बार G-20 के माध्यम से विकसित देशों के अलावा विकासशील देशों की भूमिका को भी वैश्विक वित्तीय प्रबंध में महत्वपूर्ण माना गया।

वैश्विक आर्थिक मंदी और G-20

(1) वर्ष 2008 की यूरोपीय-अमेरिकी आर्थिक मंदी के बाद यह माना जाने लगा कि G-8 का स्थान अब G-20 ने ले लिया है। क्योंकि वर्तमान आर्थिक विकास में विकासशील देशों की भूमिका निर्णायक बनती जा रही है।

(2) G-20 के मंच पर वैश्विक वित्तीय मुद्दों के प्रबंधन के साथ-साथ राज्यों के बीच द्विपक्षीय सहयोग का अवसर भी प्राप्त होता है।

(3) एक राज्य दूसरे राज्य के बेहतर वित्तीय प्रबंधन से सीख भी ले सकता है क्योंकि G-20 के मंच पर राज्यों के central bank के Governer का भी सम्मेलन होता है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268106159

G-20 की समस्या

(1) G-20 अभी भी एक समूह है। इसका कोई सचिवालय नहीं है।
(2) आलोचक इसे केवल इसे एक बातूनी मंच मानते हैं जहाँ राज्यों के द्वारा लिये गये ~~निर्णय~~ किसी निर्णय को क्रियान्वित करने का भी प्रावधान नहीं है।

Hongzow Conference → 2016
G-20

① एक महत्त्वपूर्ण प्रगति के अंतर्गत अमेरिका और चीन के द्वारा पेरिस पर्यावरणीय समझौते को अनुमोदित करने की घोषणा की गई।

② विश्व वित्तीय व्यवस्था में प्रयोग किये जा रहे संरक्षणवादी नीतियों के विरुद्ध असंतोष व्यक्त किया गया।

③ भारतीय प्रधानमंत्री के द्वारा आतंकी संगठनों को वित्तीय सहायता प्रतिबंधित करने की मांग उठायी।

④ शरणार्थियों की समस्या के प्रति चिंता व्यक्त की गई।

⑤ G-20 के मंच पर दक्षिण चीन सागर का मुद्दा भी उठाया गया। यद्यपि इसे सम्मेलन के अंतिम घोषणा-पत्र में शामिल नहीं किया गया।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

भारत और मध्य एशिया

(1) मध्य एशियाई देशों के साथ भारत के संबंध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक हैं।

(2) 1991 में उदारीकरण की नीति अपनाने के बाद मध्य एशियाई देशों के साथ व्यापारिक, आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया गया।

(3) मध्य एशियाई देशों के भूमि आबद्ध होने के कारण संचार संपर्क में कठिनाई बनी रहती है इसलिए ~~वर्ष 20~~

वर्ष 2012 में भारत के द्वारा "कनेक्ट सेन्ट्रल एशिया" नीति की घोषणा हुई और वर्ष 2016 में भारतीय प्रधानमंत्री के द्वारा मध्य एशिया के सभी 5 देशों की यात्राएँ की गई।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098158

भारत के मध्य एशिया में हित

① मध्य एशियाई क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न हैं। तुर्कमेनिस्तान, ईरान, रशिया, कतर के अलावा विश्व का प्रमुख गैस उत्पादक और निर्यातक देश है। इसलिए ही तुर्कमेनिस्तान और भारत के बीच TAPI गैस पाइपलाइन बिछाने का समझौता हुआ है।

② कजाकिस्तान के साथ सिविल परमाणु समझौता हुआ, कजाकिस्तान में यूरेनियम का बड़ा भण्डार है। इसलिए कजाकिस्तान भी भारत की ऊर्जा सुरक्षा में सहायक है।

③ मध्य एशियाई क्षेत्रों में भारत द्विपक्षीय व्यापार के अलावा क्षमता व्यापार कार्यक्रम में संलग्न है। जिसके द्वारा मध्य एशियाई देशों को कम्प्यूटर, तकनीकी व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

④ मध्य एशियाई देशों का मध्य के लिए अत्यधिक सामरिक महत्व भी है और ताजाकिस्तान में भारत का एकमात्र किसी विदेशी भूमि पर निर्मित सैनिक अड्डा है।

⑤ मध्य एशियाई देश भी वर्तमान में आतंकवाद, नशीली दवाओं के अवैध व्यापार, पृथकतावाद तथा नृजातीय संघर्ष से पीड़ित हैं। इसलिए अफगानिस्तान में शांति स्थापित बनाये रखना भारत एवं मध्य एशिया दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है।

⑥ भारत-ईरान-अफगानिस्तान के बीच चाबहार पत्तन के विकास के समझौते के बाद सेंट्रल एशियाई देशों के लिए कनेक्टिविटी आसान हो गई।

शंघाई सहयोग संगठन

स्थापना → 1997

सदस्य → चीन, रूस, कजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान, तजाकिस्तान

उद्देश्य :→ ① शंघाई सहयोग संगठन का मूल उद्देश्य इस क्षेत्र में विद्यमान आतंकवाद, पृथकतावाद, नशीली दवाओं के अवैध व्यापार को प्रतिबोधित करना था।

② इसके क्रमिक विकास के दौरान संगठन के मंच पर आर्थिक सहयोग को भी बढ़ावा दिया गया और वर्तमान में संगठन में सुरक्षा और सैनिक मुद्दों पर भी आपसी सहयोग लिया जा रहा है तथा इनके बीच सैन्य अभ्यास भी आयोजित हो रहे हैं।

③ विशेषज्ञों का मत है कि शंघाई सहयोग संगठन नाटो के विकल्प के रूप में बनाया जा रहा है। इसलिए इसे 'पूर्व के नाटो' का भी नाम दिया गया।

शंघाई सहयोग संगठन और भारत

① वर्ष 2016 में एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाक्रम के अंतर्गत भारत और पाकिस्तान दोनों को शंघाई सहयोग संगठन की पूर्ण सदस्यता प्रदान कर दी गई।

② शंघाई सहयोग संगठन चीन केन्द्रित संगठन है, जिससे यह प्रतीत होता है कि संगठन में चीन पाकिस्तान का समर्थन करेगा, जो भारत के लिए लाभकारी नहीं होगा।

③ भारत की सदस्यता को केवल पाकिस्तान के परिप्रेक्ष्य से देखना उचित नहीं है, क्योंकि भारत का संबंध रूस और मध्य एशियाई देशों के साथ अत्यधिक मित्रतापूर्ण है।

④ इस सदस्यता से भारत को मध्य एशियाई देशों में अपने प्रभाव बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

यूरोपियन यूनियन

{प० जर्मनी, फ्रांस, इटली, हॉलैण्ड, बेल्जियम, लक्जमबर्ग → नींव रखी

1952 :→ → यूरोपीय स्टील एवं कोयला यूनियन
+
→ परमाणु ऊर्जा के उत्पादन में सहयोग
⇓
1958 यूरोपीय आर्थिक समुदाय (रोम संधि के तत्त्व)
⇓
राजनीतिक एकीकरण की नींव रखी गयी।

- पूरे यूरोपियन आर्थिक समुदाय की एक यूरोपियन संसद का निर्माण कर दिया गया।
- यूरोपीय परिषद् में प्रत्येक सदस्य देशों के शासनाध्यक्षों को शामिल किया जाता है।
- यूरोपीय मंत्रिपरिषद् ↓ इसमें सदस्य देशों के संबंधित विभागों के मंत्रियों को शामिल किया जाता है।
- यूरोपियन आयोग ⇓ सदस्य देशों के सिविल सेवकों को शामिल किया जाता है ⇓ क्योंकि यह यूरोपियन यूनियन की एक प्रशासनिक संस्था है।
- न्यायालय ⇓ यूरोपियन देशों के बीच विद्यमान विवादों को हल करना।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Cour... acility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

→ 1970 के दशक में यूरोपियन यूनियन के प्रभाव में और वृद्धि हुई, क्योंकि जर्मनी का शक्तिशाली उभार हुआ।

→ 1973 में ब्रिटेन ने यूरोपियन आर्थिक समुदाय की सदस्यता ले ली।

* ~~सोवियत संघ के विघटन से पूर्व यूरोप व पूर्व यूरोप गिर गये।~~ (~~रोमानिया, बुल्गारिया, हंगरी, पोलैण्ड~~)

→ 1994 मास्ट्रिच सन्धि → इस संधि से यूरोपियन आर्थिक समुदाय का नाम यूरोपियन यूनियन रखा गया।

यूरोपियन यूनियन के तीन पिलर का निर्माण हुआ।

- आर्थिक समुदाय
- सुरक्षा समुदाय
- घरेलू न्याय के मामले

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268198159

→ 1995 शेनजेन संधि → इसके द्वारा यूनियन में मुक्त आवागमन की सुविधा कर दी गई। जिससे लोगों का एकीकरण हुआ।

→ लेकिन ब्रिटेन शेनजेन संधि में शामिल नहीं हुआ।

→ 1999 में पहली बार यूरोपियन यूनियन के द्वारा साझी मुद्रा यूरो के प्रयोग की घोषणा कर दी गई।

→ लेकिन यूनियन के सभी सदस्यों ने यूरो नहीं अपनाया। उनमें से ब्रिटेन भी एक था।

→ 2001 के बाद पूर्वी यूरोपीय देश भी यूनियन में शामिल हो गये।

यूरोपीय यूनियन में समस्या की शुरुआत

आर्थिक समस्या :-

① ग्रीस, स्पेन जैसे देशों के आर्थिक संकट के परिणाम-स्वरूप यूरोपियन यूनियन के संपन्न देशों के द्वारा इनकी आर्थिक सहायता का प्रस्ताव किया गया। जिससे जर्मनी, इंग्लैण्ड देशों के नागरिक असंतुष्ट हो गये।

② यूनियन के आर्थिक एकीकरण के दौरान साझी मुद्रा तो अपना ली गई परंतु एक समान आर्थिक नीतियाँ निर्मित नहीं हो पाई।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Counselling facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सामाजिक समस्या

① पूर्वी यूरोपीय देशों के नागरिक रोजगार की तलाश में जर्मनी और ब्रिटेन की ओर भागने लगे। जिससे ब्रिटिश वासियों में प्रवासियों के प्रति नकारात्मक धारणा उत्पन्न हो गई।

② सीरिया से आये शरणार्थियों ने इस समस्या को और गंभीर बना दिया।

(iii) फ्रांस और बेल्जियम पर होने वाले आतंकी हमलों के परिणाम स्वरूप ब्रिटिशवासियों को यह प्रतीत होने लगा कि यूनियन में बने रहने से खतरे ज्यादा हैं।

ब्रिटेन का यूरोपीय यूनियन से अलगाव

① यूरोपियन यूनियन की स्थापना के बाद से पहली बार कोई सदस्य यूनियन से अलग हो रहा है।

② लिस्बन संधि के अनुच्छेद 50 के अनुसार ब्रिटेन अगले 2 वर्षों में यूनियन से अलगाव की शर्तों पर बातचीत करेगा।

③ जनमत संग्रह से ब्रिटेन यूनियन से स्वाभाविक रूप से अलग नहीं होगा बल्कि उसके लिए ब्रिटिश संसद द्वारा पारित 1972 की विधि को परिवर्तित करना होगा, जिसके द्वारा ब्रिटेन EU में शामिल हुआ था।

ब्रिटेन के अलगाव का EU पर प्रभाव

① ब्रिटेन यूनियन की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और ब्रिटेन के यूनियन से अलगाव के बाद यूरोपियन यूनियन में विद्यमान आर्थिक संकट और गहरा हो गया है और पौंड भी भी ऐतिहासिक रूप से गिरा है।

② ब्रिटेन के अलगाव के बाद यूनियन के अन्य सदस्य भी अलगाव के विकल्प पर विचार कर सकते हैं।

③ ब्रिटेन का अलगाव यूरोप में बढ़ते राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों का परिणाम है। जो क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग के लिए सकारात्मक नहीं होगा।

अलगाव का प्रभाव नकारात्मक नहीं होगा

① यूरोपियन यूनियन की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था जर्मनी है और जर्मनी यूनियन को बचाये रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

② ब्रिटेन न तो शेनजेन संधि का भाग था और न ही इसने यूरो ज़ोन को स्वीकार किया था। इसलिए ब्रिटेन के अलग होने के बाद यूनियन का आर्थिक एकीकरण विघटित नहीं होगा।

③ स्वीट्जरलैण्ड और नॉर्वे जैसे देश यूनियन के सदस्य नहीं हैं फिर भी इन्होंने यूनियन के साथ मुक्त व्यापार के समझौते को क्रियान्वित किया है।

④ अतः ब्रिटेन यूनियन से अपना आर्थिक अलगाव नहीं करना चाहता बल्कि ब्रिटेन सामाजिक एवं राजनीतिक एकीकरण के विरुद्ध है।

ब्रिटेन के अलगाव का भारत पर प्रभाव

① वर्तमान में यूरोपियन यूनियन के साथ व्यापार के लिए भारत, इंग्लैण्ड और विशेषकर लंदन को व्यापारिक केन्द्र के रूप में प्रयोग करता है।

② भारत की अधिकांश कंपनियों के मुख्यालय लंदन में हैं जिन्हें अब विस्थापित करने की चुनौती उत्पन्न हो गई है

③ इंग्लैण्ड के कठोर वीज़ा नियमों के कारण पहले भारतीय पूर्वी यूरोपीय देशों के माध्यम से इंग्लैण्ड में प्रवेश कर जाते थे जो अब ~~कठी~~ कठिन होगा।

④ यूरोपीय यूनियन भारत का सबसे बड़ा द्विपक्षीय व्यापारिक सहयोगी (लगभग 75 b यूरो) है। इसलिए यूनियन की अस्थिरता भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए भी नकारात्मक है।

⑤ भारत का यूरोपियन यूनियन के सदस्यों में ब्रिटेन, फ्रांस जर्मनी, ~~पोलैण्ड~~, बेल्जियम जैसे देशों के साथ प्रमुख व्यापारिक संबंध विद्यमान है और यूनियन के ये देश भारत जैसे ~~बाज~~ बड़े बाजार को खोना नहीं चाहते। इसलिए EU और भारत के व्यापारिक और सामरिक संबंधों पर इसका मात्रात्मक प्रभाव हो सकता है; गुणात्मक प्रभाव नहीं होगा।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

अलगाव का ब्रिटेन पर प्रभाव

① ब्रिटेन को EU के प्रशासनिक खर्च के लिए वार्षिक वित्तीय योगदान नहीं करना होगा।

② यूरोपियन यूनियन में जर्मनी सबसे शक्तिशाली है और ब्रिटेन यूनियन में जर्मनी की अधीनता से मुक्त होना चाहता था।

③ ब्रिटेन में अन्य यूरोपीय देशों के प्रवासियों की संख्या में कमी होगी।

④ यूरोपियन यूनियन के अलगाव से यूनाइटेड किंगडम के भी विघटन का खतरा हो गया है क्योंकि UK में स्कॉटलैण्ड और वेल्स के निवासियों ने यूनियन में बने रहने के लिए मतदान किया था।

⑤ अभी तक सभी अंतर्राष्ट्रीय मंचों और संस्थाओं में यूरोपियन यूनियन का केवल एक प्रतिनिधि जाता था, अब इंग्लैण्ड को अपना प्रतिनिधि अलग से भेजना पड़ेगा और सभी संस्थाओं के साथ उन सदस्यता के लिए पुनः वार्ता करनी पड़ेगी।

⑥ ब्रिटेन को EU के बड़े बाजारों से वंचित होना पड़ेगा।

भारत और EU का संबंध

① भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और यूरोपियन यूनियन स्वतंत्रता, मानव अधिकार जैसे मापदंडों को केन्द्रीय महत्व देता है।

(2) वर्तमान में भारत का सबसे बड़ा द्विपक्षीय व्यापारिक भागीदार यूनियन है तथा वर्तमान में यूनियन भारत मे निवेश करने वाला प्रमुख देश भी है।

(3) यूरोपीय देश तकनीकी और वित्तीय रूप में सम्पन्न है जो भारत के मेक इन इंडिया कार्यक्रम, डिजिटल इंडिया तथा स्मार्ट सिटी के निर्माण में सहायक है।

(4) वैश्विक आतंकवाद भारत और यूनियन दोनों के लिए एक बड़ी साझी चुनौती बनगया है। और वर्तमान में फ्रांस और बेल्जियम में होने वाले हमले के बाद आतंकवाद के विरुद्ध सुदृढ़ सहयोग का निर्णय लिया गया है।

(5) भारत- EU के बीच वर्ष 2003 से शिखर वार्ता का आयोजन भी किया जा रहा है और 2016 में 13वी शिखर वार्ता का आयोजन किया गया। जिसमें आर्थिक एवं सामरिक सहयोग सुदृढ़ करने का निर्णय लिया गया।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

<u>सेवा के व्यापार के 4 mode</u>

mode-I → आउटसोर्सिंग → भारत को फायदा

mode-II → अस्थायी आवागमन → पर्यटक, मरीज → यूरोप को फायदा

mode-III → संस्थाओं की स्थापना – यूरोप को फायदा

mode-IV → प्राकृतिक व्यक्तियों (इंजीनियर, डॉक्टर) का आवागमन → भारत को फायदा

यूरोप और भारत के संबंधों में समस्या

① यूरोपीय यूनियन के द्वारा व्यापार में गैर-व्यापारिक मानकों का प्रयोग किया जाता है और वे श्रम और पर्यावरणीय मानक अपनाकर भारत की सस्ती वस्तुओं को अपने बाजारों में पहुंचने से प्रतिषेधित करते हैं।

② वे भारत के अप्रशिक्षित कुशल श्रमिकों के प्रवेश को सदैव रोकने का प्रयत्न करते हैं। तथा आउटसोर्सिंग व्यापार को भी प्रतिबंधित करते हैं।

③ वे बौद्धिक सम्पदा अधिकारों के मुद्दों पर भी भारत की आलोचना करते हैं जबकि भारत में ऑटोमोबाइल और शराब के निर्यात पर शुल्कों को कम करने की मांग करते हैं।

④ भारत-EU के बीच आर्थिक सम्बंधों में वृद्धि हो रही है परन्तु सामरिक रूप में वे एक-दूसरे के लिए प्राथमिक नहीं हैं।

यूनियन के साथ संबंधों को और बेहतर करने के उपाय :→

① भारतीय विश्वविद्यालयों में यूरोपीय भाषा के अध्ययन को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

② वर्तमान में भारत का व्यापारिक संबंध मुख्यतः जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड, हॉलैण्ड, बेल्जियम के साथ है और

यूरोप के अन्य देशों में प्रवेश के लिए अभी यूरोप को व्यापार का केन्द्र बनाने की आवश्यकता है।

③ यूरोपीय देशों में भारत के सॉफ्ट पॉवर को प्रगाढ़ बनाने की जरूरत है।

④ भारत में यूनियन के आर्थिक निवेश को बढ़ावा देने के लिए विशेष और अलग सेल (cell) की स्थापना (प्रकोष्ठ) करनी चाहिए।

Q.1. भारत और EU के बीच आर्थिक संबंधों के महत्व को उजागर कीजिए। दोनों के बीच मुक्त व्यापार में विद्यमान प्रमुख बाधाओं का उल्लेख कीजिए।

Q.2. ब्रिटेन के यूरोपियन यूनियन के अलगाव से EU का भविष्य संदिग्ध हो गया है। आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

Q.3. भारत और EU के बीच आर्थिक संबंधों में निरंतर प्रगति हो रही है परन्तु सामरिक रूप में वे एक-दूसरे के लिए आकर्षक नहीं है कारण स्पष्ट कीजिए।

MTCR → Missile Technology Control Regime
(प्रक्षेपास्त्र तकनीकी नियंत्रण व्यवस्था)

परमाणु निर्यात नियंत्रण व्यवस्था
(Nuclear Export Control Regime)

① NSG → परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (1975) → (लंदन क्लब)

② ऑस्ट्रेलिया समूह (Australia Group)
↳ स्थापना → 1985

① इसके द्वारा रासायनिक और जैविक हथियारों के निर्यात को प्रतिबंधित किया गया। क्योंकि इन्हें व्यापक नरसंहार के हथियार माना जाता है। (weapons of mass destruction)

③ प्रक्षेपास्त्र तकनीकी नियंत्रण व्यवस्था (1987)
↳ इसके द्वारा प्रक्षेपास्त्र तकनीकी के निर्यात को प्रतिबंधित किया गया और ऐसी तकनीकी जिसके द्वारा 500 kg का वजन उठाया जा सके तथा इसे 300 km तक प्रक्षेपित किया जा सके। इस तकनीकी के आदान-प्रदान को प्रतिबंधित कर दिया गया।

④ वासेनार व्यवस्था (Wassenar Arrangement) → 1996
↳ इसमें दोहरे प्रयोग की तकनीकी तथा परम्परागत हथियारों के निर्यात को प्रतिबंधित करने का प्रयत्न किया गया।

परमाणु निर्यात नियंत्रण व्यवस्था एवं भारत

① विश्व में परमाणु हथियारों को प्रतिबंधित करने के लिए परमाणु निर्यात नियंत्रण व्यवस्था का निर्माण किया गया। और वर्ष 2016 के पहले तक भारत इस व्यवस्था का भाग नहीं था, यद्यपि परमाणु अप्रसार के मामले में भारत का रिकॉर्ड पूरे विश्व में सराहनीय माना जाता है।

② वर्ष 2016 में पहली बार NSG की सदस्यता के लिए भारत ने आवेदन दिया। लेकिन चीन, आयरलैण्ड, स्वीट्जरलैण्ड जैसे देशों के विरोध के कारण भारत को NSG की सदस्यता नहीं मिल सकी।

③ वर्ष 2016 में ही भारत को MTCR की सदस्यता प्राप्त हो गई। इसलिए परमाणु निर्यात नियंत्रण व्यवस्था में भारत का पहली बार प्रवेश हुआ।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098150

MTCR की सदस्यता से लाभ

① भारत की सदस्यता से परमाणु निर्यात नियंत्रण बेहतर होगा और विश्व समुदाय के द्वारा भारत को एक उत्तरदायी राज्य के रूप में स्वीकार किया गया।

② यह उल्लेखनीय है कि चीन को प्रक्षेपास्त्र तकनीकी प्रसार में शामिल होने के कारण MTCR की सदस्यता नहीं दी गई, जबकि भारत इसमें शामिल हो गया जो एक तरीके की कूटनीतिक विजय है।

③ इस समूह में शामिल होने से भारत को प्रक्षेपास्त्र तकनीक, द्रोण तकनीक, अनमैन्ड ~~व्हीकल~~ एरियल व्हीकल और क्रायोजेनिक इंजन प्राप्त करने में सुविधा मिलेगी। जिससे भारत के तकनीकी विकास में वृद्धि होगी।

समस्या :->

① विशेषज्ञों का यह मानना है कि MTCR की सदस्यता से भारत को तकनीक मिलने की कोई गारंटी नहीं है क्योंकि MTCR के निर्देश में यह स्पष्ट लिखित है कि तकनीकी हस्तांतरित करने में सदस्य और गैर-सदस्यों के बीच कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा।

निष्कर्ष :-> MTCR की सदस्यता भारत के लिए कूटनीतिक रूप में महत्वपूर्ण है। क्योंकि NSG की सदस्यता न मिलने के बाद MTCR में शामिल होना भारत के लिए सकारात्मक है।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत – रूस संबंध

भारत – USSR (Union of Soviet Socialist Republic)

① भारत में समाजवादी आर्थिक प्रणाली अपनायी गई थी तो सोवियत संघ इसका बड़ा समर्थक था।

② USSR ने भारत की गुटनिरपेक्ष नीति का भी समर्थन किया

③ सोवियत संघ के द्वारा कश्मीर मुद्दे पर व सुरक्षा परिषद में भारत की सदस्यता का सदैव समर्थन किया गया।

④ USSR का चीन के साथ विवाद था।

⑤ USSR का पाकिस्तान के साथ कोई संबंध नहीं था।

⑥ दोनों के बीच व्यापार रूपये व रूबल में होता था।

⑦ 1971 में भारत – सोवियत के साथ शांति एवं मित्रता की संधि। (20 साल का समझौता)।

⑧ 1971 के बाद भारत अपने हथियारों के आयात के लिए पूर्णतः सोवियत संघ पर निर्भर हो गया।

⑨ 1991 के पहले भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक सहयोगी भी सोवियत संघ था।

⑩ 1991 में सोवियत संघ का विघटन।

D.K. PHOTO COURIER FACILITY (M) 9268098155

1991 में USSR का विघटन

- उत्तराधिकारी → रूस
- सोवियत से 5 मध्य एशियाई देश बाहर होगये -
  कजाकस्थान, किर्गिस्तान
  उज्बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान
  ताजाकिस्तान
- बाल्टिक देश
  ↓
  लिथुआनिया
  लाटविया
  एस्टोनिया
- काकेशस पहाड़ी से सटे देश -
  जो अलग हुए -
  ↓
  जॉर्जिया, अजरबैजान
  यूक्रेन, आर्मिनिया
  मालदोवा, बेलारूस

D.K. PHOTO COURIER FACILITY (M) 9268093159

USSR के विघटन का भारत पर प्रभाव

① भारत रूसी हथियारों के आयात पर निर्भर था इसलिए सोवियत संघ के विघटन के बाद हथियारों की आपूर्ति में बाधा उत्पन्न हुई।

② रूस की खराब अर्थव्यवस्था के कारण हथियारों की आपूर्ति समय पर भी नहीं हो पाई।

③ रूस की ओर होने वाला भारतीय व्यापार अचानक रुक गया। इसलिए भारत को वैकल्पिक बाजारों की तलाश करने लगा।

④ रूस की विदेश नीति में अमेरिका और यूरोप के साथ संबंध निर्माण को प्राथमिकता दी गई।

Que:- मोतियों के हार से आप क्या समझते हैं? यह भारत को किस प्रकार प्रभावित करता है इसका सामना करने के लिए भारत द्वारा उठाये गये कदमों की संक्षिप्त रूपरेखा दीजिए।

Ans:- ① चीन के शक्तिशाली आर्थिक उभार के परिणामस्वरूप हिन्दमहासागर क्षेत्र में हांग-कांग से लेकर सूडान तक चीन अपना प्रभुत्व बढ़ता है।

② इसके अंतर्गत हिन्दमहासागर क्षेत्र में चीन के द्वारा ग्वादर (पाकिस्तान) जैसे सैनिक अड्डे एवं हैम्बनटोटा सदृश्य व्यापारिक पत्तनों का निर्माण किया जा रहा है

③ चीन के द्वारा इस नीति के माध्यम से हिन्द महासागर क्षेत्र में व्यापारिक और सैनिक दोनों प्रभाव बढ़ा रहा है।

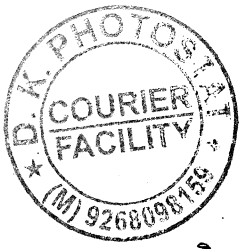

भारत को प्रभावित

① हिन्द महासागर भारतीय प्रभाव का क्षेत्र है।
② चीन का श्रीलंका, म्यांमार, बांग्लादेश में बढ़ता आर्थिक प्रभाव और सामरिक संबंध भारत के लिए सुरक्षा चुनौती के रूप में देखा जाता है।

भारत की प्रतिक्रिया

① वर्ष 2000 के बाद पहली बार अंडमान निकोबार द्वीप समूह में भारत के द्वारा एकीकृत सैनिक कमान की स्थापना की गई।

② हिन्द महासागर तटीय देशों का क्षेत्रीय सहयोग संगठन.
IOR- ARC (Indian ocean Rim Association for Regional Cooperation) (हिन्द दक्षेस)।

③ चाबहार पत्तन का विकास।

④ श्रीलंका, बांग्लादेश, मालदीव जैसे हिन्द महासागर के देशों को ज्यादा से ज्यादा आर्थिक सहायता देकर अपने सामरिक प्रभाव को बनाये रखना।

⟹ रूस की विदेश नीति में परिवर्तन का भारत-रूस संबंधों पर प्रभाव :→

① 1991 से वर्ष 2000 के बीच रूस के द्वारा अमेरिका एवं यूरोप की ओर ही झुकाव की विदेश नीति अपनाई गई।

② परन्तु वर्ष 2000 के बाद रूस के नये राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के द्वारा रूस को पुनः महाशक्ति का दर्जा दिलाने का प्रयत्न किया गया और उन्होंने यूरोप एवं अमेरिका के प्रति झुकाव की नीति को परिवर्तित किया।

रूस - चीन के बीच बढ़ते संबंध

① रूस प्राकृतिक गैस और तेल का बड़ा निर्यातक है जब चीन तेल और गैस का आयात करने वाला सबसे बड़ा देश बन गया है।

② रूस और चीन के बीच 400 b$ की गैस पाईपलाइन का समझौता हुआ है।

③ चीन रूसी हथियारों का बड़ा खरीददार भी है जबकि चीन की विनिर्मित वस्तुएँ रूसी बाजारों में बिकती है

④ रूस और चीन दोनों आपस में सहयोग करके अमेरिका के प्रभुत्व को सीमित करना चाहते हैं।

⑤ दक्षिण चीन सागर के मुद्दे पर रूस ने चीन का स्पष्ट रूप से समर्थन किया और दोनों के बीच साझे सैनिक अभ्यास भी हुये।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

रूस और पाकिस्तान

① रूस के द्वारा वर्ष 2016 में पाकिस्तान को सैनिक सहायता के रूप में ~~हेलीकॉप्टर~~ हेलिकॉप्टर दिया गया। अतः रूस और पाकिस्तान के बीच बढ़ते सैनिक संबंध अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की नवीन प्रवृत्ति है।

② वर्ष 2016 में ही पहली बार रूस और पाकिस्तान के बीच सैनिक अभ्यास भी किया गया।

③ वर्तमान में एशिया में नए शक्ति संतुलन का निर्माण हो रहा है और रूस, चीन एवं पाकिस्तान तीनों के संबंध सुदृढ़ हो रहें हैं।

④ भारत - अमेरिका के बीच बढ़ते सैनिक संबंधों को देखते हुए रूस भी नये सहयोगी की तलाश कर रहा है और पाकिस्तान को अपना हथियार बेचना चाहता है।

⑤ रूस और पाकिस्तान के सैनिक संबंधों की ~~निश्चित सीमा है~~ क्योंकि पाकिस्तान का बाजार छोटा है जो भारत का विकल्प नहीं हो सकता।

⑥ तालिबान के अफगानिस्तान और मध्य एशिया में बढ़ते प्रभाव का रूस के चेचेन्या तक ~~प्रभाव~~ प्रभाव दिखता है। इसलिए रूस और पाकिस्तान के बीच कई मुद्दों पर मतभेद है।

निष्कर्ष :- इसके बावजूद रूस और पाकिस्तान के बीच बढ़ते सैनिक संबंध भारत के लिए सुरक्षा चिंता का विषय है क्योंकि पाकिस्तान की ही मूल नीति भारत विरोधी है।

भारत-रूस संबंध

① आज भी रूस भारत का विश्वसनीय सहयोगी कहलाता है। और भारतीय रक्षा सामग्री की आपूर्ति का 60% भाग अभी भी रूस से आता है।

② रूस के द्वारा भारत को वे संवेदनशील रक्षा सामग्री प्राप्त होती है जो हमें अन्य कोई भी देश भारत को प्रदान नहीं करता।
ex. गोर्शकोव, परमाणु पनडुब्बी रूस के द्वारा दिया जाता है।

③ भारत और रूस के रक्षा संबंध केता-विक्रेता तक सीमित नहीं हैं बल्कि दोनों के बीच रक्षा सामग्री का साझा उत्पादन किया जाता है। और ब्रह्मोस प्रक्षेपास्त्र ~~दोनों~~ का विकास दोनों ने साथ मिलकर किया है।

भारत-रूस संबंधों में बदलाव कहाँ पर है?

① भारत-रूस के सामरिक और सैनिक संबंध अभी भी सुदृढ़ है परन्तु पहले इन संबंधों का आधार वैचारिक था जबकि वर्तमान में ये संबंध पैरामेट्रिक हो गये हैं।

② इसी पैराडाइम नीति का ही परिणाम है कि भारत रूस के अलावा अमेरिका, इज़राइल, फ्रांस से हथियार खरीद रहा है।

③ जबकि रूस चीन और पाकिस्तान को भी हथियार दे रहा है।

अन्य क्षेत्रों में भारत-रूस के संबंध

① सामरिक संबंधों के अलावा रूस भारत की ऊर्जा सुरक्षा को बनाये रखने भी सहायक है। और वर्तमान में ONGC के द्वारा रूस के सखालिन में सबसे बड़ा विदेशी निवेश किया गया है।

② रूस की सहायता से भारत में कुडनकुलम परमाणु रियक्टर का निर्माण किया गया है।

③ भारत और रूस के बीच के संबंध द्विपक्षीय मुद्दों पर ही बेहतर नहीं हैं बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी दोनों के बीच हितों का टकराव नहीं है।

④ अफगानिस्तान, मध्य एशिया, प० एशिया में बढ़ता आतंकवाद भारत-रूस दोनों के हितों का विरोधी है।

भारत-रूस के बीच आर्थिक संबंध

① दोनों के बीच सुदृढ़ सामरिक संबंधों के बावजूद आर्थिक संबंध अभी भी निराशाजनक हैं।

② दोनों के बीच का द्विपक्षीय व्यापार मात्र 10 Billion$ है

द्विपक्षीय व्यापारिक संबंधों को बेहतर करने के उपाय

① रूसी अर्थव्यवस्था में विविधता का अभाव है क्योंकि अर्थव्यवस्था अभी भी तेल गैस के निर्यात और सैन्य सामग्री के विक्रय पर निर्भर है।

② दोनों देशों के बीच का व्यापार अभी भी सरकार और सरकार के बीच व्यापार तक सीमित है। जिसमें निजी क्षेत्रों की भूमिका को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

③ वर्तमान में यूक्रेन संकट के बाद अमेरिका और यूरोपीय देशों के द्वारा रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाये गये हैं। जिससे रूस भारत और चीन के साथ व्यापारिक संबंध सुदृढ़ करने पर बल दे रहा है।

④ भारत के फार्मास्यूटिकल और सॉफ्टवेयर के उपयोग को रूसिया में बढ़ावा दिया जा रहा है और रूस कच्चे हीरे का बड़ा निर्यातक है जबकि भारत कटे हुये हीरों का बड़ा (आयातक) निर्यातक है इसलिए इस क्षेत्र में भी सहयोग की बड़ी संभावना है।

निष्कर्ष भारत - रूस के बीच के संबंध सदाबहार एवं मित्रतापूर्ण हैं। दोनों देशों के बीच अविश्वास का बिल्कुल अभाव है और रूस भारत का विश्वसनीय सहयोगी है। इसलिए भविष्य में भी दोनों के बीच संबंध सुदृढ़ रहेंगे।

यूक्रेन संकट

संकट :→ (i) रूस के द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण करके क्रीमिया पर नियंत्रण कर लिया गया।

(ii) यूक्रेन के पूर्वी भाग में अभी भी रूसी मूल के लोगों और यूक्रेनियों के बीच संघर्ष हो रहे हैं। अतः यूक्रेन में गृहयुद्ध जैसी स्थिति विद्यमान है।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

संकट का कारण :→

(i) यूक्रेन संकट महाशक्तियों के बीच शक्ति संघर्ष का परिणाम है।

(ii) यूक्रेन NATO की सदस्यता लेने का प्रयत्न कर रहा है जिसे रूस अपने हितों के लिए सीधा चुनौती मान रहा है।

(iii) यूक्रेन संकट रूस और उसके सटे हुए देशों के साथ नृजातीय संघर्ष का परिणाम है और सोवियत संघ के विघटन के बाद रूसी मूल के लोगों का जॉर्जियाई, यूक्रेनी लोगों के साथ संघर्ष हो रहा है।

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

संकट का परिणाम :→

(i) रूस और अमेरिका के बीच के संबंध निम्नतम बिन्दु पर आ गये और इसे विश्व में उत्पन्न होने वाले नए शीत युद्ध का भी नाम दिया गया।

(ii) रूस को G-8 से निष्कासित कर दिया गया तथा अमेरिका और यूरोप के द्वारा रूस पर कठोर लगा प्रतिबंध लगा दिया गया।

(iii) सं. रा. संघ यूक्रेन की सुरक्षा करने में विफल हो गया, क्योंकि रूस के द्वारा सुरक्षा परिषद में वीटो का प्रयोग कर दिया गया।

भारत पर प्रभाव :-

भारत के संबंध रूस और यूक्रेन दोनों के साथ मित्रतापूर्ण है। इसलिए भारत के द्वारा मध्यमार्गी की विदेश नीति अपनाई गई और यूक्रेन की ~~एकता~~

एकता-अखण्डता का समर्थन किया गया। परन्तु रूस की आलोचना नहीं की।

(ii) भारत ने क्रीमिया के जनमत संग्रह का समर्थन नहीं किया।

(iii) यूक्रेन संकट के कारण भारत अमेरिकी संबंध प्रभावित हुए; क्योंकि अमेरिका के द्वारा भारत पर दबाव का प्रयोग किया गया कि भारत रूस के साथ संबंध बेहतर न करे।

फायदा

(iv) रूस पर लगने वाले व्यापारिक प्रतिबंधों के कारण भारत-रूस व्यापारिक संबंधों के बेहतर होने की संभावना है।

Que:- भारत और पाकिस्तान के बीच सीमापार आतंकवाद संबंधों को किस प्रकार क्षतिग्रस्त कर रहा है और पाकिस्तान इस कार्यवाही के विरूद्ध भारत को किन रणनीतियों का प्रयोग करना चाहिए।

Ans: दिसम्बर 2001 में भारतीय संसद पर हमला वर्ष 2002 में जम्मू-कश्मीर में सेना के कैम्प पर आतंकी हमला। मुम्बई, पठानकोट का, ताजहोटल व पठानकोट का हमला।

भारत की प्रतिक्रिया

कूटनीतिक तरीका :- (i) पाकिस्तान में नियुक्त भारतीय राजदूत को वापस बुलाना।

(ii) दक्षेस में अफगानिस्तान, बांग्लादेश के साथ मिलके आतंकवाद के मुद्दे पर दबाव बनाना।

(iii) अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सीमापार आतंकवाद के मुद्दे को प्रभावी रूप में उठाना। और पाकिस्तान को आतंकवाद के मुद्दे पर अलग-थलग करना

रणनीतिक / सामरिक तरीका :-

(i) सीमा प्रबंध को बेहतर करना।

(ii) सैन्य बलों को आतंकवादियों तथा अवैध घुसपैठियों के विरुद्ध विशेष प्रशिक्षण और तकनीक उपलब्ध कराना।

(iii) सीमापार आतंकवाद के विरुद्ध भारत के पाकिस्तान पर हमले का विचार बिल्कुल ही तार्किक नहीं है

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Cour... acility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

संयुक्त राष्ट्र संघ (51 सदस्यों के साथ गठित)

उद्देश्य :- विश्व में विद्यमान संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान।

- राज्यों के बीच सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सहयोग के मंच के रूप में कार्य करना।
- किसी भी राज्य के आंतरिक मामले में अहस्तक्षेप नहीं होगा।
- प्रत्येक राज्य की संप्रभुता समान है।
- संयुक्त राष्ट्र संघ समानता के सिद्धांतों पर निर्मित संगठन है।
- यह मानव अधिकारों का रक्षक भी है। (10 Dec. 1948 का घोषणा पत्र)

संयुक्त राष्ट्र संघ के अंग

सुरक्षा परिषद

संरचना :- स्थायी सदस्य (P-5) → स.रा. अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस रूस, चीन

अस्थायी सदस्य (6+4 → 1963 = 10) → 2 वर्ष के लिए निर्वाचित होते हैं लेकिन लगातार दो कार्यकाल के लिए निर्वाचित नहीं हो सकते।

सदस्यों का चुनाव → क्षेत्र वार

एशिया-प्रशांत, अफ्रीका, यूरोप, लैटिन अमेरिका + अ
(प्रत्येक में से दो)

→ सुरक्षा परिषद का कोई भी निर्णय 9 सदस्यों के बहुमत से होता है।

→ वीटो के प्रयोग का अधिकार केवल स्थायी सदस्यों को होता है।

NATO – इसकी सुरक्षा केवल इसके सदस्यों को मिलती है जबकि UN की सुरक्षा सबको मिलती है।

सुरक्षा परिषद का कार्य :-

① दुनिया में शांति स्थापित करना और आक्रामक राज्य को दण्डित करना।

शांति बनाये रखने के तरीके

① राज्य के ऊपर आर्थिक प्रतिबंध लगाना।
ex. ईरान, उ० कोरी उ०-कोरिया,

② सैनिक कार्यवाही
ex. इराक, लीबिया, माली, अफ्गानिस्तान
↳ No Flying zone (उड़ान निषिद्ध क्षेत्र)

कार्यों को प्रभावशाली बनाने के लिए दूसरा विकल्प :-

① पीस कीपिंग ऑपरेशन।
ex कांगो, सोमालिया, सूडान

D. K. PHOTOSTAT (M) 9268098159
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Coun... acility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

② पीस बिल्डिंग → शांति बहाली के लिए देश के आर्थिक पुनर्निर्माण को बढ़ावा देना।
Eg. - अफगानिस्तान में

③ पीस मेकिंग → यह एक कूटनीतिक माध्यम है जिसके द्वारा संघर्ष उत्पन्न होने के पहले ही इसे प्रतिबंधित करने का प्रयास किया जाता है। इसलिए इसे निवारात्मक कूटनीति (preventive diplomacy) भी कहा जाता है।

सुरक्षा परिषद में सुधार :→

① सुधार क्यों?

Ⓐ ↳ स्थापना - 1945

Ⓑ स्थायी सदस्य → 5
कुल सदस्य संख्या → 15।

Ⓒ संयुक्त राष्ट्र संघ में यूरोप, अमेरिका का बहुमत था।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268198159

वर्तमान - 2016 में

Ⓐ स्थायी सदस्य - 5
कुल सदस्य → 193

Ⓑ वर्तमान में सं.रा.संघ में एशियाई, अफ्रीकी देशों का बहुमत स्थापित हो गया।

→ 1995 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के 50 वर्ष हुये और 1990 के बाद दुनिया में भूमण्डलीकरण का प्रभाव बढ़ा, विश्व में आर्थिक ~~अंतर्निर्भरता~~ अंतरनिर्भरता में वृद्धि हुई और आतंकवाद एवं पर्यावरण जैसी सुरक्षा की नई समस्याएँ उत्पन्न हुई। इसलिए सुरक्षा परिषद् में सुधार आवश्यक है।

② <u>किस प्रकार का सुधार</u> :-

2005-06 में UNO के महासचिव द्वारा सुधार के <u>दो मॉडल सुझाए गये</u> -

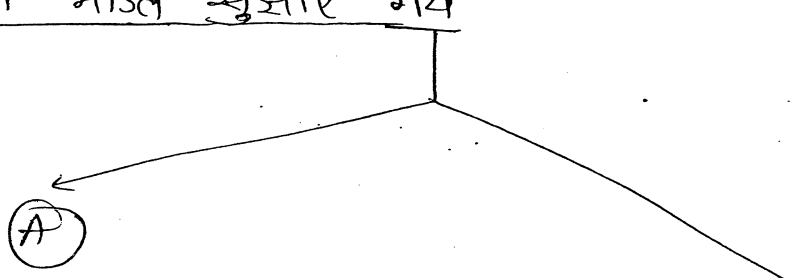

Ⓐ

① 6 नये स्थायी सदस्यों को शामिल किया जाना।

② 3 नये अस्थायी सदस्य।

③ बिना वीटो के शामिल किया जाना।

Ⓑ

① 8 नये अर्ध-स्थायी
- इनका निर्वाचन 4 वर्ष के लिए
- लगातार 2 कार्यकाल के लिए भी निर्वाचित हो सकते हैं।

② 1 अस्थायी

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY

2005 में भारत का नया मॉडल

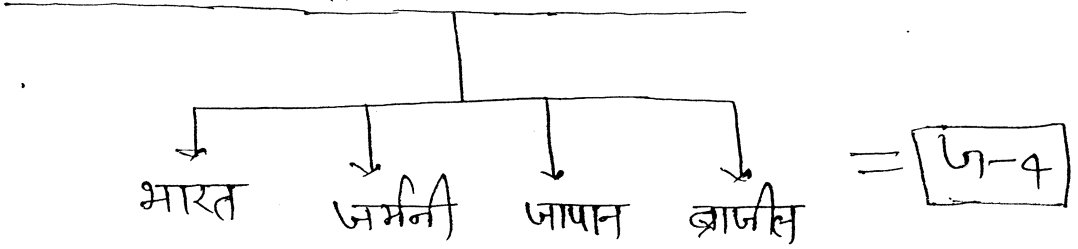

- बिना वीटो
- 6 नये स्थायी शामिल हो ⇒ 4 + 2 (अफ्रीका से)
- 4 अस्थायी सदस्य।

③ सुधार में बाधा :- (भारत की सदस्यता में बाधा)

① सुरक्षा परिषद में सुधार के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर में संशोधन की आवश्यकता है। जिसके लिए सुरक्षा परिषद के 5 स्थायी सदस्यों की सहमति की आवश्यकता है। परंतु ये स्थायी सदस्य अपना विशेषाधिकार छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं।

⑪ सुरक्षा परिषद के संभावित सुधार में जिन सदस्यों को कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा, वे किसी भी सुधारों के विरोधी हैं और इन देशों ने मिलकर 'कॉफी क्लब' का निर्माण किया है।

(iii) सुरक्षा परिषद् की स्थायी सदस्यता के लिए आजतक किसी निश्चित मानदंड का निर्माण नहीं हो पाया। इसलिए अनेक सदस्यों के दावे एक-दूसरे के विरोधी हैं।

सुरक्षा परिषद् में सुधार से भारत को क्या मिलेगा ?

दावे का आधार :- क्यों मिलनी चाहिए ?

(i) सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश
(ii) जनसंख्या का बड़ा आकार
(iii) बड़ा भू-भाग
(iv) भारत के द्वारा सं. रा. संघ की शांति सेनाओं में योगदान सबसे बड़ा।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

क्यों मिलेगी :-

(i) सुरक्षा परिषद के 5 स्थायी सदस्यों में से 4 स्थायी सदस्य समर्थन कर रहे हैं।

(ii) सुरक्षा परिषद् का विस्तार क्षेत्रीय आधार पर होता है और इस आधार से एशिया-प्रशांत से 2 सीट खाली हैं।
एशिया-प्रशांत → जापान, भारत

(iii) भारत दुनिया का बड़ा बाजार है।

निष्कर्ष :→ सुरक्षा परिषद् में भारत की स्थायी सदस्यता परिषद् के लोकतांत्रिक विस्तार का तार्किक परिणाम है और यह भारत की सदस्यता का ~~परिणाम~~ मुद्दा नहीं है बल्कि संयुक्त राष्ट्र संघ को प्रभावशाली और शक्तिशाली बनाने का विषय है।

सदस्यता से भारत को लाभ?

(i) भारत एक महाशक्ति है जो G-20 का सदस्य है, और NSG की सदस्यता का दावेदार भी है। इसलिए सुरक्षा परिषद् की सदस्यता से भारत के महाशक्ति के दावे की वैश्विक स्वीकृति हो जायेगी।

(ii) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रमुख मुद्दों पर भारत की भूमिका का विस्तार होगा। क्योंकि भारत भी निर्णय निर्माण में शामिल होगा।

(iii) संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रभाव बढ़ने के साथ-साथ महाशक्तियों के साथ द्विपक्षीय संबंध भी सुदृढ़ होंगे।

(iv) संयुक्त राष्ट्र संघ के सुधार के लिए चार्टर के संशोधन में भी भारत की स्वाभाविक भूमिका हो जायेगी।

(v) सुरक्षा परिषद् की स्थायी सदस्यता मिलने से कोई राज्य शक्तिशाली नहीं हो जाता, बल्कि शक्तिशाली होने के कारण राज्य को परिषद् की सदस्यता प्राप्त होती है।

सुरक्षा परिषद में वीटो :→

① सुरक्षा परिषद् में किसी भी प्रस्ताव को पारित कराने के लिए परिषद् को 9 सदस्यों के समर्थन की आवश्यकता होती है। परन्तु स्थायी सदस्यों को प्रस्ताव के विरुद्ध नकारात्मक मत देने का भी अधिकार है (Art. 27) जिसे लोकप्रिय रूप में वीटो कहा जाता है।

② स्थायी सदस्य की अनुपस्थिति को वीटो नहीं माना जायेगा।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098139

वीटो के विरुद्ध तर्क

(i) संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर में सभी राज्यों की समान संप्रभुता का सम्मान किया जाता है, परन्तु वीटो के माध्यम से 5 महाशक्तियों को विशेषाधिकार प्रदान कर दिया गया है जो ~~सामान्यतः~~ समानता और लोकतंत्र की भावना के प्रतिकूल है।

(ii) महाशक्तियों के द्वारा वीटो का दुरुपयोग अपने हितों के लिए किया जाता है जो सुरक्षा परिषद् द्वारा स्थापित शांति प्रयासों में सबसे बड़ी बाधा है।

(iii) वीटो का प्रावधान सुरक्षा परिषद के विस्तार में भी जटिलता उत्पन्न करता है क्योंकि संभावित नये स्थायी सदस्यों को वीटो प्राप्त नहीं होगा।

वीटो के पक्ष में तर्क :-

(i) वीटो एक विशेषाधिकार नहीं, बल्कि विशेष उत्तरदायित्व है।

(ii) वीटो के द्वारा सुरक्षा परिषद का निर्णय ज्यादा लोकतांत्रिक बन जाता है क्योंकि प्रत्येक सदस्य की निर्णय निर्माण में समान भूमिका होती है।

निष्कर्ष :- सैद्धांतिक रूप में वीटो का विचार अलोकतांत्रिक प्रतीत होता है परन्तु निर्णय निर्माण में इसका व्यावहारिक महत्व है; जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Computer Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Computer Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सामाजिक – आर्थिक परिषद्

संरचना :

1. 54 सदस्य
2. महासभा द्वारा निर्वाचन

एजेन्सी

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)
2. खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO)
3. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)
4. सं. रा. संघ वैज्ञानिक, सांस्कृतिक शैक्षिक संगठन (UNESCO)
5. सं. रा. संघ शरणार्थी एजेन्सी

कार्यक्रम

1. सं. रा. संघ विकास कार्यक्रम (UNDP)
2. सं. रा. संघ पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) → 1972

कोष

→ UNICEF (सं. रा. संघ अंतर्राष्ट्रीय बाल आपदा कोष)
→ अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
→ अंतर्राष्ट्रीय पुनर्संरचना एवं विकास बैंक (IBRD) → विश्व बैंक

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Co... ...acility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य (Millenium Development Goal) (MDG)

(i) वर्तमान में सं.रा. संघ की सामाजिक भूमिका में निरंतर विस्तार हो रहा है इसलिए इसे सुरक्षा एवं राजनीतिक संगठन मानने के बजाए <u>सामाजिक संगठन</u> के रूप में संबोधित किया जा रहा है।

(ii) सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य स्वीकार करते हुए वर्ष 2015 तक विश्व से गरीबी निवारण का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

(iii) शिशु मृत्युदर को कम करना।

(iv) लैंगिक समानता।

(v) सार्वभौमिक निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा।

(vi) HIV- एड्स का उन्मूलन।

(vii) सतत विकास को बढ़ावा देना।

⇒ सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य प्राप्त करने में देशों की प्रगति अलग-अलग है चीन के द्वारा इन लक्ष्यों को प्रभावी रूप में अर्जित किया गया है भारत की भूमिका मध्यम है यद्यपि शिशु मृत्युदर भारत में 5 से नीचे हो गया है।

⇒ सहारा क्षेत्र के अफ्रीकी महाद्वीप के देश इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में बुरी तरह तरीके से विफल रहे हैं।

⇒ वर्तमान विश्व में विकसित और विकासशील देशों के बीच गहरी आर्थिक खाई बनी हुई है। वैश्विक वित्तीय संस्थाओं पर विकसित देशों का नियंत्रण है, वित्त और तकनीकी पर भी उनका प्रभुत्व है। इसलिए आर्थिक रूप में विषमता मूलक विश्व में सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में कठिनाईयाँ आ रही हैं।

⇒ विकसित देशों के द्वारा विकासशील देशों के विकास के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया गया, परंतु विकासशील देशों को यह सहायता उपलब्ध नहीं हो सकी।

सतत् विकास लक्ष्य

① वर्ष 2015 तक सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सके।

② वर्ष 2015 में सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों को परिवर्तित करके सतत् विकास लक्ष्य के रूप में परिवर्तित कर दिया गया।

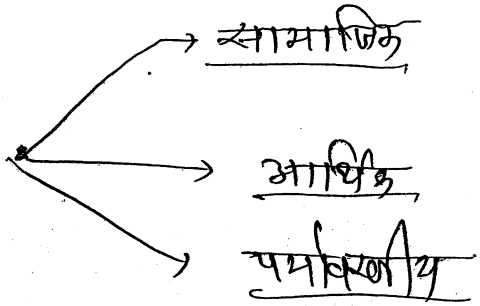

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Coaching Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सामाजिक

(i) लैंगिक उत्थान

(ii) लोगों को पोषण, स्वस्थ स्वच्छता व स्वास्थ्य की सुविधा उपलब्ध कराना।

आर्थिक :- (i) देश के अंदर विद्यमान आर्थिक विषमता को दूर करना तथा देशों के बीच विद्यमान आर्थिक विषमता को भी समाप्त करना।

(ii) सर्व समावेशी विकास और शहरी विकास को पर्यावरणीय दृष्टिकोण से या सतत् विकास के लक्ष्यों से समायोजित करना।

~~(iii)~~ या

पर्यावरणीय

पारिस्थितिकी तंत्र एवं जैव-विविधता की रक्षा तथा महासागरीय पर्यावरण की रक्षा।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098158

विकसित	विकासशील
① • तकनीकी संपन्न • जनसंख्या कम वित, प्रति व्यक्ति आय उच्च	① • जनसंख्या ज्यादा (10%) • गरीबी • निरक्षरता • कुपोषण • बीमारी
② अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं पर नियंत्रण। ex. IMF, WB	② कर्ज का बोझ, आधारभूत संरचना का अभाव, वित्तीय संस्थाओं पर नियंत्रण का अभाव।

③ विनिर्मित वस्तु का निर्यात ④ कच्चे पदार्थों के निर्यात

महासभा (General Assembly)

① सभी सदस्यों का प्रतिनिधित्व होता है और सभी सदस्यों को समान मतदान का अधिकार है।

② बैठक → September

③ समितियाँ → आर्थिक मामलों की समिति
प्रशासनिक मामलों की समिति
निःशस्त्रीकरण की समिति

महासभा का कार्य :→

① प्रस्ताव पारित करती है जिसका नैतिक दायित्व होता है वैधानिक नहीं।

② सुरक्षा परिषद् के सदस्यों का निर्वाचन।

③ सामाजिक - आर्थिक परिषद् के सदस्यों का निर्वाचन

④ अंतर्राष्ट्रीय न्यायालयों के सदस्यों का निर्वाचन।

⑤ सं. रा. संघ का बजट पारित करती है।

आलोचना :→

① 1970 के दशक में महासभा के मंच पर विकासशील देशों ने विश्व में आर्थिक विषमता के मुद्दे को

जोर-शोर से उठाया था परन्तु वर्तमान में विकसित देशों के द्वारा जान-बूझकर आर्थिक मुद्दों को UNO के मंच से निष्कासित कर दिया गया है। और आतंकवाद, पर्यावरण जैसे मुद्दे प्रभावी हो गये हैं।

अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय [International Court of Justice]

(i) यह विश्व के देशों के बीच के वैधानिक विवाद को हल करता है।
→ वैधानिक विवाद: ऐसा विवाद जो अंतर्राष्ट्रीय समझौतों से जुड़ा हुआ है।

(ii) न्यायालय में ~~वि~~ कोई भी विवाद राज्य के द्वारा लाया जा सकता, किसी व्यक्ति के द्वारा नहीं।

(iii) विवाद दो राज्यों की सहमति से या एक पृथक राज्य भी ला सकता है।

सलाहकारी ~~परिषद~~ शक्ति :→

(i) संयुक्त राष्ट्र संघ की कोई भी एजेन्सी किसी वैधानिक विषय पर, ~~अ~~ न्यायालय से सलाह ले सकती है।

* 15 न्यायाधीश होते हैं। लेकिन एक राज्य से 2 नहीं होते
* कार्यकाल → 9 वर्ष है।

ICC → (International Criminal Court)
↳ ICJ से अलग संस्था

(i) अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय का गठन 1998 में किया गया। जिसके द्वारा उन व्यक्तियों को दण्डित किया जाता है जिन्होंने मानव नरसंहार किया है।

(ii) ICC का मुख्यालय हॉलैण्ड हेग में है परंतु किसी देश में भी इसके अधिकरण का गठन किया जा सकता है।

Parmanent court of Arbitration (PCA)
(विवादों को हल करने का स्थायी न्यायालय)
↳ ICJ से अलग संस्था।

(i) इसमें न्यायाधीशों के चयन का अधिकार विवाद में शामिल पक्षों को दिया जाता है।

(ii) इसमें दो पक्ष आपसी सहमति से भी जा सकते हैं और कोई एक राज्य भी विवाद समाधान के लिए इसका सहारा ले सकता है।

(iii) बंगाल की खाड़ी के समुद्री सीमा विवाद को हल करने के लिए भारत एवं बांग्लादेश दोनों ने इसे हल करने के लिए अपील की।

(iv) जबकि दक्षिण चीन सागर के मुद्दे पर फिलीपींस के द्वारा न्यायालय में यह मामला दायर किया गया।

संयुक्त राष्ट्र संघ का सचिवालय

(1) यह UNO की प्रशासनिक इकाई है।
(2) विश्व के अधिकांश देशों के कर्मचारी यहाँ काम करते हैं। लेकिन इसमें भी विकसित देशों के कर्मचारियों की संख्या ज्यादा होती है।

⇒ (i) सचिवालय का प्रशासनिक प्रधान महासचिव कहलाता है। महासचिव का निर्वाचन प्रत्येक 5 वर्ष के लिए होता है और इसे लगातार दूसरा कार्यकाल भी दिया जा सकता है।

(ii) महासचिव का निर्वाचन क्षेत्र के अनुसार निश्चित होता है जैसे एशिया - प्रशांत, अफ्रीका, यूरोप।

(iii) वर्तमान महासचिव एशिया-प्रशांत क्षेत्र से है और अगला महासचिव पूर्वी यूरोपीय देशों से निर्वाचन होगा।

(iv) महासचिव के निर्वाचन के लिए पहली बार उम्मीदवारों के साक्षात्कार लिये जा रहे हैं और निर्वाचन को पारदर्शी बनाये जाने का प्रयास किया जा रहा है।

(v) महासचिव का निर्वाचन सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों के वेश से नहीं हो सकता।

निर्वाचन में समस्या :→

① महासचिव का निर्वाचन पारदर्शी नहीं होता। और इस पर अमेरिका तथा अन्य महाशक्तियों का नियंत्रण होता है।

② महासचिव के दूसरे कार्यकाल को भी समाप्त करने का निर्णय किया गया है जिससे वह निष्पक्ष और तटस्थ रूप में कार्य कर सके।

महासचिव की भूमिका

① महासचिव संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रशासनिक प्रधान के अलावा विश्व का पहला कूटनीतिज्ञ भी होता है।

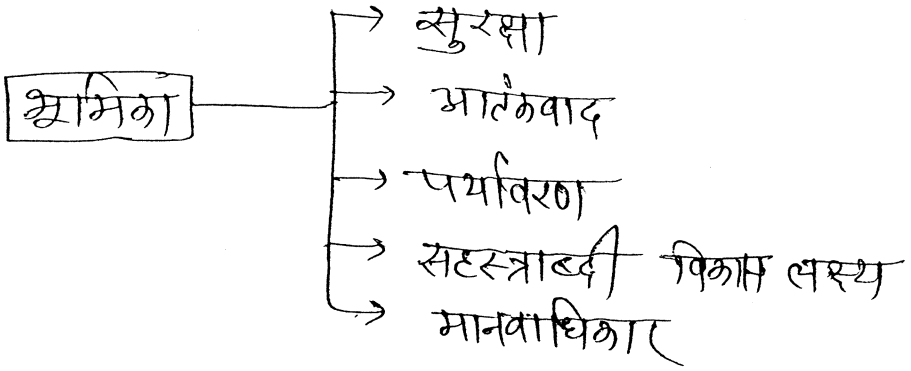

भूमिका
- सुरक्षा
- आतंकवाद
- पर्यावरण
- सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य
- मानवाधिकार

(i) सुरक्षा परिषद् के द्वारा माली में सैनिक कार्यवाही से शांति स्थापना का प्रयत्न किया गया तथा UNO के महासचिव घाली ने 'एजेण्डा फॉर पीस' के द्वारा विश्व में शांति स्थापना पर बल दिया।

(ii) महासचिव कोफी अन्नान के द्वारा सुरक्षा परिषद के 1373 प्रस्ताव का समर्थन किया गया। जिसमें आतंकवादियों को सभी प्रकार की सहायता देने के लिए प्रतिबंध लगाया गया था।

(iii) पेरिस पर्यावरणीय समझौता (सम्मेलन) में महासचिव बान-की-मून के द्वारा सतत विकास के लक्ष्य को सुदृढ़ करने पर बल दिया गया।

(iv) वर्ष 2015 में बान-की-मून के नेतृत्व में ही सतत् विकास लक्ष्यों को स्वीकार किया गया, जिससे विश्व में शांति की परिस्थितियों का निर्माण हो सके।

(v) सीरिया के शरणार्थियों को शरण देने के लिए UNO महासचिव के द्वारा यूरोपीय देशों से अनुरोध किया गया।

निष्कर्ष :- वि॰ UNO विश्व में शांति और विकास के लिए कार्य करता है जिसमें महासचिव की भूमिका प्रेरक की होती है।

Que UNO में भारत की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

- → महासभा में भूमिका
- → सुरक्षा परिषद् में " "
- → अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में " "
- → शांति - निर्माण में " "
- → लोकतांत्रीकरण में " "

D. K. PHOTOSTATE COURIER FACILITY (M) 9268098158

Que. भूमण्डलीकरण के वर्तमान दौर में संयुक्त राष्ट्र संघ की परिवर्तित भूमिका का उल्लेख कीजिए।

Ans. ① UNO का मूल कार्य विश्व में शांति और सुरक्षा बनाये रखना है और परम्परागत रूप में UNO के द्वारा देशों के बीच विवाद का समाधान किया गया जबकि वर्तमान में देशों के आंतरिक मामलों भी हस्तक्षेप किया जा रहा है।

(ii) आतंकवाद विश्व सुरक्षा के लिए एक नवीन चुनौती बन गई है इसलिए 1267, 1373 नामक प्रस्ताव पारित किये गये हैं, UNO ने

(iii) संयुक्त राष्ट्र संघ की बढ़ती सामाजिक भूमिका (सतत् विकास लक्ष्य)।

(iv) पर्यावरणीय समस्या को हल करने के लिए किये गये जो दार प्रयास (1992-ऋषी सम्मेलन)।

Que.3 वैश्विक आतंकवाद के समाधान में UNO की भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

Que.4 वर्तमान विश्व का शरणार्थी संकट मानवाधिकार के लिए एक बड़ी चुनौती है। इस समस्यों को हल करने में UNO की पहल का मूल्यांकन कीजिए।

भारत - अफ्रीका संबंध

① भारत और अफ्रीका के बीच बड़ा ही वैचारिक संबंध रहा है। यह साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, रंगभेद नीति के विरोध में था।

② भारत - अफ्रीका के संबंध दक्षिण - दक्षिण एकता के विचार पर आधारित थे।
जैसे एशियाई - अफ्रीकी एकता

③ अफ्रीका की मुक्ति के लिए भारत का बड़ा योगदान है। जैसे नेल्सन मण्डेला के विचारों पर गांधी के विचारों का प्रभाव।

⇒ 1990 के बाद संबंधों में परिवर्तन :→

भारत में परिवर्तन

भारत ने उदारीकरण की नीति अपनाई। व्यापार, निवेश विदेश नीति का महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया।

अफ्रीका

- अफ्रीका में साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, रंगभेद की नीति की समाप्ति हो गई।
- अफ्रीका में उदारीकरण एवं व्यापार को बढ़ाने की नीति अपनाई गई।
- लोकतांत्रिक शासन प्रणाली हुआ (नृजातीय संघर्ष कम होने से)

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 926809815

भारत - अफ्रीकी संबंधों का नवीन आधार :-

आर्थिक संबंध :-
- व्यापार
- निवेश
- तेल & गैस
- प्राकृतिक संसाधन

व्यापार :-

(i) भारत और अफ्रीकी देशों के बीच वर्तमान द्विपक्षीय व्यापार 70 Billion Dollar है।

(ii) भारतीय दवाइयों का सबसे बड़ा निर्यात नाइजीरिया में होता है।

(iii) भारत की निजी कंपनियों रिलायंस, टाटा, एयरटेल, भारतीय महिन्द्रा ने अफ्रीकी देशों में बड़ा निवेश किया है।

(iv) भारत फिलहाल तेल और गैस के आयात के लिए पश्चिम एशियाई देशों पर अतिनिर्भर है। जिसे संतुलित करने के लिए अफ्रीका से तेल-गैस आयात पर बल दिया जा रहा है और अफ्रीकी देशों नाइजीरिया, सूडान, अंगोला से भारत के कुल तेल आयात का 20% भाग मंगाया जा रहा है।

(v) प्राकृतिक संसाधन :-

(i) अफ्रीका महाद्वीप हीरा, सोना, चांदी, प्लेटीनम, लोहा जैसे संसाधनों से सम्पन्न है इसलिए अफ्रीका के साथ व्यापार का अतिरिक्त फायदा मिलता है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268998139

आर्थिक विकास में समस्याएँ :-

(i) अफ्रीका और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा 200b$ है।

(ii) अमेरिका का अफ्रीका के साथ द्विपक्षीय व्यापार 150 b$ है। अत: भारत-अफ्रीकी संबंधों में वृद्धि की असीम संभावनाएँ हैं।

(iii) अफ्रीका महाद्वीप के बाजारों में चीनी वस्तुओं का दबदबा है और भारत को अपना व्यापारिक प्रभाव बढ़ाने के लिए सरकारी नियमों को आसान बनाना होगा तथा Doing Ease in Business में भी सुधार की आवश्यकता है।

(iv) अमेरिका के अफ्रीका महाद्वीप के 50 देशों में दूतावास हैं।

(v) चीन के अफ्रीका के 49 देशों में दूतावास हैं जबकि भारत के दूतावास मात्र 29 हैं।

(vi) भारत – अफ्रीका के व्यापारिक संबंध कुछ देशों तक ही सीमित हैं। जिसमें द. अफ्रीका, नाइजीरिया, सूडान और अंगोला हैं। इसे ज्यादा विविधतावादी बनाने की आवश्यकता है।

<u>क्षमता निर्माण कार्यक्रम</u> (Capacity Building prog.)

(1) भारत के लिए अफ्रीका महाद्वीप केवल एक बाजार नहीं है, बल्कि भारत के द्वारा अफ्रीकियों के मानव संसाधन विकास (क्षमता निर्माण कार्यक्रम) में उल्लेखनीय योगदान दिया जा रहा है।

(a) प्रतिवर्ष 50 हजार अफ्रीकी छात्रों को अध्ययन के लिए भारत में छात्रवृत्ति प्रदान करना।

(b) अफ्रीकी लोगों को चिकित्सा, प्रबंध, कम्प्यूटर, शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण देना।

(c) भारत के द्वारा अफ्रीकी समुदाय के लोगों विभिन्न व्यावसाय व तकनीकी क्षेत्रों में भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है और क्षमता निर्माण कार्यक्रम की वजह से अफ्रीकी भारत के योगदान को अत्यधिक सकारात्मक मानते हैं।

सुरक्षा के क्षेत्र में :→

SAGAR → Security and Growth for All

(i) भारत के द्वारा मॉरीशस, सेशल्स जैसे देशों के साथ सुरक्षा संबंध सुदृढ़ किये जा रहे हैं।

(ii) सोमालिया के समुद्री डकैतों से सुरक्षा के लिए भी अफ्रीकी देशों के साथ सहयोग किया जा रहा है।

(iii) अलशबाब, बोको हराम जैसे आतंकी संगठन अफ्रीकी महाद्वीप के देशों के लिए सुरक्षा की गंभीर चुनौती उत्पन्न कर रहे हैं और भारत एवं अफ्रीकी देशों के बीच आसूचना, प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग हो रहा है।

अफ्रीका महाद्वीप में भारतीय मूल के लोगों की उपस्थिति :→

(i) अफ्रीका महाद्वीप में द० अफ्रीका, कीनिया, युगाण्डा मॉरीशस में भारतीय मूल के लोगों की बड़ी संख्या है जो वर्तमान में बड़े पदों पर हैं और बड़े उद्यमी भी बन चुके हैं।

विकासशील देशों के बीच का आपसी सहयोग (दक्षिण – दक्षिण सहयोग)

- BRICS → 2009
- IBSA → 2003

(II) सुरक्षा परिषद के विस्तार के संबंध में भी दोनों एक-दूसरे के दावे का समर्थन कर रहे हैं।

BRICS

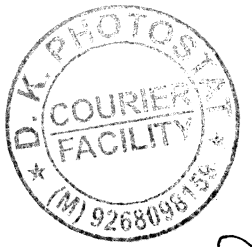

(I) ब्रिक्स देशों का आर्थिक महत्व निर्णायक रूप में बढ़ने लगा, क्योंकि ब्रिक्स में शामिल अर्थव्यवस्थाओं का आकार G-7 की अर्थव्यवस्थाओं से ज्यादा बड़ी होने की संभावना व्यक्त की गई।

(II) यूरोप और अमेरिका की आर्थिक मंदी के बाद तथा ब्रिटेन के EU से अलगाव के पश्चात् यूरोप और आर्थिक मंदी के चपेट में आ गया।

(III) इसीलिए ब्रिक्स अर्थव्यवस्थाओं को विश्व विकास के इंजन के रूप में प्रस्तुत किया गया।

समस्या :-

(I) चीन के द्वारा एशियाई आधारभूत संरचना निवेश बैंक (AIIB) के निर्माण के बाद ब्रिक्स विकास बैंक का महत्व स्वाभाविक रूप में कम हो गया है।

(II) चीन के विकास आर्थिक विकास में भी कमी दर्ज की जा रही है।

(III) ब्राजील और द० अफ्रीका में राजनीतिक अस्थिरता विद्यमान है। ब्राजील के राष्ट्रपति के विरुद्ध महाभियोग लाया गया है जबकि द० अफ्रीकी राष्ट्रपति पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप है।

* अफ्रीका महाद्वीप में भारत और चीन के बीच की प्रतिस्पर्द्धा :→

(I) अफ्रीकी महाद्वीप में भारतीय वस्तुओं को चीनी सस्ती वस्तुओं के द्वारा कड़ी चुनौती प्राप्त होती है।

(II) चीन अफ्रीकी देशों को आर्थिक सहायता देने वाला सबसे बड़ा देश है। इसलिए उसका soft power अफ्रीकी देशों में तुलनात्मक रूप में ज्यादा है।

(III) भारत और चीन के बीच अफ्रीका महाद्वीप में सहयोग की भी बड़ी संभावना है, क्योंकि दोनों अफ्रीका महाद्वीप के तेल और गैस के मैं आयात पर निर्भर देश है। इसलिए तेल-गैस के उत्पादन एवं उनके परिवहन में सहयोग कर सकते है।

(iv) भारत के लोकतांत्रिक पंथनिरपेक्ष संघीय शासन का मॉडल अफ्रीकी देशों के लिए अत्यधिक आकर्षक है।

(v) भारती भारत की उपस्थिति अफ्रीकी महाद्वीप में निजी कंपनियों के माध्यम से है जबकि अफ्रीका में चीन के सार्वजनिक उद्योगों का निवेश है।

D. K. PHOTOSTAT
(M) 9268098159
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

D. K. PHOTOSTAT
(M) 9268098159
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

भारत - भूटान

भारत- भूटान संबंधों का विशिष्ट महत्व :-

(I) भारत एक उपमहाद्वीपीय आकार का देश है जबकि भूटान की आबादी महज़ 7 लाख है। इसके बावजूद दोनों के बीच अत्यधिक मित्रतापूर्ण संबंध हैं।

(II) भूटान की रक्षा के लिए भूटान में भारतीय सेनाओं को तैनात किया गया है।

(III) भूटान दक्षिण एशिया का एकमात्र देश है जिसका चीन के साथ कोई कूटनीतिक संबंध नहीं है।

(IV) भारत- भूटान के बीच लोगों के मुक्त आवागमन का प्रावधान है और मुक्त व्यापार की भी व्यवस्था है।

भारत- भूटान मित्रता संधि 1949 :-

(I) दोनों देशों के बीच मित्रतापूर्ण संबंधों का आधार 1949 की संधि है। जिसमें यह उल्लिखित है कि दोनों देशों के नागरिकों को एक-दूसरे देश में नागरिक का दर्जा दिया जाएगा।

(ii) भूटान किसी अन्य देश से हथियार खरीदने से पहले भारत से परामर्श करेगा।

(iii) दोनों देशों के निवासी एक-दूसरे देश में मुक्त आवागमन कर सकेंगे।

(iv) सुरक्षा के संबंध में दोनों एक-दूसरे का सहयोग करेंगे।

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY

भारत-भूटान संबंध

(1) भारत के द्वारा प्रदान की गई विदेशी राज्यों को आर्थिक सहायता में भूटान का हिस्सा सबसे बड़ा है।

(2) दोनों देशों के बीच जल-विद्युत उत्पादन में सहयोग क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग का मॉडल है। ~~पुक~~ पुनखा, ताला जल विद्युत परियोजना से दोनों देशों को लाभ प्राप्त प्राप्त हो रहा है।

(3) भूटान के पास 10 हज़ार मेगावाट जल विद्युत उत्पादन की क्षमता है जबकि भारत ऊर्जा-आयात पर निर्भर राज्य है।

(4) भूटान की सीमा भारत के पूर्वी-पूर्वी राज्यों से मिलने के कारण भारतीय सुरक्षा के लिए अत्यधिक संवेदनशील हो जाती है और दोनों देशों के द्वारा आतंकवाद के विरुद्ध अनेकोबार साझे अभियान चलाये गये हैं।

भारत का पड़ोसी देशों के साथ संबंध

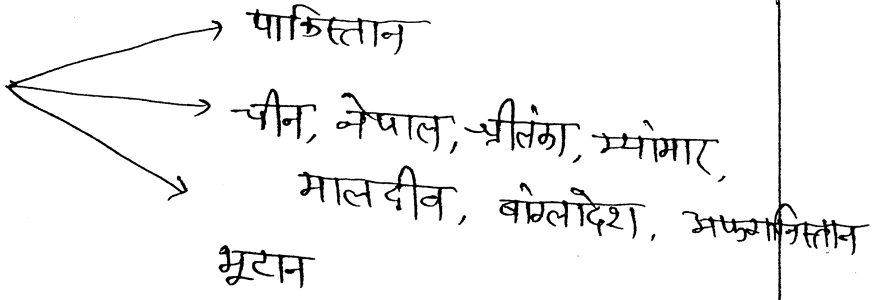

(5) भौगोलिक रूप में भूटान तीन ओर भारतीय सीमा से घिरा हुआ है और बौद्ध धर्म के साझे सांस्कृतिक आधार दोनों के बीच संबंधों को प्रगाढ़ बनाते हैं।

(6) वर्तमान में भूटान में भी लोकतांत्रिक शासन अपना लिया गया है और भूटान में राजतंत्र से लोकतंत्र की ओर का संक्रमण शांतिपूर्ण रूप में हुआ।

भारत - भूटान - चीन

(1) भूटान चीन और भारत के बीच स्थित एक 'बफर' राज्य है और भूटान एक भूमि आबद्ध देश भी है जिसका 90% व्यापार भारत के साथ होता है।

(2) चीन और भूटान के बीच कूटनीतिक संबंध नहीं हैं।

③ चीन और भूटान के बीच उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर विवाद बना हुआ है जो चुम्बी घाटी के निकट है।

④ भूटान के अनुसार जब तक चीन-भूटान के बीच सीमा विवाद हल नहीं होगा तब तक भूटान चीन के साथ संबंध सामान्य नहीं करेगा।

संबंधों में भविष्य की चुनौतियाँ

① भारत-भूटान संबंध का मूलआधार जल-विद्युत उत्पादन क्षेत्र में किया गया सहयोग है और वर्तमान में इन संबंधों को विविधतापूर्ण बनाने की आवश्यकता है।

② वर्तमान में भूटान का शासन लोकतांत्रिक हो चुका है, परिणामस्वरूप कुछ राजनीतिक दल भूटान-चीन संबंधों को भी सुदृढ़ करने के समर्थक हैं।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

डायस्पोरा

↓

भारतीय मूल के व्यक्तियों का विश्व के विभिन्न भागों में निवास।

(NRI + PIO OCI)
⇓
डायस्पोरा

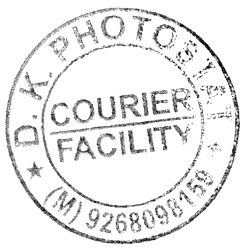

NRI (Non Resident Indian)
(अनिवासी भारतीय)

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

- भारतीय नागरिक → भारतीय पासपोर्ट धारक। ← Tax से छूट दी गई है।
- वर्ष में 182 से ज्यादा दिन विदेशों में रहते हैं।

PIO → person of Indian origin
(भारतीय मूल के व्यक्ति)

- जो लगभग 4 पीढ़ी पहले विदेशों में जा चुके हैं।
- उन्होंने विदेशी नागरिकता भी ले ली है।
- वर्ष 2002 में PIO को भारत से जोड़ने के लिए PIO card जारी किया गया।
- PIO card के द्वारा भारतीय मूल के व्यक्तियों को वे सभी सुविधाएँ प्रदान कर दी गई जो NRI को प्राप्त हैं।
- उन्हें 15 वर्षों तक भारत में आने के लिए ~~बहुउद्दे~~ बहुउद्देश्यीय वीज़ा भी दिया गया।
- भारतीय मूल के व्यक्ति एक बार की भारत यात्रा में 6 महिने / 180 दिन लगातार भारत में रह सकते हैं। जिसके लिए उन्हें FRRO में Registration से छूट है।

PIO से ज्यादा OCI को सुविधा

OCI → (Overseas Citizenship of India)

- भारतीय मूल के व्यक्ति जो 1950 के बाद भारत से गये और वर्तमान में विदेशी नागरिकता प्राप्त कर चुके हैं।
- वर्ष 2005 में इन विदेशी नागरिकों के लिए OCI card जारी किया गया। जिसके द्वारा इन्हें वे सारी सुविधाएँ उपलब्ध करा दी गई, जो NRI को प्राप्त है।
- OCI Card धारकों को भारत में आने के लिए आजीवन बहुउद्देश्यीय वीज़ा प्रदान किया गया।
- इनके लिए यह भी प्रावधान किया गया कि वे भारत यात्रा के दौरान अपनी इच्छानुसार अधिकतम समय-सीमा तक भारत में निवास कर सकते हैं।
- OCI Card उन्हीं देश के नागरिकों को दिया गया, जिस देश में दोहरी नागरिकता का प्रावधान था।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

OCI में PIO का विलय :->

① वर्तमान सरकार के द्वारा डायस्पोरा को सक्रिय रूप में भारत से जोड़ने के लिए मनेक पहल की गई। जिसके अंतर्गत PIO कार्ड धारकों को वे सभी सुविधाएँ प्रदान कर दी गई, जो OCI कार्ड धारकों को प्राप्त होती है।

② अत: अब भारत में ~~केवल~~ NRI तथा OCI ही रहेंगे। जिन्हें सामूहिक रूप में डायस्पोरा का नाम दिया जाता है।

भारतीय विदेश नीति में डायस्पोरा का विकास :->

नेहरू :- डायस्पोरा जिस देश में रहते हैं, उस देश के प्रति निष्ठा रखें।

इंदिरा+राजीव गांधी :- डायस्पोरा विदेशों में रहने वाले भारतीय दूत हैं।
→ जिनी में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों की मदद की थी, लेकिन डायस्पोरा को भारत से जोड़ने के लिए कोई ~~नीति~~ नहीं बनाई।

- भारत में विदेशों में रहने वाले लोगों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण हो रहा था, क्योंकि इसे प्रतिभा पलायन / ब्रेन-ड्रेन के रूप में देखा जाता था।

1990 के बाद

① - 1991 में आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई गई।

② - निवेश व्यापार को विदेश नीति में प्राथमिकता दी गई।

③ - भारत - आर्थिक सेक्टर का शिकार था।

④ - खाड़ी सेक्टर के कारण कुवैत से भारतीयों को भारत आना पड़ा।

⑤ - 1998 का परमाणु परीक्षण एवं भारत पर आर्थिक प्रतिबंध।

D.K. PHOTOST COURIER FACILITY (M) 9268098159

वाजपेयी सरकार की नीति

① डायस्पोरा को भारत से जोड़ने की पहली नीतिगत शुरुआत अटलबिहारी वाजपेयी सरकार के द्वारा की गई और डायस्पोरा को भारत से नज़दीक लाने के लिए वर्ष 2000 में "लक्ष्मीमल सिंघवी समिति" की स्थापना की गई। जिन्होंने डायस्पोरा के संबंध में भारतीय नीति को प्रभावी बनाने के लिए अनेक अनुशंसाएँ की।

② वर्तमान सरकार की डायस्पोरा के प्रति नीति

① वर्तमान सरकार के द्वारा पहली बार डायस्पोरा को सीधे भारत से जोड़ने का प्रयास किया गया। अमेरिका में मेडिसन स्क्वायर, आस्ट्रेलिया में सिड़नी पार्क, सं॰ अ॰ अमीरात में डायस्पोरा को प्रधानमंत्री के द्वारा सीधे सार्वजनिक रूप में संबोधित किया गया।

② वर्तमान सरकार के द्वारा प्रवासी मंत्रालय का विलय विदेश मंत्रालय में कर दिया गया। क्योंकि सरकार का तर्क है कि दोनों मंत्रालयों के बीच कार्यों का दोहराव होता था।

③ सरकार के द्वारा PIO कार्ड का विलय OCI कार्ड में कर दिया गया।

डायस्पोरा के प्रकार

- पुराना डायस्पोरा
- अन्य डायस्पोरा
- नवीन डायस्पोरा

① 1830 के बाद विश्व से दास प्रथा समाप्त कर दी गई और इंग्लैण्ड और यूरोपीय देशों में औद्योगीकरण के कारण उपनिवेशों का विस्तार हुआ।

① 1970 के दशक में तेल उत्पादक देशों में (प॰ एशियाई देश) तेल की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि हुई। फ॰

(2) इन उपनिवेशों में बड़ी संख्या में मजदूरों की आवश्यकता हुई। इसलिए ~~ब्रिटि~~ सरकार के द्वारा अनेक एशियाई-अफ्रीकी देशों में चाय बागानों में कार्य करने के लिए, खानों में काम करने के लिए भारतीय मजदूरों को ले जाया गया।

(3) अतः भारत की स्वतंत्रता से पहले भारत से जाने वाले डायस्पोरा को पुराने डायस्पोरा का नाम दिया गया। जिसमें श्रीलंका, म्यांमार, मलेशिया, फिजी, मॉरीशस, सेशल्स, ट्रीनिडाड टोबेगो, गुयाणा, द. अफ्रीका, कीनिया जैसे देशों में भारतीय मूल के लोगों का निवास हुआ।

(4) पहले ये भारत से मजदूर के रूप में गये थे परन्तु वर्तमान में अपने देशों में बड़े पदों पर काम कर रहे हैं।

परिणामस्वरूप इन्होंने अपनी अर्थव्यवस्थाओं को विविधतावादी बनाने का प्रयत्न किया।

(2) परिणामस्वरूप इन देशों में बड़ी संख्या में ~~भ०~~ मजदूरों की आवश्यकता हुई। इसलिए भारतीय मूल के लोग सऊदी अरब, सं. अ. अमीरात, कुवैत, कतर, बहरीन में विद्यमान हैं।

(3) वर्तमान में 60 लाख से ज्यादा भारतीय मूल के लोगों का प्रवास प. एशिया में हो रहा है।

नवीन डायस्पोरा :-

① 1960 के दशक में अमेरिका और यूरोपीय देशों के द्वारा अपने वीज़ा नियमों में ढील दी गई और इंजीनियर, डॉक्टर को इन देशों में काम करने के लिए वीज़ा दिया गया और भारत में IIT तथा विभिन्न मेडिकल को कॉलेज तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों से पढ़े हुए छात्र रोजगार की तलाश में अमेरिका, यूरोप, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया में जाकर बसने लगे।

② अमेरिका की सिलिकॉन वैली में भारतीय इंजीनियरों का अत्यधिक दबदबा माना जाता है और यूरोप एवं अमेरिका में रहने वाले भारतीय प्रवासी सिर्फ आर्थिक के अलावा राजनीतिक प्रभाव भी बढ़ा रहे हैं। क्योंकि इन देशों का शासन लोकतांत्रिक है और बड़ी संख्या भी मे भारतीयों को नागरिकता भी प्राप्त हो चुकी है।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

डायस्पोरा की प्रकृति :-

① भारतीय समाज विश्व का सर्वाधिक विविधतापूर्ण एवं बहुलवादी समाज है। इसलिए भारतीय समाज की विविधता डायस्पोरा में भी देखने के लिए मिलती है।

② पंजाब के ज्यादातर लोग अमेरिका और कनाड़ा में बसे हुए हैं।

③ मलयालियों का पसंदीदा प्रवास स्थान प० एशिया है।

④ अफ्रीका में गुजरातीयों की बड़ी संख्या है।

⑤ मॉरीशस, त्रिनीनाड़ और टुबैगो में उत्तर प्रदेश, बिहार के लोग बसे हुए हैं।

संख्या के अनुसार डायस्पोरा की प्रकृति

① वर्तमान में समूचे विश्व में 2 करोड़ से ज्यादा भारतीय मूल के लोगों का निवास है जो लगभग 110 देशों में फैले हुए हैं। परंतु कुछ देशों में इनकी संख्या निर्णायक है। जैसे सं० रा० अमेरिका (60 लाख), सउदी अरब, UAE, द० अफ्रीका में 10 लाख से ज्यादा भारतीय मूल के लोगों का निवास है। श्रीलंका में 10 लाख, इंग्लैण्ड में 10 लाख भारतीय मूल के लोग रहते हैं।

② जनसंख्या प्रतिशत के अनुसार भारतीयों की सबसे बड़ी आबादी मॉरीशस में है।

प्रवासी भारतीयों की उपलब्धियाँ :→

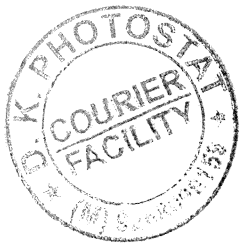

राजनीतिक क्षेत्र में

① अमेरिका के लुसियाना प्रांत के गवर्नर बॉबी जिंदल, मॉरीशस के पूर्व प्रधानमंत्री नवीनचंद्र जगन्नाथ, गुयाना के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड रामवतार। फिजी के पूर्व प्रधानमंत्री महेन्द्र चौधरी, वासुदेव पाण्डे प्रधानमंत्री ट्रीनीडाड टुबेगो।

उद्योग :→ लक्ष्मी मित्तल (स्टील), मुनज गुप्ता परिवार (दवा उद्योग), इसके अतिरिक्त माइक्रोसॉफ्ट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी -सत्या नडेला, गूगल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुंदर पिचई पेप्सी की इंदिरा नूरी के नाम विश्व के प्रमुख उद्योगों के नाम में शामिल है।

साहित्य वी. एस नॉपाल, झुम्पा लहरी, सलमान रश्दी विक्रम सेठ।

अर्थशास्त्रियों में :- प्रो. अमर्त्य सेन, जगदीश भगवती, मेघनाथ देसाई विश्व के प्रमुख अर्थशास्त्रियों में शामिल हैं।

प्रवासी लोग भारत के लिए कैसे उपयोगी हो सकते हैं? →

(A) आर्थिक

(1) 1991 के बाद भारत के द्वारा अपनाई गई आर्थिक उदारीकरण के 25 वर्ष बाद भारत में विनिर्माण उद्योग को बढ़ावा देने के लिए 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसमें निवेश के लिए भारतीय मूल के लोगों को आकर्षित किया जा रहा है।

(2) डायस्पोरा के द्वारा पैसे के निवेश से भी बढ़कर भारत में ज्ञान और अनुभव के निवेश की आवश्यकता है और भारत में हैदराबाद का बिजनेस स्कूल अनिवासी भारतीय के द्वारा शुरू किया गया; भारत का प्रसिद्ध मेदांता हॉस्पीटल नरेश डॉ. नरेश त्रेहान के द्वारा शुरू किया गया। उदारीकरण के वर्तमान युग में भारत को ज्ञान आधारित उद्योगों के विकास में डायस्पोरा की भूमिका निर्णायक है।

③ विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार भारत डायस्पोरा से विदेशी मुद्रा प्राप्त करने वाला सबसे बड़ा देश बन गया है। (60 B$/वर्ष)

④ यह माना जाता है कि केरल के विकास में मलयाली डायस्पोरा का प्रमुख योगदान है और ठीक इसी प्रकार पंजाब के आर्थिक विकास को बढ़ाने में कनाडाई डायस्पोरा की प्रमुख भूमिका है।

(B) सांस्कृतिक

① भारतीय डायस्पोरा के द्वारा विदेशों में भारत की अत्यधिक सकारात्मक छवी का निर्माण किया गया है जिससे भारत के soft power में वृद्धि होती है।

② राजनीतिक

अमेरिका और यूरोपीय देशों में भारतीय मूल के लोगों को बड़ी संख्या में पहले से नागरिकता प्राप्त है। इसलिए इन देशों में उनकी राजनीतिक भूमिका में निरंतर वृद्धि हो रही है और अब भारत के लिए इन देशों में भारतीय मूल के लोगों के द्वारा लॉबिंग किया जा रहा है और

COURIER FACILITY (M) 9268098155

यह माना जाता है कि वर्ष 2008 में भारत-अमेरिकी सिविल परमाणु समझौते को क्रियान्वित करने के लिए भारतीय मूल के लोगों की अत्यधिक सकारात्मक भूमिका है और अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में बड़ी मात्रा में राजनीतिक दलों को चंदा भी दिया जा रहा है।

डायस्पोरा से जुड़ी समस्याएँ :-

① अमेरिका आस्ट्रेलिया और यूरोपीय देशों में सरकार के द्वारा निर्मित किये जा रहे कठोर वीजा निर्माण नीतियों के कारण डायस्पोरा के हित प्रभावित हो रहे हैं।

② अमेरिका और यूरोपीय देशों में रहने वाले डायस्पोरा के तलाक की समस्या अत्यधिक गंभीर है। (वैवाहिक विवाद) इसलिए विदेश मंत्रालय के द्वारा महिलाओं को वैधानिक सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है तथा महिलाओं को आर्थिक सहायता भी दी जा रही है। जिससे वे मुकदमें में खर्च होने वाली राशि को वहन कर सके।

पश्चिम एशिया में समस्या :-

① सउदी अरब में अनेक विदेशी कंपनियों के द्वारा निवेश किया गया है और हाल में ही लेबनान की कंपनी ने सउदी अरब की अपनी औद्योगिक इकाई को बंद कर दिया गया। जिससे भारतीय मूल के मजदूरों को अपना वेतन भी नहीं मिल सका।

② पश्चिम एशिया में बड़ी संख्या में मजदूर कार्य करने के लिए जाते हैं जिन्हें वैधानिक मुद्दों तथा प्रवासन के नियमों की पूरी समझ नहीं होती और भारतीय कंपनियों के द्वारा उन्हें अवैध रूप में प० एशिया में छोड़ दिया जाता है। जिससे वे वहाँ के कानून में उलझकर रह जाते हैं।

③ इन श्रमिकों की वैधानिक समस्या को देखते हुए भारतीय सरकार के द्वारा इन्हें वैधानिक सुविधा उपलब्ध करायी जाती है।

④ सऊदी अरब की सरकार के द्वारा 'निताकत कानून' का निर्माण किया गया ~~जिसके अनुसार कोई~~ ~~किसी~~ भी ~~कंपनी विदेशी कंपनी में~~ जिसके अनुसार किसी भी कंपनी में 50% से अधिक विदेशी श्रमिक नहीं रह सकते, और यदि श्रमिकों की संख्या 50% से ज्यादा हुई तो प्रति श्रमिक के अनुसार कंपनी ~~के~~ द्वारा सरकार को भुगतान किया जायेगा।

अन्य एशियाई-अफ्रीकी देशों में डायस्पोरा की समस्या :-

① युगाण्डा में भारतीय मूल के लोगों को स्थानीय सरकार के द्वारा अत्यधिक प्रताड़ित किया गया।

② फिजी की स्थानीय सरकार के द्वारा भी भारतीय मूल के लोगों के साथ लगातार भेदभाव किये जाते हैं।

③ मलेशिया में अभी भी भारतीय मूल के लोगों के साथ सरकार समान व्यवहार नहीं करती।

भारत के डायस्पोरा नीति की आलोचना :-

① आलोचकों का कहना है कि भारतीय सरकार के द्वारा सेशल्स, ट्रिनिनाड़, टोबेगो जैसे छोटे देशों में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों की समस्यायों पर कभी ध्यान नहीं दिया जाता।

② वर्ष 2000 में नियुक्त ~~स~~ लक्ष्मीमल सिंघवी समिति के द्वारा सेशल्स तथा ट्रिनिनाड़ और टोबेगो में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों के लिए केवल एक पैरेग्राफ का उल्लेख किया गया।

डायस्पोरा को भारत से जोड़ने के लिए अपनाई गई विभिन्न योजनाएँ :→

प्रवासी भारतीय दिवस :→ जो प्रत्येक वर्ष 9 जनवरी को आयोजित किया जाता है। क्योंकि इसी महात्मा गांधी द० अफ्रीका से भारत आये थे। इसलिए गांधी को पहला प्रवासी माना जाता है।

प्रवासी भारतीय सम्मेलन :- ① प्रारंभ में यह सम्मेलन प्रत्येक वर्ष आयोजित होता था और वर्तमान में इसे दो वर्ष में एक बार आयोजित करने का निर्णय लिया गया है।

सम्मेलन के माध्यम से प्रवासी भारतीयों की उपलब्धियों को तथा उनके अनुभवों को भारतीयों से साझा किया जाता है।

प्रवासी भारतीय सम्मान :-

① भारतीय मूल के व्यक्ति जिन्होंने विदेशों में भारत के सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाया हो अथवा भारत की पहचान बनाने के लिए विशेष योगदान किया हो।

भारत को जानने का कार्यक्रम (Know India prog.)

इसके अंतर्गत 18 से 26 वर्ष के भारतीय मूल के युवाओं को भारत की सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराया जाता है और पिछले प्रवासी सम्मेलन में यह नारा दिया गया था - 'Let Know India. Believe India'।

जड़ों से जुड़ा (Tracing the roots)

इसके अंतर्गत भारतीय मूल के व्यक्तियों को उस देश में स्थित मूल निवास के द्वारा भारत में उसके पैतृक स्थान की जानकारी दी जाती है।

Study India prog. :- महाराष्ट्र के सिम्बोसिस पुणे के द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है जिसके अंतर्गत 18 से 26 वर्ष के बीच के युवाओं को इंजीनी. इंजी. इंजी.

प्रबंध, पत्रकारिता जैसे क्षेत्रों में अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY

भारत – फ्रांस

1. वर्तमान में भारत और फ्रांस के बीच अत्यधिक प्रगाढ़, मधुर मित्रतापूर्ण सामरिक संबंधों का विकास हो चुका है।

2. दोनों देशों के बीच 36 राफेल विमान खरीदने का समझौता हुआ है। जिससे भारतीय वायु सेना का आधुनिकीकरण किया जायेगा।

<u>off set clause</u> → 50% कीमत का निवेश हमारे देश में हो

3. भारत और फ्रांस के बीच ~~संबंध~~ के सैनिक संबंध केवल क्रेता और विक्रेता के बीच के संबंध नहीं हैं बल्कि दोनों के बीच स्कोरपिन पनडुब्बी का साझा उत्पादन भी किया जा रहा है।

4. आतंकवाद के विरुद्ध दोनों के बीच लगातार सहयोग बढ़ रहा है।

5. फ्रांस में लगातार आतंकी हमले हो रहे हैं जबकि भारत भी पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद से पीड़ित है। इसलिए आसूचना, प्रशिक्षण के क्षेत्र में दोनों के बीच सहयोग का निर्णय किया गया है।

6. फ्रांस NSG का सदस्य है, सुरक्षा परिषद् का स्थायी सदस्य है जिसमें वह भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन है।

7. फ्रांस के द्वारा जैतपुर में परमाणु रियक्टर लगाने का समझौता किया गया है। इसलिए वह भारत की ऊर्जा सुरक्षा में सहायक है।

8. फ्रांसीसी कंपनी एयरबस और भारत की निजी कंपनी महिन्द्रा के बीच विमानों के साझे उत्पादन का समझौता हुआ

9. द्विपक्षीय व्यापार बढ रहा है और दोनो के बीच के साझे लोकतांत्रिक मूल्य संबंधों को और प्रगाढ बना रहे हैं इसलिए दोनों को प्राकृतिक मित्र कहना अनुचित नहीं होगा।

भारत - मालदीव

मालद्वीव का भारत के लिए महत्व :-

① हिन्द महासागर के समुद्री संचार मार्ग पर मालदीव की अवस्थिति अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

② हिन्द महासागर में चीन अपने प्रभाव का लगातार विस्तार कर रहा है और चीन के द्वारा प्रस्तावित समुद्री सिल्क परियोजना में मालदीव को विशेष महत्व दिया जा रहा है।

③ मालदीव भारत के केन्द्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप के अत्यधिक निकट है।

④ मालदीव हिन्द महासागर में स्थित भारत का पड़ोसी देश है। इसलिए भारत मालदीव पर अपना प्रभाव बनाये रखना चाहता है और परंपरागत रूप में भारत- मालदीव के बीच व्यापारिक, राजनीतिक और सुरक्षा संबंध भी बेहतर रहे हैं।

मालदीव में विद्यमान राजनीतिक अस्थायित्व :-

① मालदीव में वर्ष २००८ के बाद लोकतंत्र की बहाली के पश्चात् राजनीतिक अस्थिरता बनी हुई है।

② मालदीव के वर्तमान राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन के द्वारा मालदीव डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता मोहम्मद नसीद को आतंकवाद के झूठे आरोप में दण्डित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। जिससे वे भविष्य में लोकतांत्रिक व्यवस्था भाग न ले सके।

③ अब्दुल्ला यामीन सरकार को समर्थन देने वाली जम्हूरी पार्टी ने सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया है और जम्हूरी पार्टी वर्तमान में मोहम्मद नसीद का समर्थन कर रही है।

मालदीव में बढ़ता धार्मिक कट्टरवाद :-

(1) मालदीव एक लोकतांत्रिक देश है परंतु इस्लाम को मालदीव का आधिकारिक धर्म घोषित किया गया है

(2) मालदीव में इस्लामी कट्टरपंथियों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है और विशेषज्ञों का यहां तक मानना है कि मालदीव के नागरिक ISIS में भी भर्ती हो रहे हैं। जिससे भारत की सुरक्षा चिंताएं बढ़ रही हैं।

(3) पूर्व राष्ट्रपति मो. नशीद को सत्ता से हटाने में इन धार्मिक कट्टरपंथियों का बड़ा हाथ माना जाता है।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098158

भारत-मालदीव संबंधों पर इसका प्रभाव

(1) भारत-मालदीव संबंध परंपरागत रूप में सदाबहार मित्रतापूर्ण रहे हैं परन्तु वर्तमान में मालदीव में चीन की बढ़ती दिलचस्पी तथा धार्मिक कट्टरवाद से भारत के लिए चुनौती उत्पन्न हो रही है।

(2) भारत के अनुसार मालदीव एक संप्रभु राज्य है और भारत मालदीव के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

③ भारत मालदीव में लोकतांत्रिक प्रक्रिया के सुचारू संचरण का समर्थक है।

④ दोनों देशों के बीच समुद्री सुरक्षा क्षेत्र में सहयोग का समझौता है। भारत के द्वारा मालदीव में रडार भी लगाया गया है।

⑤ मालदीव की राजनीतिक अस्थिरता के परिणामस्वरूप भारतीय प्रधानमंत्री के द्वारा मालदीव की प्रस्तावित यात्रा स्थगित कर दी गई है।

<u>निष्कर्ष</u> :- मालदीव में भारतीय मूल के लोगों की उपस्थिति तथा मालदीव की हिन्दमहासागर में महत्वपूर्ण सामरिक स्थिति और उससे भी बढ़कर मालदीव का भारत के पड़ोसी के रूप में अत्यधिक महत्व है।

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Computer Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

Que. क्या रूस के राष्ट्रपति के रूप में पुतिन की वापसी पश्चिम के प्रति अंतर्राष्ट्रीय राजनय में एक टकराववादी अंतरण मुद्रा तक अंतरण का द्योतक है।

Ans. पश्चिम के प्रति टकराव का कारण :-

(i) रूस के द्वारा महाशक्ति के दर्जे का दावा।

(ii) जॉर्जिया, यूक्रेन जैसे देशों का NATO में शामिल होने का प्रयास।

(iii) यूक्रेन पर रूस का आक्रमण।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

II nd Part. (i) रूस और अमेरिका के बीच बढ़ते टकराव के कारण अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एक नया शक्ति संतुलन देखने को मिल रहा है।

(ii) चीन और रूस के बीच सामरिक संबंध प्रगाढ़ हो रहे हैं, जो अमेरिका की बढ़ती शक्ति को सीमित करना चाहते हैं।

(iii) रूस और अमेरिका के बीच बढ़े टकराव के बाद भी सीरिया में शांति स्थापना तथा ISIS के बढ़ते प्रसार को नियंत्रित करने के लिए आपस में सहयोग भी किया जा रहा है।

~~अफ्रीकी~~
अफ्रीकी देशों के पिछड़ेपन के कारण

- तकनीकी का अभाव
- लोकतांत्रिकत्व का अभाव
- विकसित देशों का व्यापार पर एकाधिकार
- धर्म-जाति के मुद्दे ज्यादा प्रभावी।

Que. मोदी सरकार की पड़ोसी देशों के प्रति नीति की विवेचना कीजिए।

① पड़ोसी का महत्व

② 'पड़ोसी पहले' → मोदी द्वारा नारा दिया

③ → बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका } → संबंध बेहतर हो रहे हैं।

④ → नेपाल, पाकिस्तान, चीन } → संबंधों में समस्या आ रही है

निष्कर्ष:-
विदेश नीति के निर्धारण में भारत के निर्णय के अलावा पड़ोसी देशों की परिस्थितियों और व्यवहार का भी महत्व होता है। इसलिए चीन और पाकिस्तान के प्रति ~~संबंधि~~ संबंध प्रतिकूल होने का उत्तरदायित्व ~~केवल~~ ~~सरकार~~ भारत को नहीं ठहराया जा सकता है।

(11) परंतु चीन और पाकिस्तान के साथ संबंध निर्माण के लिए भारत को तदर्थ नीति के बजाय दीर्घकालिक नीतियों को अपनाने की आवश्यकता है।

Que:→ भारत की आर्थिक कूटनीति वर्तमान विदेश नीति का केन्द्रीय अवयव है। इस संबंध में वर्तमान सरकार के द्वारा की गई पहलों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर:- वर्तमान उदारीकरण और भूमण्डलीकरण के दौर में व्यापार, निवेश, निर्यात विदेश नीति के मुख्य अवयव बन गये हैं। इसीलिए आर्थिक कूटनीति पर बल दिया जा रहा है।

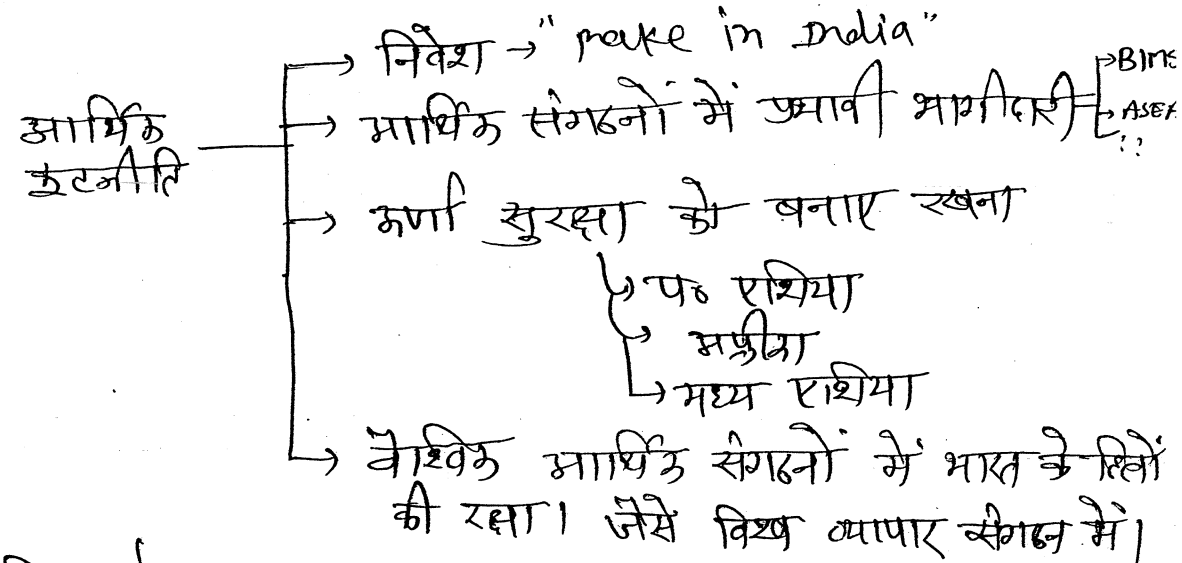

निष्कर्ष:- वर्तमान में आर्थिक कूटनीति पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है। परंतु उदारीकरण के 25 वर्षों बाद भी भारत में आधारभूत संरचनाओं का अभाव है और doing ease in business में भारत अभी भी भारत का स्थान

130वाँ है। जिसमें सुधार के द्वारा ही आर्थिक कूटनीति प्रभावी हो सकती है।

Que भारत और अमेरिका के बीच हाल में होने वाले संबंधों के विकासक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

Ans 1991 — 1998 :→ आर्थिक संबंध

2001 — 2008 :→
- मित्रतापूर्ण संबंध
- सिविल परमाणु संबंध
- सामरिक सैनिक संबंध

वर्तमान ओबामा → Logistic समझौता।

निष्कर्ष : दोनों देशों के लोकतांत्रिक संबंध साझे हैं। द्विपक्षीय व्यापार बढ़ रहे हैं और भारतीय मूल के लोगों की उपस्थिति के कारण दोनों के बीच के संबंध प्रगाढ़ हो रहे हैं।

भारत — ऑस्ट्रेलिया   एलन-बार्डर - गावस्कर से संबंध

(M) 9268098159
D. K. PHOTOSTAT
Old N.C.E.R.T. Available All Subject
(Courier Facility)
(IAS/PCS) All Study Materials Available
701, Shop No. 2,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

Que. पेरिस पर्यावरणीय समझौते के मूल उद्देश्यों और प्रावधानों को स्पष्ट कीजिए। इस समझौते पर अमेरिका के हस्ताक्षर करने के प्रमुख कारणों का विवरण दीजिए।

Que. अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव के बाद अमेरिका और भारत संबंधों में होने वाले परिवर्तन का आकलन कीजिए।

उत्तर: (1) विदेश नीति का निर्धारण राष्ट्रीय हितों के अनुसार होता है। इसलिए राजनैतिक दलों के परिवर्तन से विदेश नीति में आमूल-चूल बदलाव नहीं होते।

(2) अमेरिकी चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार ट्रंप और डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार हिलेरी क्लिंटन है।

(3) ट्रंप अमेरिका में रहने वाले प्रवासियों के विरुद्ध बयान देते हैं, वे अमेरिका में राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा दे रहे हैं तथा ब्रिटेन के EU से अलगाव के समर्थक हैं।

(4) ट्रंप विभाजनकारी राजनीति को आगे बढ़ा रहे हैं जबकि क्लिंटन भारत समर्थक मानी जाती हैं।

निष्कर्ष:- दोनों के बीच विद्यमान राजनैतिक मतभेद भारत-अमेरिकी संबंधों को प्रभावित नहीं करेंगे। क्योंकि दोनों के बीच व्यापारिक-सामरिक संबंध मजबूत हो चुके हैं।